UNIVERSAL LIBRARY
OU_182099
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81/M49M Accession No. G.H. 1495

Author मीर महाकवि।

Title महाकवि मीर। 1955

This book should be returned on or before the date last marked below.

महाकवि मीर

सम्पादक

डा० सैयद एजाज़ हुसैन, एम० ए०, डी० लिट०

अध्यक्ष, उर्दू विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

●

प्रकाशक

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

१९५५] [मूल्य ढाई रुपया

प्रथम संस्करण १९५५

1969

मुद्रक और प्रकाशक

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

कुछ बातें

हिन्दी संसारका यह प्रयास बड़ा प्रशंसनीय है कि उर्दूके महान कवियोंकी रचनाओंको हिन्दीमें अनूदित किया जाय। इस बातके महत्त्वको मेरे बताये बगैर भी आप समझ लेंगे। मीर सम्बन्धी यह पुस्तक भी इसी शृंखलाकी कड़ी है। अब आप अपनी राय दीजिए कि आपको यह किताब पसन्द आयी या नहीं। इसमें मीरके ६ मोटे मोटे दीवानों (ग़ज़लोंके संग्रहों) का संकलन है। यह तो मुमकिन ही नहीं था कि मीरकी सारी विशेषताओंका ध्यान रखकर उनके शेरोंका संकलन किया जाता, लेकिन उनकी बड़ी-बड़ी विशेषताओंके विचारसे ही शेर चुने गये हैं। साथ ही यह ध्यान भी रखा गया है कि कविकी हैसियतसे मीरकी पूरी तसवीर सामने आ जाय। इसलिए सिर्फ अच्छे शेरोंको ही नहीं बल्कि उनके हलके शेरोंको भी जगह दी गई है।

मीरकी कवितामें जो मुश्किल शब्द आये हैं उनके मानी भी दे दिये गये हैं लेकिन साधारणतः शब्दोंके वे ही अर्थ दिये गये हैं जो उस मौके पर शेरके लिहाजसे ठीक बैठते हैं। मुमकिन है कि कहीं कहीं लुगत (कोष) के लिहाज़से यह मानी कुछ बदले हुए दिखाई दें।

इस पुस्तकमें अधिकतर मीरकी गजलोंका ही संकलन है। मीर गज़लके बादशाह माने गये हैं। वैसे मीरके यहाँ अन्य कविताएँ—मसनवी, रुबाई, क़सीदे मरसिए आदि भी बहुत हैं और अच्छे हैं। इसलिए गज़लोंके अतिरिक्त कुछ मसनवियां और रुबाइयां भी दे दी गयी हैं।

'एजाज़'

नशेमन, इलाहाबाद

१३ जनवरी १९५५

सूची

कुछ बातें	३
१--परिचय	६
मीर तक़ी 'मीर'	६
मीरपर परिस्थितियोंका प्रभाव	१८
मीरकी कविता	२२
गज़लका परिचय	४०
मीरकी अन्य कविताएं	४४
२--ग़ज़लोंका संकलन	४७
पहला दीवान	४८
दूसरा दीवान	१२५
तीसरा दीवान	१५६
चौथा दीवान	१७१
पांचवां दीवान	१८२
छठा दीवान	१९६
३--मसनवियां	२०८
शोलए-इश्क	२०८
दरियाए-इश्क	२२३
घरकी दुर्दशा	२३७
होली	२४४
बड़पेटा	२५२
देहातका सफर	२५७
४--रुबाइयां	२७६
५--ग़ज़लके प्रतीकात्मक शब्द	२८३

हिमालय-परिचय—गढ़वाल

(मैप व चित्रों सहित)

लेखक : महापंडित राहुल सांकृत्यायन

डी०सी० - १२ प्वा० - ५६९ पृ० - कपड़ेकी जिल्द - दुरंगा कवर

उत्तर-प्रदेश सरकारने हाल ही मे इस पुस्तक पर लेखकको १२००) का नक़द पुरस्कार प्रदान किया है। पुस्तक न केवल राहुलजी की ही वरन् समस्त हिन्दी संसारमे अपने ढंगकी एक ही है। राहुलजीका यात्रा-वर्णन न केवल मनोरंजक ही होता है वरन् ज्ञानवर्द्धक भी होता है। "केवल रेफ्रेन्स बुककी तरह भी यह पुस्तक हिन्दीमे अमूल्य है।" स्कूलो, कालेजों तथा पुस्तकालयोके लिए यह अत्यंत आवश्यक संग्रह है। हिमालयके गढ़वाल खंडके विषयकी समस्त जानकारी—भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं साहित्यिक—से ओतप्रोत है और केदार, बद्री, गंगोत्री, मानसरोवर आदिकी यात्राओंके लिए हिन्दी मे सर्वोत्तम गाइड बुक है। गढ़वालका नक्शा तथा बहुतसे चित्र भी दे दिये गये हैं जिससे पुस्तककी उपादेयता और भी बढ़ गई है। पुस्तक अत्यंत ज्ञान-वर्द्धक और संग्रहणीय है।

केवल दस रुपया

उत्तरप्रदेश राज्य द्वारा पुरस्कृत उर्दू-शायरी

शेर-ओ-शायरी

(उर्दूके सर्वोत्तम १५०० शेर और १६० नज़्में)

लेखक : अयोध्याप्रसाद गोयलीय

डी० सी० - १२ प्वा० - ५७८ पृष्ठ - कपड़ेकी जिल्द

प्रस्तावना-लेखक : महापण्डित राहुल सांकृत्यायन—

"शेर-ओ-शायरीके छः सौ पृष्ठोंमें गोयलीयजीने उर्दूके विकास और उसके चोटीके कवियोंका काव्य-परिचय दिया है। यह एक कवि-हृदय, साहित्य-पारखीके आधे जीवनके परिश्रम और साधनाका फल है। हिन्दी-को ऐसे ग्रन्थोंकी कितनी आवश्यकता है, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं। उर्दू-कवितासे प्रथम परिचय प्राप्त करनेवालेके लिए इन बातोंका जानना अत्यावश्यक है। गोयलीयजी-जैसे उर्दू-कविताके मर्मज्ञका ही यह काम था, जो कि इतने संक्षेपमें उन्होंने उर्दू-छन्द और कविताका चतुर्मुखीन परिचय कराया। गोयलीयजीके संग्रहकी पंक्तिसे उनकी अन्तर्दृष्टि और गम्भीर अध्ययनका परिचय मिलता है। मैं तो समझता हूँ इस विषयपर ऐसा ग्रन्थ वही लिख सकते थे।"

केवल आठ रुपया

उत्तरप्रदेश राज्य द्वारा पुरस्कृत शायरीका इतिहास

शेर-ओ-सुख़न

[प्रारम्भसे ई० सन् १९०० तककी उर्दूशायरीका प्रामाणिक इतिहास, निष्पक्ष आलोचना और इस अवधिके प्रायः सभी शायरों-की श्रेष्ठतम रचनाओंका सकलन और परिचय]

लेखक : अयोध्याप्रसाद गोयलीय

डी० सी० - १२ प्वा० - ७८४ पृष्ठ - कपड़ेकी जिल्द

डा० अमरनाथ झा—

"उर्दू साहित्य और कवितापर अग्रजी और उर्दूमें कई अच्छी पुस्तकें है, परन्तु हिन्दीमें अबतक इसका कोई विस्तृत इतिहास नहीं प्रकाशित हुआ है। शेर-ओ-सुख़नके रचयिता धन्यवादके पात्र है। उन्होने बड़े परिश्रमसे इस पुस्तकको लिखा है, इसमें सभी प्रमुख कवियोंका उल्लेख है, उनके जीवनकी मुख्य बाते लिख दी गई है। जिस वातावरणमें उन्होने कविता लिखी, उसका वर्णन है, उनके काव्य-गुरु और शिष्योके नाम बताय गये है। उनकी रचनाओके गुण-दोष उदाहरणोके साथ वर्णन किये गये है। इसके पढ़नेसे उर्दू कविताका पूरा परिचय मिलता है।

श्री गोयलीयजीने केवल प्रकाशित इतिहास ग्रन्थोंसे ही सहायता नहीं ली है स्वयं भी खोजकर बहुतसे कवियोंकी पुस्तकोंसे अशआर चुने है। मुझे पूरी आशा है कि इस ग्रन्थका हिन्दी-साहित्यमें आदर होगा। हिन्दी उर्दूसे बहुत कुछ सीख सकती है, विशेषकर उर्दू-कविताके विलक्षण गुणोसे।"

आकाशवाणी नागपुर—

"ऐसे ग्रन्थका संकलन और सम्पादन कोई मामूली बात नहीं है।"

केवल आठ रुपया

कृष्ण वियोगिनी

(एकाकी नाटक)

लेखक : हरिनारायण मैणवाल, एम० ए०

राजस्थानके होनहार एकांकी लेखक, मैणवाल, छोटे व तीव्र सम्वेदना वाले एकाकियोंकी रचनामें विशेषता रखते है । इनके नाटकोमें भारतीय गौरव, संस्कृति, एवं भावात्मक आदर्शवाद साकार हो उठा है । प्रस्तुत पुस्तकमे सामाजिक-समस्या एकांकी और सास्कृतिक-पौराणिक आदर्शवाद एकांकीका सग्रह है ।

मूल्य केवल डेढ़ रुपया

मानिनी-गोपा

(एकाकी नाटक)

लेखक : हरिनारायण मैणवाल, एम० ए०

लेखकके इस संग्रहमे ऐतिहासिक एकांकी भी मिलेगे । नाटक विशेष रूपसे इस संग्रहके लिए लिखे गये है, इसलिये ताज़े है ।

मूल्य केवल सवा रुपया

'अकबर' इलाहाबादी

सम्पादक : डा० सैयद एजाज़ हुसैन

हास्यरसप्रधान उर्दू शायरीमे 'अकबर' इलाहाबादी अपना विशिष्ट स्थान रखते है । उन्हीकी हास्यरसप्रधान उर्दू कविताओंका हिन्दी लिपिमें यह पहला सकलन है । भूमिका व टिप्पणी सहित ।

मूल्य केवल ढाई रुपया

उर्दू-शायरी पर अन्य पुस्तकें

शेर-ओ-सुख़न	भाग २	३)	–	शेर-ओ-सुख़न भाग ४	३)
शेर-ओ-सुख़न	भाग ३	३)	–	शेर-ओ-सुख़न भाग ५	३)

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद से मंगाइये

*

१—परिचय

मीर तक़ी 'मीर'

सौभाग्यसे उर्दूके सबसे बड़े कवि 'मीर' ने खुद अपनी जीवनी लिखकर हमें अपने जीवनवृत्त से परिचित कर दिया है। यह किताब फारसीमें है और इसका नाम 'ज़िक्रे मीर' है। इसके देखनेसे मालूम होता है कि उनका जन्म ११३७ हिज्रीमें हुआ। अपने वंशके बारेमें वे लिखते हैं कि मेरे बुज़ुर्ग हिजाज़से हिन्दुस्तान आये और पहले पहले दक्खिन पहुँचे। मुसीबतें उठाते वहाँसे अहमदाबाद (गुजरात) आये, लेकिन वहाँ भी न रुके। उनके परदादाने हिन्दुस्तानकी राजधानी अकबराबाद (आगरा) आकर दम लिया और वहीं बस गये। लेकिन वहाँका जलवायु उनके अनुकूल न हुआ और उनका जल्दी ही देहान्त हो गया। उन्होंने एक पुत्र (मीरके पितामह) छोड़ा। यह नौकरीकी तलाशमें निकले और अकबराबादमें ही फ़ौजदार हो गये। पचास वर्षकी उम्रमें वे ग्वालियर गये और वहीं उनका देहान्त हो गया। इनके दो लड़के थे। बड़ेका दिमाग़ खराब था और वह जवानीमें ही मर गया। छोटे, मीर अलीमुत्तकी यानी मीर तक़ीके बाप, फ़क़ीर हो गये। उन्होंने मामूली कपड़े छोड़कर फ़क़ीरोंका बाना पहना और विद्या अध्ययनके लिए शाह कलीमुल्ला अकबराबादीके पास गये। उनके पास रहकर उन्होंने सारी विद्याएँ सीखीं और खुद भी पहुँचे हुए फ़क़ीर हो गये। उनके लिए सारा संसार प्रेममय हो गया। अपने बेटे मीरतक़ीसे हमेशा कहा करते थे, "बेटा! दुनियामें मुहब्बत ही मुहब्बत है। अगर मुहब्बत न होती तो दुनिया पैदा न होती। बग़ैर मुहब्बतके ज़िन्दगी वबाल है। दुनियाँमें जो कुछ है इश्क़ है। खुदाकी मुहब्बतको अपनी ज़िन्दगी बना ले।" यही कहते सुनते उनकी आखिरी घड़ी आ पहुँची।

मरते समय मीरको वसीयत की कि "मै ३००) का कर्ज़दार हूँ। इस क़र्ज़को अदा कर देना।" मीरने आँखोंमें आँसू भर कर कहा कि "इस घरमें पुस्तकोंके अलावा और कुछ नहीं है। पुस्तकें भी आपने बड़े भाईको दे दी है, कर्ज़ कैसे अदा करूँगा।" उन्होंने जवाब दिया, "खुदा करीम है। दिल छोटा न कर।" यह कहकर उन्होंने नश्वर शरीरको छोड़ दिया।

बापके मरनेके रंजके साथ ही मीर पर मुसीबतोंका पहाड़ टूट पड़ा। उनके बड़े भाई मुहम्मद हसन दूसरी माँसे थे। उन्होंने मीरके साथ बहुत बुरा सलूक किया। बापकी सारी सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा कर लिया। कर्ज़ख्वाहोंसे कह दिया कि जो बापके साथ रहता है उसीसे रुपया माँगो। उन लोगोंने मीरको घेरना शुरू किया। मीरकी उम्र दस-ग्यारह वर्षकी थी, घरका काम ही चलाना उनके लिए मुश्किल था, क़र्ज़ा कहाँसे देते। लेकिन वे भगवानके भरोसे ही रहे। भाईसे न कुछ माँगा न किसीसे उनकी शिकायत की। हज़ारों बुरे लोगोंमे दोचार अच्छे भी मिल जाते है। मीरके बापके एक गहरे दोस्त थे जिन्हे मीर तक़ी चचा कहा करते थे और वे भी मीरको अपने बच्चेकी तरह ही मानते थे। उनका देहान्त मीरके बापके ही जीवनमे हो गया था लेकिन उनके एक शिष्य सय्यद मुकम्मल खांने अपने गुरु और मीरके पुराने सम्बन्धका ख्याल करके उनके पास ५००) की एक हुंडी भेज दी। मीरने कर्ज़ा अदा करके चैनकी साँस ली, लेकिन फिर रोज़ीकी तलाशमे घरसे निकलना पड़ा। इतनी छोटी उम्रमे घर छोड़ना आसान नहीं है लेकिन मजबूरी जो न कराए वह थोड़ा है। छोटे मुहम्मद रज़ीको घर पर छोड़कर मीर तक़ी दिल्ली पहुँचे। यहाँ भी इधर उधर भटकते रहे। संयोगसे अमीरुल उमरा नवाब समसामुद्दौलाके भतीजे ख्वाजा मुहम्मद बासितको मीर पर दया आई। वे मीरको नवाब साहबके पास ले गये। नवाबने पूछा यह किसका लड़का है। ख्वाजा बासितने जवाब दिया यह मीर मुहम्मदअली मुत्तक़ीके साहबज़ादे हैं। मालूम होता है मीरसाहबका देहान्त हो गया। मीर तक़ी लिखते हैं कि

नवाब साहबने सुनकर बहुत अफ़सोस किया और कहा कि मीर साहबके मुझपर बड़े हक़ूक़ थे। इस लड़केको मेरी सरकारसे एक रुपया रोज मुक़र्रर किया जाय। मीर इसी उम्रमें दुनियाँके बहुत ऊँचे नीचे देख चुके थे। नवाबकी आज्ञा पर बोल उठे, "अगर मुनासिब हो तो यह हुक्म लिख दिया जाय ताकि अहलकारोंको रुपया देनेमें एतराज़ न हो।" नवाबने क़लमदान मँगाकर हुक्म लिख दिया।

यह सिलसिला ज्यादा जारी न रह सका। नादिरशाहने तूफ़ानकी तरह हमला कर दिया और नवाब लड़ाईमें मारे गये। मीरका सहारा फिर टूट गया। आगरा वापस आये और जब तक हो सका वहीं लस्टम-पस्टम गुज़ारा करते रहे, लेकिन एक दिन मजबूर होकर फिर दिल्लीकी ओर चल पड़े। दिल्लीमें अपने सौतेले भाईके मामा सिराजुद्दीन खान आरज़ूके यहाँ ठहरे। खान आरज़ू स्वयं बड़े विद्वान और ऊँचे शायर थे। मीरने यहाँ रहकर शहरके विद्वानोंसे कुछ किताबें पढ़ी लेकिन जब कुछ साहित्यिक रुचि बढ़ी तो सौतेले भाईने अपने मामाको लिख दिया कि मीर तक़ी बड़ा झगड़ालू है, इसके साथ आप कोई रियायत न करें। अब वे भी मीरसे भड़क गये और उन्हें बड़ी तकलीफ़ देने लगे। मीर बहुत कुढ़े यहाँ तक कि घरसे निकलना छोड़ दिया। रात दिन अपनी कोठरीमें पड़े रहते। दिमाग़ पर बुरा असर पड़ा। बराबर चन्द्रमाकी ओर देखा करते। इसी वजहसे पागल हो गये। वे खुद लिखते हैं कि, "एक रातको चाँदमें मुझे एक निहायत खूबसूरत शक्ल नज़र आई। उसे देखकर मुझे जुनून हो गया। जिधर आँख उठाता वही सूरत दिखाई देती। रातभर उससे मिलन होता। दिनमें विरहमें रोया करता। सारा दिन पागलपनमें बीतता। पत्थर-के टुकड़े हाथमें रहते। हर शख़्स मुझसे घबराता।" अन्तमें फ़ख़रुद्दीन खां नामके एक सज्जनने मीर पर तरस खाया और उनका इलाज कराया। बड़े बड़े हकीमोंकी दवा हुई तब कहीं जाकर पागलपन दूर हुआ।

एक दिन मीर बाज़ारमें एक पुस्तकके कुछ पन्ने लिए बैठे थे। उधरसे

एक विद्वान मीर जाफ़र निकले। उन्होने पूछा, "क्या तुम्हे पढ़नेका शौक है ? मै भी इसी शौक़का मारा हूँ। लेकिन कोई ऐसा नही मिलता जिससे कुछ बाते कर सकूं।" मीरने कहा, "मै आपकी सेवा करनेके लायक नही हूँ। हाँ आपकी दया हो तो, मुझे ज़रूर फायदा होगा।" मीर जाफ़र मीर तकी पर दयालु हो गये। मीर तक़ीने उनसे बहुत कुछ सीखा। कुछ दिन बाद मीरजाफर अपने मकान अज़ीमाबाद चले गये और यह सग भी छूटा। इसके बाद एक बुजुर्ग सय्यद सआदतअली खा अमरोहीसे मीरने कुछ विद्या लाभ किया। इन्ही सआदतअलीने मीरको कविता करनेकी राय दी। मीरने ऐसी लगनसे कविता की कि कुछ ही दिनोंमे इनका नाम हो गया। खुद वे लिखते है कि शहरके अच्छे शायरोमे मेरी गिनती होने लगी, हर छोटे बडेकी निगाह मुझपर पड़ने लगी।

आरम्भमे ही मीरकी सफलतामे ताज्जुबकी कोई बात नही है। कविताके लिए जो पृष्ठभूमि चाहिए वह उनके लिए पहले ही तय्यार थी। बापके साथ रहकर फ़कीरीके ढग आ ही गये थे। प्रेमका महत्व और प्रेम करनेका ढंग बापने जैसे घोलकर पिला दिया था। बापके मरनेके बाद बराबर मुसीबते पड़ना, प्रेमके उन्मादका तजुर्बा, पढ़ने लिखनेका शौक दुनियाके ऊँच नीचका अनुभव—गर्ज़े कि नाम पैदा करने और चरित्र निर्माणके सारे साधन थे। ज़रूरत केवल काव्य कलाके सीखनेकी थी। वह भी उन्होंने अपने ही शौक़ और मेहनतसे सीख ली। किसीको उस्ताद नही किया। सच्ची रुचि ही उनकी पथ प्रदर्शक थी।

कविताका सिलसिला चल ही रहा था कि उनके मामा खान आरजूने एक दिन खाना खाते हुए मीरको बड़ी कड़ी बातें कहीं। मीर बगैर खाना खाये उठ गये। कोई सहारा तो था नही, जामा मसजिदको चले। सौभाग्य ही समझिए कि रास्ता भूल गये और हौज़ क़ाज़ी पर जा निकले। वहाँ अलीमल्ला नामक एक व्यक्ति मिला। उसने पूछा, "आप मीर तक़ी तो नहीं है ?" मीरने पूछा तुमने कैसे पहचाना उसने कहा, "आपके रहन-सहन-

का ढंग पागलपनकासा मशहूर है। रियायत खां रईस आपसे मिलनेके इच्छुक हैं।" मीर उसके साथ चले गये। रियायत खा रईसको मीरसे मिलकर बड़ी खुशी हुई और मीरको परेशानियोंसे छुटकारा मिला।

उस समय देशमें जो उथल पुथल हो रही थी वह मीरने सब अपनी आँखों देखी। वे बहुत-सी लड़ाइयोंमें किसी न किसी रईसके साथ रहे। जब अहमदशाह दुर्रानी सरहिन्दमें पराजित हुआ तो मीर भी उस अवसरपर थे। वहींसे कस्बा साँभर और फिर अजमेर गये।

रियायत खाकी नौकरीसे मीर किसी बात पर बिगडकर अलग हो गये और नवाब बहादुरके मुसाहिब हो गये। कुछ दिन तक वहाँ रहे। लेकिन उस समय देशमें ऐसी परेशानी थी कि किसी रईसको भी चैन नसीब न था। इसलिए मीरको भी नौकरीके लिए बराबर इधर उधर दौडना पडता था। वे नवाब बहादुरके मारे जानेके बाद महानारायण दीवानके यहां नौकर हो गये। फिर वे अमीर खां 'अंजाम,' सूबेदार इलाहाबादकी हवेलीमें रहने लगे। यहाँ बेकार थे लेकिन यह बेकारी ज्यादा दिन नही रही। दो तीन महीने बाद बगालके वकील राजा जुगल किशोरने अपने यहाँ बुला लिया और अपनी कविताओमें उनसे संशोधन कराने लगे। राजा जुगल किशोर उनकी पूरी मदद नही कर सकते थे लेकिन उन्होंने राजा-नागरमलसे मीरकी खुद सिफ़ारिश करके उन्हे वहाँ रखा दिया। यहाँ मीरका वेतन काफ़ी था। वे वहाँ कुछ अधिक समय तक ठहरे। लेकिन आपसी झगड़ोंने दिल्लीकी दुर्दशा कर दी थी। मीर अपने पूरे कुनबेके साथ दिल्लीसे निकल खडे हुए और बरसाना जिला मथुरामें कुछ दिन ठहर कर कुभेर पहुँचे जो सूरज मल जाटका गढ़ था। सूरजमलके छोटे बेटेने मीरके रहनेका प्रबन्ध कर दिया और सूरजमलने अपने दरबारसे 'रोज़ीना' मुक़र्रर कर दिया। मीर यहाँ बहुत दिन रहे। इसके बाद वे अपने मकान अकबराबाद—अकबराबाद छोड़नेके तीस साल बाद—पहुँचे, चार महीने वहाँ रहकर फिर सूरजमलके पास आ गये। कुछ दिन बाद फिर

अकबराबादको चले लेकिन इस बार फिर पन्द्रह दिन रहकर फिर वापस चले गये।

इसी ज़मानेमें नादिरशाह दुर्रानीके लड़के तैमूरशाह पर दक्खिनवालोंने चढ़ाई की। वे समझते थे कि तैमूरके साथ बहुत कम फ़ौजे हैं। मीर साहब लिखते है कि, "इन लोगोंको खबर न थी कि अफ़गानियोंके पीछे कितनी फ़ौजे हैं। मुकाबला हुआ तो भाग निकले।" इसके बाद दुर्रानीने शहरकी जो गत बनाई है उसका चित्रण मीरने बड़ी मार्मिकतासे किया है। उन्होंने यह सब घटनाएँ अपनी आँखोंसे देखी थी। अमीरोंका फ़कीर होना, औरतो बच्चोंका क़ैद होना, हवेलियोंका खंडहर होना, लोगोंका मारा जाना—गर्ज़ कि दिल्लीकी तबाहीका पूरा चित्र उनकी किताबमें मौजूद है।

जाटोंकी लूटमारके बाद राजा नागरमल अपने साथियोंको लेकर कामान चले गये। मीर साहब भी उनके साथ ही रहे। कुछ दिनों बाद राजा नागरमल दिल्ली वापस आये तो यह भी उनके साथ आये और अपने बालबच्चोंसे मिले। शहरमें हर तरफ़ परेशानी थी। इन्हीं परेशानियोंमें मीरको भी राजा नागरमलके यहाँसे अलग होना पड़ा। रोज़ीकी तलाशमें वजीदुद्दीन खांसे मिले। वे मीरकी प्रसिद्धि जानते थे। उन्होंने मीरकी मदद तो थोड़ी ही की लेकिन तसल्ली बहुत दी। इसके बाद मीर साहबने अपनी किताबमें राजधानीकी और हलचलोंका—जैसे सिखोंकी अब्दुल अहद खांसे लड़ाई, रुहेलोंसे लड़ाई, अंग्रेज़ोंके षडयन्त्र आदिका—वर्णन किया है।

अब मीर साहब घर पर ही बैठ गये। बादशाह अक्सर बुलाते थे लेकिन वे न जाते। बड़े-बड़े रईस खुद इनकी डयोढ़ी पर आया करते। कभी कभी बादशाह भी कोई तुहफ़ा भेज देते थे। इस दशामें बहुत दिन रहते रहते जी घबरा गया। चाहते थे कि किसी दूसरे शहर चले जायें लेकिन सफ़रकी तकलीफ़ और हाथकी तंगीसे बाहर जानेकी हिम्मत न

पड़ती थी। लखनऊके नवाब आसफ़ुद्दौला कभी कभी उन्हें बुलाया करते। एक दिन मीर साहबको ख़त मिला कि नवाब आसफ़ुद्दौला बुला रहे हैं। इनका जी तो उचाट हो ही रहा था, ख़त पाते ही चल पड़े। इस सफ़रमें कोई इनका साथी न था। चलते चलते फर्रुखाबाद पहुँचे। वहाँके रईस मुज़फ़्फ़र जंगने कुछ दिन मीर साहबको रोकनेकी बड़ी कोशिश की लेकिन इनका जी वहाँ न लगा। वहाँसे चलकर सीधे लखनऊ पहुँच गये।

लखनऊ पहुँचकर सालारजंगके मकान पर गये। उन्होंने बड़ी ख़ातिरसे अपने यहाँ रखा और आसफ़ुद्दौलाको उनके आनेकी ख़बर पहुँचाई। चार पाँच दिन बाद आसफ़ुद्दौला एक जगह मुर्ग़ोंकी लड़ाई देखने गये। मीर भी वहाँ थे। यह मालूम होने पर कि यही मीर तक़ी हैं नवाब उनसे गले मिले और अपने पास बिठा लिया और अपने शेर सुनाने लगे। मीरने तारीफ़ की। फिर नवाबकी फरमाइश पर मीरने अपनी ग़ज़लके कुछ शेर सुनाये। नवाब जब उठने लगे तो सालार जंगने कहा, "हुज़ूर! मीर साहबको बुलाया था। इनके लिए कुछ हो जाना चाहिए। आप हुक्म दें। यह हाज़िर हों।" नवाबने कहा कि मैं कुछ करूँगा। दो तीन दिन बाद मीर बुलाये गये। नवाबके सामने उन्होंने एक क़सीदा पढ़ा और नवाबने उनपर इनायतें शुरू कर दी। मीर नौकर हो गये और उनका सम्मान बहुत बढ़ गया। जब नवाब शिकारके लिए बहराइच गये तो मीर भी साथ थे। वहीं एक शिकारनामा बनाकर मीरने सुनाया। दो तीन महीने इस शिकारमें नवाब साहबका साथ रहा। लखनऊ पहुँचकर एक दूसरा शिकारनामा रचकर नवाबको सुनाया। वे सुनकर बहुत खुश हुए और कुछ शेरोंपर ख़ुद गिरह लगाई।

इसके बाद मीर साहब स्थाई रूपसे लखनऊमें ही रहे। यहाँ भी दिल्लीकी तरह यह उस कालकी उथल पुथलको ध्यानसे देखते रहे। एक इतिहासज्ञकी भाँति उन्होंने मरहठोंकी हलचल, सिखोंकी लड़ाई, राजपूतोंका उभरना, रुहेलोंका विद्रोह, ग़ुलाम कादरका बादशाहकी आँखे

निकालना वग़ैरा देखा और कविकी हैसियतसे इन सब बातोंसे प्रभावित हुए। फिर भी पिछली ज़िन्दगीसे इनकी लखनऊकी ज़िंदगी आरामसे बीती। लखनऊमें ही इनका देहान्त हुआ और वहीं दफ़न हुए।

मीर साहबकी पैदाइश और मौतकी तारीख़ोंके बारेमें अभीतक काफ़ी बहस थी। लिखनेवालोंमेंसे किसीने इनकी उम्र ज़्यादा और किसीने कम बताई। लेकिन स्वयं मीरकी आत्मजीवनी 'ज़िक्रे मीर' ने इस क़िस्सेको बहुत कुछ तय कर दिया। हालांकि मीरने खुद अपनी पैदाइशकी तारीख़ नहीं लिखी—मरनेका तो ज़िक्र ही कैसे करते—लेकिन स्थान स्थानपर विभिन्न घटनाओंकी जो तारीख़ें लिखी हैं उनसे उनकी पैदाइश और मरनेकी तारीख़ोंका अन्दाज़ हो जाता है। जैसे 'ज़िक्रेमीर' की समाप्ति पर उन्होंने अपनी उम्र साठ वर्षकी बताई है। इस तरह उनकी पैदाइश ११३७ हि० होती है। नादिरशाहके हमलेके समय इनकी उम्र १५ सालकी थी। यह हमला १७३९ ई० में हुआ। इस लिहाज़से इनकी पैदाइश ईस्वी सन १७२४ मे होती है। वे १८१० ई० मे मरे। इस प्रकार उनकी पूरी उम्र ८९ या ९० वर्षकी होती है।

मीर साहब बड़े आत्माभिमानी थे। मुसीबतोंने इन्हे चिड़चिड़ा बना दिया था। कवित्वने इनकी उन अनुभूतियोंके शब्दचित्र प्रस्तुत कर दिये थे। पिछले जीवनकी कड़ुवाहट वे अगर भूलना भी चाहते तो उनके शेर उन्हें बारबार याद दिला देते। इसी कारण राजाओं और नवाबोंसे मीर ज़रा ज़रा सी बात पर उलझ पड़ते थे। आसुफ़ुद्दौलासे भी कई बार बिगड़कर बैठ रहे। इस सिलसिलेमें एक उदाहरण ही काफी होगा। एक बार वे आसफ़ुद्दौलासे मिलने चले। आसफ़ुद्दौलाकी शान और दबदबा मशहूर था। उनके यहाँ सात ड्योढ़ियाँ लगती थी और हर ड्योढ़ी पर फौजी पहरा। रोबका यह हाल था कि कभी कभी आख़िरी ड्योढ़ी पर पहुँचते पहुँचते लोग बेहोश हो जाते थे। मीर साहब हाथमें पतली-सी छड़ी लिए सातों ड्योढ़ियोंके चोबदारोंकी 'बाअदब, बा मुलाहिज़ा की आवाज़ोंकी

उपेक्षा करते हुए सीधे जाकर इत्मीनानसे नवाबके बग़लमे बैठ गये। मीर और नवाबके बीचमें एक किताब रखी थी, जो मीरके कुछ ज़्यादा पास थी। आसफ़ुद्दौलाने कहा, "मीर साहब! तकलीफ़ न हो तो ज़रा यह किताब उठा दीजिए। मीर साहबने किताब उठानेके बजाय फ़ौरन चोबदारसे कहा, "देखो तुम्हारे आक़ा क्या फ़रमाते है?" यह तेवर देखकर नवाबने खुद बढ़कर किताब उठा ली। यह था गुणियोंका आत्मसम्मान और यह थी गुणग्राहकोंकी शिष्टता!

इसी प्रकारकी एक और घटनासे उनके मिज़ाजका पता चलता है। शाही किलेदारके बेटे सआदत यार खा रंगी, जो १४–१५ वर्षके होंगे, बड़े इत्मीनान और शानसे मीर साहबको अपनी ग़ज़ल सशोधनके लिए दिखानेको गये। मीर साहबने उन्हे शागिर्द बनानेसे इनकार कर दिया। बोले, "साहबज़ादे! आप अमीरज़ादे है, खुद अमीर है। नेज़ाबाज़ी और तीरंदाज़ीकी मश्क कीजिए, शहसवारीकी मश्क कीजिए। शायरी बड़ी दिल सोज़ी और जिगर खराशीका काम है। इस चक्करमे न पड़िए।" जब उन्होंने ज़िद की तो कह दिया, "आपकी तबियत इस फ़नके मुनासिब नहीं है। यह आपको नही आनेका। मेरा और अपना वक्त ज़ाये (बर्बाद) करके क्या करोगे?"

लखनऊमे जब कभी गवर्नर जनरल वगैरा आते और मीर साहबको बुलाया जाता तो हमेशा टाल जाते। कह देते कि मुझसे जो मिलता है वह या तो मेरे खानदानकी वजहसे मिलता है या रचनाओंके कारण। साहबको खानदानसे मतलब नहीं, रचनाएँ समझते नही। अलबत्ता कुछ इनाम देंगे। ऐसी भेटमे अपमानके अलावा और क्या है।

मीर साहबने अपनी लम्बी उम्रमें लिखा भी बहुत है। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं:—

(१) ६ मोटे मोटे दीवान उर्दूके।

(२) एक दीवान फ़ारसीका।

(३) कई मसनवियाँ।

(४) मरसिए।

(५) उर्दू कवियोंका वर्णन 'निकातुश्शोअरा'। यह उर्दू कविताका पहला इतिहास है।

(६) आत्म जीवनी 'ज़िक्रे-मीर' फारसीमे।

मीर पर परिस्थितियोंका प्रभाव

किसी कविकी रचनाओंको समझनेके लिए उसके जीवनकी परिस्थितियोंको समझना भी ज़रूरी है। उसकी विचारधारा और कविताके महत्त्वको समझनेके लिए इसकी बहुत ज़रूरत है। खासतौर पर ऐसे शायरके लिए जो सामाजिक उथल पुथलकी गोदमे पला हो, जिसे उसकी परिस्थितियोंने झटके देकर कवि हृदय प्रदान किया हो, जिसके जीवन मे उसके ज़मानेकी साफ़ झलक मिलती हो, ऐसे कविके जीवनकी परिस्थितियोंका अध्ययन बडा महत्त्वपूर्ण है। इनके जीवनवृत्तमे पाठकोंको कुछ तो इसका आभास मिल ही गया होगा लेकिन कुछ और भी समझनेकी ज़रूरत है।

मीर ऐसे ज़मानेमें रहे जो हिन्दुस्तानकी बर्बादीका ज़माना था। इतिहासमें शायद ही कोई युग इतना भयानक हुआ हो। औरंगज़ेबके मरनेके बाद जो उथल पुथल हुई उसीकी एक कड़ी मीरका काल था। मीरकी पैदाइश १७२४ ई० में हुई। औरंगज़ेब १७०७ में मरा। चुनाँचे मीरके पैदा होनेके पहले ही राज्य प्राप्तिके लिए फ़सादका तूफ़ान उठने लगा था। मीरके मरनेके बहुत बाद तक कभी तेज और कभी धीमी होकर यह आँधी चलती ही रही थी। देशकी दुर्दशाका कुछ आभास इससे भी हो जायगा कि औरंगज़ेबके मरनेके बाद मीरके जन्मतक दिल्लीके सिंहासन पर चार पाँच नरेश बैठे और बहादुरशाह प्रथमके अलावा शायद ही कोई अपनी मौत मरा हो। सत्रह सालमें इतने राजाओंका सिंहासनकी भेंट

चढ जाना कोई साधारण घटना नहीं है। मीरका बचपन मुहम्मद शाहके ज़मानेमें बीता। तबाहियोंके ख्यालसे यह ज़माना पिछले ज़मानेसे कुछ अच्छा न था बल्कि इस मानीमें बुरा ही था कि पिछली घटनाओंने जड़ पकड़ ली थी और राज्यकी निर्बलतासे छोटे मोटे झगड़े भी बड़े मालूम होते थे। दरबारियोंके षड्यन्त्रों और जगह जगहके विद्रोहोंने राज्यकी मिट्टी पलीद कर रखी थी। मुसीबत पर मुसीबत यह कि मुहम्मदशाह खुद बड़ा अयोग्य शासक था। उसके पहलेसे जाटों और रुहेलोंके जो विद्रोह हो रहे थे वे अब भी जारी थे। जाट आगरेके सूबेमें अपना पूरा असर क़ायम कर चुके थे। मुहम्मदशाहकी कमज़ोरीसे उनकी ताक़त दिनोंदिन बढ़ रही थी। बादशाहके पास न होशियार सिपाही थे न भरोसेके लायक़ सलाहकार। दरबारियोंके षड्यन्त्रोंके कारण वह खुद भी दूर तक कुछ नहीं सोच पाता था। मुहम्मदशाहके इर्दगिर्द बहुत ही स्वार्थी और कमीने लोग थे जो अपनी कमीनी हरकतोंसे जनताको नाखुश कर रहे थे। बादशाहकी इज्जत भी लोगोंकी निगाहोंमें न रही थी। कलाकारों और सभ्य समाजने समझ लिया था कि उनकी प्रतिष्ठा खत्म हो चुकी। इसी लिए उस कालके कवियोंकी रचनाओंमें हम हर जगह यह रोना देखते हैं कि ज़माना बडा खराब है, कोई किसीको नहीं पूछता, कमीनोंकी दुनिया हो गई है, लोगोंका चरित्र गिर गया है, आदि।

ऐसी ही हालतमें नादिरशाहने दुर्भाग्यकी भांति हमला कर दिया। इस हमलेकी ज़िम्मेदारी भी मुहम्मदशाहपर है। नादिरशाहने कन्धार जीतनेके बाद काबुलकी ओर हाथ बढ़ाये। अफ़ग़ानिस्तान उस समय हिन्दुस्तानका एक सूबा था। नादिरशाहने क़न्धार पर हमला करते समय कई बार मुहम्मदशाहके पास सन्देश भेजे कि क़न्धारसे भागनेवालोंको काबुलका सूबेदार शरण न दे। मुहम्मदशाहने नादिरशाहके एलचियोंसे इसका वादा कर लिया। इसीसे नादिरशाहको मालूम हो गया कि हिन्दुस्तानका राज्य कितने पानीमें है और उसने इधरको भी रुख किया।

काबुलका सूबेदार बराबर लिखता रहा कि फ़ौजोंकी तनख्वाह, वर्दी और हथियारोंके लिए रुपयेकी जरूरत है। लेकिन यहाँ किसे फ़िक्र थी। सूबेदारको दिल्लीसे जो जवाब मिला वह आनन्दरामके शब्दोंमें यह है—"क्या तुम समझते हो कि मैं इतना मूर्ख हूँ कि तुम्हारी बातोंमें आजाऊँगा। हम लोग मैदानके रहनेवाले हैं और सिर्फ उसी चीजसे डरते हैं जो हमारे पास हो और जिसे हम देख सकें। तुम्हारे मकान पहाड़ोंकी चोटियों पर हैं। शायद तुमने मंगोलों और किज़िलबाशोंकी फ़ौजोंको अपने मकानोंकी छतोंसे देख लिया है। अपने आकाको बता दो कि हमने बंगालके सूबेदारको रुपयेके लिए लिख दिया है। बरसातके बाद जब रुपया आ जायेगा तो फौरन काबुल भेज दिया जायेगा।"

भारतकी केन्द्रीय सरकार नादिरशाहके हमलेका मुकाबला टालती ही गई। नतीजा यह हुआ कि नादिरशाह दिल्ली तक आ गया और खूनकी नदियाँ बहने लगीं। रोज़ हज़ारों आदमी मारे जाते। नादिरशाह दिल्ली-में दो महीने रहा और खून बहाता रहा। ५ मई १७३९ ई० को, पूरे ५७ दिनके बाद वह गया। इसके बाद दिल्ली एक विधवाकी तरह रह गई जिसका सुहाग लुट चुका हो। ऐसी बर्बादीमें कौन किसको पूछता है। रईस और जागीरदार सब परेशान हाल होंगे। हज़ारोंको रोज़ मरते देखकर संसारसे मन उचट जाना भी स्वाभाविक है। ऐसी दशामें मानसिक शान्तिके लिए मज़हबका ही सहारा पकड़ा जाता है। मज़हब कुछ देरके लिए दिलको तसकीन तो दे ही देता है।

उस कालके जन साधारणके जीवनकी एक झलक देना भी ज़रूरी है। रहन सहनके लिहाज़से इस ज़मानेकी तहज़ीब न खालिस हिन्दुस्तानी रह गई थी, न इस्लामी, बल्कि एक तरहकी मिली जुली कल्चर थी। शादी व्याह, कपड़े लत्ते, कला, भाषा आदि सभीमें एक दूसरेका साफ़ असर झलक रहा था। रोज़ीके लिए मर्द ही काम करते थे। औरतें आम तौर पर घरमें ही रहती थीं, बाहर बहुत कम निकलती थीं। खास खास रिश्ते-

दारोके अलावा सबसे पर्दा करती थी। इसलिए औरतों और मर्दोंके आपसमें मिलनेका रिवाज न था। हिन्दू मुसलमानका कोई भेद भाव न था। आपसी व्यवहार, नौकरी चाकरी आदिमें भाईचारा था। हिन्दू राजा महाराजाओंके यहाँ उच्च कर्मचारी मुसलमान भी होते थे और मुसलमान शासकोंके यहाँ हिन्दू भी ऊँचे पदों पर थे। मज़हबके पीछे कोई किसीकी हत्या करनेकी बात ही नहीं सोच सकता था।

यहाँतक कि राजनीतिक और आर्थिक हलचलमें भी हिन्दू मुसलमान एक दूसरेका साथ देते थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि वे कलाका सम्मान करना अपनी शान समझते थे। इसी लिए इस भयानक उथल पुथलके ज़मानेमें भी मीरके कद्रदानोंकी कमी न थी, जिनमें हिन्दू मुसलमान दोनों थे। इन क़द्रदानोंकी इज़्ज़त हमारी निगाहमें उस वक़्त और बढ़ जाती है जब हम सोचते हैं कि मीर कैसे नाज़ुक मिज़ाज थे। मीरकी कई बार खुद आसफुद्दौलासे झड़प हुई लेकिन फिर भी वे मीरको हाथों हाथ लिए रहते थे। मीरको खुद मालूम था कि वे कितने नाज़ुक मिज़ाज हैं। वे लिखते हैं :—

'हालत तो यह कि मुझको ग़मोंसे नहीं फ़राग़,
दिल सोज़िशे दरूनीसे जलता है ज्यूं चराग़।'
'सीना तमाम चाक है सारा जिगर है दाग़,
है मजलिसोंमे नाम मिरा मीरे—बे दिमाग़।'
'अज़बस कि कमदिमाग़ीने पाया है इश्तहार।'

इसपर भी छोटे बड़े अमीर गरीब सभी उनका सम्मान करते थे। होना ही ऐसा चाहिए क्योंकि मीर महान कलाकार थे। उन्होंने अपनी रचनाओंमें अपने युगके परिवर्तनों और उनका मानसिक प्रतिक्रियाओंका जैसा चित्रण किया है वैसा कोई और नहीं कर सका।

मीरने अपने बापकी सुहबतमें फ़क़ीरी और इश्क़का भी सबक़ लिया था। उनके बाप पहुँचे हुए फ़क़ीर थे। उनका दिल मुहब्बतसे भरा था

और उन्हें हर चीज़में अपने प्रियतम (भगवान)के दर्शन होते थे। मीरने दस ग्यारह वर्षकी अवस्था तक ही बापका साथ किया और उस वक्त उनकी बातें समझ न पाते होंगे लेकिन अचेतन रूपसे मन पर उनका प्रभाव तो पड़ता ही होगा। दूसरे बुजुर्ग उनके बापके मुख्य शिष्य सय्यद अमानुल्ला थे। वे भी ऐसी ही बातें करते थे। लेकिन इन दोनों बुजुर्गोंका देहान्त ऐसे समयमें हो गया जब उनकी शिक्षाएँ मीरके मनपर स्पष्ट छाप न छोड़ सकीं।

इन दोनोंके मरते ही मीर पर मुसीबतोंका पहाड टूट पडा। बड़े भाईने सौतेलापन निकाला, जायदाद खुद ले ली और क़र्ज़ा मीरके सर पर छोड़ दिया। दस ग्यारह सालका बच्चा मजबूरीमें घरसे निकला। दिल्ली-में आकर भी इत्मीनान नसीब न हुआ। जिन लोगोंने थोडी बहुत दया भी दिखाई वे या तो मारे गये या बड़े भाईके भडकानेमें आ गये। बापके लाड प्यार में पला बच्चा ज़मानेकी ठोकरें खाता फिर रहा था। ऐसी हालतमें बड़े बड़े बहादुरोंका दिमाग़ ख़राब हो जाता है, तो इसमें ताज्जुब क्या कि इतने छोटे लड़केका मिज़ाज हमेशाके लिए चिड़ चिडा हो जाय और उसमें क्रोध, खीझ और निराशा बहुत ही बढ़ जाय।

दूसरोंकी तबाहीका भी मीर पर बहुत असर पड़ा। देशकी हालत ख़राब थी। सिंहासनके लिए मारकाट मची रहती थी, दरबारमें सदा षडयन्त्र होते रहते थे, शासक भ्रष्ट थे, नादिरशाहके हमलेने तो तबाहीकी हद कर दी थी, जनता मूली गाजरकी तरह कटी थी, बडे बड़े रईस देखते ही देखते मुहताज हो गये थ, लोग अपनी ही अपनी फ़िक्रमें लगे रहते थे, हर तरफ़ मुसीबत थी। एक भावुक हृदय पर ऐसे समयमें क्या प्रभाव पड़ा होगा इसे आसानीसे समझा जा सकता है। मीरका मिज़ाज ऐसी ही परिस्थितियोंमें बनता बिगड़ता रहा।

मीरकी कविता

मीर उर्दू ग़ज़लमें सबसे बड़े शायर समझे जाते हैं। इस पर दो रायें

नहीं हैं। उर्दूके हर बड़े शायरने इसे माना है चाहे वह पुराने ज़मानेका हो, या नयेका या बीचके ज़मानेका। मिसालके लिए कुछ बड़े बड़े शायरोंका क़ौल देखते चलिए। सौदा जो मीरके समकालीन थे और जिनसे बराबर मीरकी चोटें चला करती थीं उन्हें भी कहना पड़ा कि—

"सौदा तू इस ज़मीं[1] में ग़ज़ल-दर-ग़ज़ल[2] ही लिख,
होना है तुझको 'मीर' से उस्तादकी तरफ़"।

नासिख कहते हैं—

"आप बेबहरा[3] है जो मोतक़दे-'मीर'[4] नहीं"

ग़ालिबने भी नासिखके विचारकी पुष्टि की है—

"ग़ालिब अपना तो अक़ीदा[5] है बक़ौले-'नासिख'[6]
आप बे बहरा है जो मोतक़दे-मीर नहीं"।

ग़ालिबके समकालीन ज़ौक़ कहते हैं—

"न हुआ पर हुआ 'मीर' का अंदाज़ नसीब-
'ज़ौक़' यारोंने बहुत ज़ोर ग़ज़लमें मारा"।

अकबर इलाहाबादीका कहना है—

"मैं हूं क्या चीज़ जो उस तर्ज़[1] पे जाऊं "अकबर"
'नासिखो' 'ज़ौक़' भी जब चल न सके 'मीर' के साथ।"

हसरत मोहानीने कहा है—

"शेर मेरे भी हैं पुर-दर्द[7] व लेकिन "हसरत"
'मीर' का शेवए-गुफ़्तार[8] कहांसे लाऊं ?"

नूहनारवीने लिखा है—

'बड़ी मुश्किलसे तक़लीदे-जनाबे-'मीर'[9] होती है'

---

[1]तर्ज़, [2]एक काव्य पद्धति, [3]न समझनेवाला, [4]मीरका प्रशंसक, [5]विश्वास, [6]नासिखके कथनानुसार, [7]वेदनापूर्ण, [8]कहनेका ढंग, [9]मीरका अनुसरण।

मीरके प्रशसक जब इतने बड़े शायर—जो अपने समयमे खुद बहुत मशहूर रहे हैं—मान रहे हों तो फिर उनके मरतबे पर बहस करना वक़्त बरबाद करना है। सवाल यह है कि यह बड़ापन किस वजहसे है—विचारों-की दृष्टिसे या कहनेके ढगसे, या दोनो दृष्टियोसे। मेरे विचारसे जबतक यह दोनों बाते न हो कोई शायर बड़ा नही हो सकता। न केवल अच्छे विचारोंके लाने और न सिर्फ़ अच्छे ढगसे शब्दोंको रखना किसी कविको ऊँचा बना सकते है। 'मीर' मे यह दोनो बाते है। वे विचार भी खूब लाये और उन्हे रखा भी अच्छे ढगसे। इसीसे उन्होने दिलोंको मोह लिया। यहाँ हम इन्ही बातों पर विचार करेगे कि वे विचार क्या थे और उन्हें मीरने किस ढगसे रखा कि उनकी कविता कलाकी चरमसीमाको छू लेती है।

मीरके ज़मानेके पहलेसे ही देशकी राजनीतिक और आर्थिक दशा गिरने लगी थी और उनके समयमे और भी गिर चुकी थी। ज़मानेको मुद्दतसे किसी ऐसे बड़े आदमीकी ज़रूरत थी जो इस भयानक वातावरणको शायरीके साँचेमें इस तरह ढाल दे कि उसके शेरोमे ज़मानेके दिलकी धड़कन महसूस होने लगे। लोग समझने लगे कि यह हमारी कहानी है, आप बीती जग बीती हो जाय। उसमे समयका पूरा चित्रण भी हो और इतिहासकी खुश्की भी न हो; घटनाओंको सार्वभौम कर दिया जाय। उर्दूशायरीने इस कामके लिए मीरको चुना। मीरने भी यह काम इस सलीक़ेसे किया कि सभीकी निगाह उनपर पड़ने लगी। उन्होने रोमाचकारी घटनाएँ देखी थी, मुसीबते खुद उनपर पड़ी थी, साथ ही उनके पास ऐसा हृदय भी था कि जो अपनी मुसीबतकी तरह जनताके दुःखोंका भी अन्दाज़ा कर सकता था। इसलिए जब वे बोले तो मालूम हुआ कि वह सभीकी आवाज़ है। उनकी कहानीको सबने अपनी कहानी समझा। मीरके ज़मानेमें और भी बड़े शायर थे। इनमेसे अधिकतरने उन्ही परिस्थितियोंको देखा था लेकिन मीरकी तरह ज़मानेके दर्दको कोई भी कविताके साँचेमे न ढाल सका। सौदा मीरसे कम पढ़े लिखे या कम ऊँचे कवि नहीं थे। फिर वे

मीरकी तरह समाजकी बात क्यों न कह सके ? इसका खास सबब दोनोंके मिज़ाजका फ़र्क था। मीरको कुछ तो प्रकृतिने शुरूसे ही ऐसा दिल दिया था और कुछ परिस्थितियोंने उसे ऐसा बना दिया कि वे दुःखको पूरी तरह समझने पर मजबूर हो गये। वे दुःखकी क़ीमत जानते थे। वे एक क्षणके लिए भी उसे हँसकर नही भुलाते थे। दुःखकी इस अनुभूतिको उनकी काव्यकलाने बहुत साफ़ और संक्षिप्त भाषामें ढाल दिया।

मीरके समयमें दिल्ली और भारतकी जो दुर्दशा थी उससे सारा वातावरण बड़ा दुःखमय हो गया था। जनता दुःखी थी और सामन्तवर्ग उससे भी ज्यादा। कोई वर्ग ऐसा था ही नही जो चैनकी साँस ले रहा हो। इस निराशा और दुःखकी घनघोर घटाओंको शब्दोंका जामा पहनानेका ज़िम्मा मीरने लिया क्योंकि शुरूसे ही उनका हृदय करुणासे परिपूर्ण था। इसके भी दो कारण थे। एक तो यह कि उनके बापने बचपनसे ही उन्हे प्रेमकी शिक्षा दी थी और वे अच्छी तरह जान गये थे कि प्रेम जनित करुणा अमूल्य होती है। इस मानसिक विकासके साथ यह भी याद रखिए कि दस वर्षकी अवस्थासे ही मीर पर जो मुसीबतें आईं और जिस प्रकार उन्हें दर दर भटकना पड़ा उससे उनके हृदयके करुणाके स्रोत फूट निकले। अपने साथ सभीको दुखी देखकर वे दुःख और करुणाकी व्यापकता भली प्रकार अनुभव कर चुके थे। दूसरा कारण यह था कि वे अपने समयकी सैनिक और राजनीतिक घटनाओंको देखा ही नहीं, उनमें शामिल भी हो चुके थे। ज़मानेके उतार चढ़ावको उन्होंने अपनी कविताकी प्रेरक शक्ति बना लिया। इस सिलसिलेमें एक बात यह भी याद रखनेकी है कि एक ज़मानेमें इनका एक स्त्रीसे प्रेम हो गया है। हृदय पटल पर खिचे प्रेमिकाके चित्रको उन्होंने 'परी' का नाम दिया है। उसके प्रेममें वे पागल तक हो गये थे। यह प्रेम भी उनके जीवनकी महत्त्वपूर्ण घटना है। ईश्वरीय प्रेमका रस तो वे अपने पिताके सत्संगमें ले चुके थे, सांसारिक प्रेमका इस प्रकार अनुभव हुआ; राजनीतिक उथल पुथलमें जीवनकी क्षणभंगुरता और मान-

वताके प्रेमने दिलमें घर कर लिया। सच्चे कविको इससे अधिक क्या प्रेरणा चाहिए। अब सिर्फ़ अध्ययनकी कमी थी। या यों कहिए कि दिल पैदा हो गया था। सिर्फ़ क़लमकी ज़रूरत थी। लेकिन जब दिलमें लगन और अनुभूतिकी टीस होती है तो दूसरे सामान भी पैदा हो ही जाते हैं। वे फ़ारसी और उर्दू कविताका बराबर अध्ययन करते रहे। अधिकतर उन्होंने खुद ही पढ़ा। कभी कभी योग्य व्यक्तियोंकी सहायता भी लेते थे लेकिन इस बातका कोई पता नहीं चलता कि उन्होंने कभी किसीको अपना उस्ताद भी बनाया था। खुद अपनी दृष्टिमें इतनी तीक्ष्णता थी कि अपने शेरोंकी परख खुद ही की। और चूंकि हर शेरमें गहरी अनुभूति होती थी और शब्दों तथा भावोंका सामंजस्य पूरा होता था इसलिए शेर वाक़ई शेर हो जाते थे। नतीजा यह हुआ कि कुछ ही दिनोंमें उनकी प्रसिद्धि दिल्ली और उसके आसपास हो गई। यह भी याद रखिए कि मीरकी टक्कर सौदा जैसे महाकविसे थी जो किसीकी ग़लती माफ़ करना जानता ही नही था। लेकिन सौदा भी मीरकी कलापर ऊगली न उठा सके न कभी पिंगलकी कोई भूल निकाल सके।

मीरकी तबियतमें जो जन्मजात काव्यकलाकी परखके बीज थे उनके कारण वे कभी बहके नही। उन्होंने बहुत रचना की और हर तरहकी रचना की। फिर भी अभीतक किसीने उनकी काव्यकला पर उंगली नही उठाई। इसीसे प्रकट है कि विचारोंकी प्रखरताके साथ ही उन्हें कलाका भी पूरा ध्यान रहता था और वे अपनी रचनाओंको सँवारते-सजाते रहते थे। काव्यके उपवनमेंसे उन्होंने काँटोंको दूर फेंककर फूलोंसे ही अपना दामन भरनेमें पूरी सफलता प्राप्त कर ली थी। हकीम क़ुदरतुल्ला क़ासिम अपने मशहूर 'तज़किरे'में लिखते हैं, "दर मालूमाते क़वायद मीर रा बर मीरज़ा बरतरीस्त" (छन्दशास्त्रमें मीर सौदासे बढ़े चढ़े हैं)। इससे मालूम होता है कि कोई उस्ताद न होनेपर भी मीरने काव्यशास्त्रका मेहनतके साथ अध्ययन किया था। अपने गुणको मीर साहब अच्छी तरह

समझते भी थे। उन्होंने कई जगह इसका उल्लेख भी किया है। एक जगह कहते हैं—

"शर्त सलीक़ा है हर इक अम्रम। ऐब भी करनेको हुनर चाहिए"

मीरकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वे सीधे सादे शब्दोंमें अपने भाव व्यक्त करते जिससे उनकी कविता बडी प्रभावोत्पादक हो जाती है। वे करुणाके कवि है। करुणाका प्रभाव भारी भरकम शब्दो और पेचीले ढगसे बात कहनेमे उतना नही पड़ता जितना साफ़ और सीधे शब्दोसे। अन्य भावनाएँ भी सीधे साधे ढगसे ही अधिक प्रभाव डालती हैं। सच्चे कलाकारकी पहचान यही है कि वह जो कुछ कहे स्पष्ट रूपसे कहे। उसकी बात साफ़ मालूम हो, चाहे आप उसे पसन्द करें या न करें। मीरने यह ढग अपनाया। वैसे कही कही उन्होने फ़ारसी अरबीके कठिन शब्दोंका भी प्रयोग किया है लेकिन ज्यादातर वे बड़े साधारण और रोज़मर्राकी बोल चालके शब्द लाते है। यह शब्द जनताके होते थे। मीरको ख़वास (अभिजातवर्ग) की परवा न थी, उन्हे अवाम (जनता) से ही काम था। वे जनताकी ही अनुभूति उसीके शब्दोंमे व्यक्त करते थे। एक जगह वे लिखते हैं:—

"शेर मेरे हैं गो ख़वास पसंद—गुफ़्तगू पर मुझे अवामसे है"

उनकी 'अवाम पसन्दी'का समर्थन एक और घटनासे होता है। एक बार लखनऊके कुछ बड़े लोग मीर साहबके पास मिलने और उनकी कविता सुनने गये। मीर साहबने उनसे कह दिया "मेरे अशआर आप लोगोकी समझमे न आयेगे, इसलिए कि मेरे कलामके लिए फ़कत मुहावरा अहले-उर्दू है या जामा मस्जिदकी सीढ़ियाँ; और आप लोग इससे महरूम।" मीर साहब ऐसी बात जान बूझकर कहते थे। वे अच्छी तरह समझते थे कि विषयके अनुरूप ही शब्द होने चाहिएं वर्ना बातमे कुछ कसर न होगा। कोई विचार मस्तिष्कमें भी शब्दोंके बग़ैर नहीं आता और जिन शब्दोंके साथ विचार पैदा होता है वे ही उसके लिए उचित और स्वाभाविक हैं।

कविका काम सोच समझ कर उन शब्दोंको ठीक जगह बिठाना है। अच्छे कवि उन्ही स्वाभाविक शब्दोंको लेकर उन्हे सवार सजाकर इस तरह रखते है कि वे सबको मोह लेते है।

मीर ऐसे ही महा कवि थे। वे करुणाके वातावरणमे पनपे थे और उनसे करुणाको अलग करना नाखूनको गोश्तसे अलग करने जैसा होगा। रज और ग़मके जो भाव उनके हृदयमे तूफ़ान उठाते थे उसका असर उनके शब्दोंमें भी साफ आ जाता था। यह बताना कठिन है कि मीरके हृदयमे भाव पहले आते थे या शब्द। मेरी समझमें तो दोनों एक साथ ही आते थे और मीर अपने ज्ञान और अध्ययनके बलपर उन्हे शेरके साँचेमे ढाल देते थे।

कविता हृदयकी अनुभूतिका स्पष्टीकरण होती है, जिन्दगीकी सच्चाइयों पर उसकी बुनियाद होती है। मीर इस भेदको जानते थे और उन्होने अपनी कवितामे सच्चे भावोंकी कभी उपेक्षा नही की है। उन्होंने जीवनको जैसा देखा उसे वैसा ही वर्णित किया। नतीजा यह हुआ कि दुनियाने मीरकी कवितामें अपने दिलकी बात पाई। मीरकी कलाने इस तसवीरको जीती जागती तसवीर बनाकर रख दिया। वास्तविकताके चित्रणसे उनकी कवितामें बडा आकर्षण आ गया। उनकी करुणामे लोगोंको अपने हृदयकी करुणा महसूस होने लगी। यह काम एक सच्चा कवि ही कर सकता था। वे एक जगह कहते हैं:—

"मुझको शायर न कहो मीर कि साहब मैंने—
दर्दोग़म कितने किये जमा तो दीवान किया"

फिर यह भी याद रखिए कि इस 'दर्दो-गम' को मीरने बड़ी बेतकल्लुफ़ी और बेबाकीसे सामने रखा है। चूंकि उनके हृदयमें भावनाएँ भरी पड़ी थीं और उन्हें अपनी कविताका विषय ढूढ़नेकी ज़रूरत न थी इसलिए उन्हे भारी भरकम शब्दोंकी भी ज़रूरत न थी और वे ऐसी ही भाषामें शेर कहते थे जैसे किसीसे बात कर रहे हों। कभी कभी ऐसे शायरोंके यहाँ भी जो

मीरसे नीच दर्जेके हैं, सादा शब्द बेतकल्लुफ़ीसे कहे हुए मिलते हैं लेकिन उनके यहाँ मालूम होता है कि शब्दोंको किसी तरह जोड़ तोड़कर रख दिया गया है, वे भावनाकी कसक नही झलकाते और ग़ौर करने पर उनकी कविता केवल तुकबन्दी मालूम होती है। परम्परागत भावों और विषयों और शब्दाडंबरके अलावा वहाँ कुछ भी नही होता। उनके शेर याद रखनेके काबिल नही होते। ऐसे शायर जीते जी ही मर जाते है लेकिन मीर जैसे महाकविका व्यक्तित्व ही अलग होता है। उसके शेर किसी मशीनसे निकले हुए नही बल्कि हृदयकी गहराइयोसे निकले हुए होते है। मालूम होता है कि किसी इसानने कुछ कहा है और इसानके लिए कहा है।

मीरके काव्य सौन्दर्यका एक कारण यह भी है कि वे गज़लको शब्दोंमें रखते है जिनमें साधारण बातचीत होती है। उदाहरणार्थ.—

ख़्वाह मारा उन्होंने मीरको या आप मुआ,
जाने दो यारो, जो हो ना था हुआ, मत पूछो।
एक महरूम चले मीर हमीं दुनियासे—
वर्ना आलमको ज़माने ने दिया क्या क्या कुछ।
ऐ नुकीले ये थी कहांकी अदा—खुप गयी जीमें तेरी बांकी अदा,
कुछ करो फ़िक्र इस दिवानेकी—धूम है फिर बहार आनेकी।

ऐसा मालूम होता है कि जैसे कोई साथी चुपके चुपके दिलचस्पीकी बाते कर रहा है और चूंकि बातोमे बनावट नही है इसलिए सुननेको जी चाहता है। मीर साहब खुद अपने शेरोको साधारण बातचीत ही मानते है। वे लिखते है:—

"पढ़ते फिरेगे गलियोंमे इन रेख्तोंको लोग—
मुद्दत रहेंगी याद यह बातें हमारियां"

ग़ज़लका आधार चूंकि अधिकतर प्रेम चर्चा ही होती है, उसमें दिलकी बातें ज़्यादा होती है इसलिए इसके लिए नरम और कोमल शब्दोंका ही चुनाव ठीक होता है। मीर सीधे सादे और कम-से-कम शब्दोमे बड़ी बड़ी बातें

कह जाते हैं और उनमें मुहावरोंकी चाशनी देकर उनका लुत्फ़ बढ़ा देते हैं। मुहावरोंके प्रयोग और शब्दों पर अधिकार होनेके कारण शेरोंमें बड़ा सौन्दर्य पैदा हो जाता है। बात आम बोलचालकी भाषामें कह दी जाती है और आसानी और सफाईसे अदा हो जाती है। फिर मीर मुहावरोंको सिर्फ़ मुहावरा लानेके लिए नही बल्कि अपने भावोंको उभारनेके लिए लाते है। वे मुहावरोंकी दुकान नही लगाते, उन्हे कविता कामिनीके सौन्दर्यका प्रसाधन बनाते है।

मीरकी करुणाका विषय समाप्त करनेके पहले उसके महत्वपर भी कुछ कहना जरूरी है। उर्दू और फ़ारसीकी ग़जलोंमें गम या करुणा पर बड़ा ज़ोर दिया गया है। कभी कभी तो ऐसा मालूम होता है कि शायर लोग महज़ रस्म पूरी करनेके लिए ज़बर्दस्ती ग़म पैदा करते थे और उसकी कल्पना करते थे। किसी वजहसे ग़ज़लोकी प्रवृत्ति करुणात्मक ही हो गई थी। मीरके यहाँ भी करुणा ही करुणा है लेकिन यह कहीं नही लगता कि उन्होंने अपनेको ज़बर्दस्ती ग़मका मारा कहा है। यदि उनकी निजी कठिनाइयों और उस समयके दुःखपूर्ण वातावरण पर दृष्टि डाली जाये तो वे वास्तवमें दुखी मालूम होंगे। उनकी रचनाओंसे भी पता चलता है कि उन्होंने जो कुछ कहा वह उनके हृदयकी सच्ची अनुभूति थी। मीरका ग़म दर्दनाक ज़रूर है लेकिन नफ़रत पैदा करनेवाला नहीं, बल्कि जी चाहता है कि हम भी उस ग़ममें शरीक हों। यह इसीलिए कि उसकी बुनियाद सच्चाई पर है। उनकी कहानी सच्ची मालूम होती है, रस्मी और नुमायशी नही। मीरने ग़मको ग़म ही समझा, उसे ऐश नहीं बताया, न उसे दार्शनिकताका रंग दिया, न उसे खुशीकी सरहदसे मिलानेकी कोशिश की। यानी मीरका ग़म वह ग़म है जो हर इंसान पर पडता है या पड़ सकता है, जिसमे संसारके अधिकतर लोग फँसे हैं। मीरने इस ग़मको ज़लील नही किया, उसके महत्वको कम नहीं किया। अपना सम्मान उन्होंने बादशाहों और रईसोंके सामने भी क़ायम रखा। वे ग़मके सहारे भीख नही माँगते फिरे

या उससे अनुचित लाभ उठानेके चक्करमें नहीं रहे। वे भूखे रह कर भी अपनेको अमीरोंसे बड़ा समझते रहे। उन्होंने हमेशा सन्तोषसे काम लिया, कभी किसीके आगे हाथ न फैलाया। एक जगह कहते हैं:—

"आगे किसूके क्या करें दस्ते-तमा दराज़,
वह हाथ सो गया है सिरहाने धरे धरे"।

मीरने ग़मका विस्तार करनेके लिए हिन्दुस्तानकी बर्बादीको भी उसमें शामिल कर दिया है। उनके शेरोमे ऐसे इशारे हैं जिनसे उनकी आँखों देखी तबाहियोंका पता चलता है। इशारोमे बात करनेका एक कारण तो यह है कि ग़ज़लमें इन बातोंका साफ़ ज़िक्र नही किया जाता। उसमें प्रेम सम्बन्धी बाते ही होती है और उन्ही रूपकोमें कवि अन्य बातोंको भी कहते है। दूसरा कारण यह था कि उस ज़मानेके गिरते हुए निरंकुश सामन्तीकालमें राजनीतिक बातोंको कहना आसान न था। ज़रासी चूक होने पर बड़े बड़े रईस और वज़ीर निकाल दिये या मार दिये जाते थे। ऐसी परिस्थितिमें मीरने बड़ी उस्तादी की कि ग़ज़लकी टेकनीक भी निबाही, राजनीतिक दंडके भी भागी न बने और समझनेवालोंको अपनी बात समझा भी गये। मिसालके लिए यह शेर देखिए:—

इन उजड़ी हुई बस्तियोंमें दिल नहीं लगता,
है जीमें वहीं जा बसें वीराना जहां हो।
दिल वह नगर नहीं कि फिर आबाद हो सके,
पछताओगे सुनो हो, यह बस्ती उजाड़कर।
ख़राबी दिलकी इस हद है कि यह समझा नहीं जाता,
कि आबादी भी यां थी या कि वीराना है मुद्दतका।
दिल अजब शहर था ख़यालोंका—लूटा मारा है हुस्नवालोंका॥
रोशन है इस तरह दिले वीरांमें एक दाग़—
उजड़े नगरमें जैसे जले है चराग़ एक,

शहरे दिल एक मुद्दत उजड़ा बसा ग़मोंसे—
आख़िर उजाड़ देना इसका क़रार पाया।

इन शेरोंमें बस्ती उजड़ने और आवाद होनेका बार बार ज़िक्र आता है। मीरने दिल्लीको अपनी आँखोंसे उजड़ते देखा था। नादिरशाहके हमलेकी लूटमार और नर सहार देखनेवालोके लिए बड़ी दुःखपूर्ण घटना रही होगी। लोगोका मारा जाना, खज़ानेका ख़ाली होना, बड़े बडे सामन्तोंका भिखारी हो जाना आदि मीर जैसे आदमीके लिए मौतसे कम न था। वे जानते थे कि नादिरशाहकी उजाड़ी हुई दिल्ली फिर न बस सकेगी। इसीलिए कहते है,

"दिल वह नगर नहीं कि फिर आबाद हो सके,
पछताओगे सुनो हो, यह बस्ती उजाड़के।"

दिल्ली उस समयका सबसे सुन्दर और समृद्ध नगर था। उसके मिटनेसे जो टीस मीरके दिलमे उठी उसीको उन्होने इन शब्दोमें कहा है—

"ख़राबी दिलकी इस हद है कि यह समझा नहीं जाता,
कि आबादी भी यां थी या कि वीराना है मुद्दतका"।

और जहाँ मीरकी भावनाएँ रूपकोका बाँध तोड़ गईं वहाँ उन्होंने दिल्लीका मरसिया ही कह डाला—

"अब ख़राबा हुआ जहानाबाद—वरना हर इक क़दम पे यां घर था"।

इस तरहके सैकड़ों शेरोमें मीरने अपनी देशभक्ति और जनसाधारणसे एकाकार होनेका सबूत दिया है।

मीरका एक कमाल यह भी है कि उन्होने फ़ारसीके अच्छे मुहावरोंको हिन्दीके साँचेमे ढालकर हमारी भाषामे खपा दिया। उनके समकालीन सौदा, मीर हसन, दर्द वगैरह भी यही काम कर रहे थे लेकिन मीरका भी इसमें कुछ कम हाथ नही है। भाषाको समृद्ध बनानेके लिए उन्होने प्रचलित शब्दोंमें फ़ारसी मुहावरोंको सफलता पूर्वक हिन्दुस्तानी रूप दे

दिया। उदाहरणार्थ फ़ारसीका मुहावरा है 'बू करदन'। इसका मतलब है सूंघना। मीरने इस मुहावरेको यह रूप दिया:—

"गुलको महबूब हम क़यास किया—फ़र्क़ निकला बहुत जो बास किया।"

फ़ारसीका एक मुहावरा है 'तो गोई' यानी 'तू कहे'। यह ऐसी जगह पर बोला जाता है जैसे हम बात करते करते कहते हैं 'समझे आप ?' यह मुहावरा वर्णनात्मक विषयोके लिए बडे महत्त्वका था। मीरने अपनी पुरानी भाषामे इसका तर्जुमा 'कहे तू' किया। उनका एक शेर है:—

"अब कोफ़्त से हिजरांकी जहां दिल पे रखा हाथ,
जो दर्दो-अलम था सो कहे तू कि यहीं था"।

इसी तरह फारसीका एक और मुहावरा था। 'ऐ कि' या 'ऐ आँ कि।' इसका मतलब था 'ऐ शख्स जो तू है'। बातमे ज़ोर पैदा करने और किसी-को उपदेश आदि देनेके लिए इसका प्रयोग होता था। मीरने 'ऐ तू' कहकर बड़ी सादगीसे यह मुहावरा ले लिया। वे एक शेरमे कहते हैं:—

"ऐ तू कि यां से आक़बते-कार जायगा—
ग़ाफ़िल न रह कि क़ाफ़िला इक बार जायगा"।

मीरके ज़मानेमे उर्दू एक प्रकारसे अपनी प्रारम्भिक अवस्थामे थी। व्याकरणकी कड़ाई न थी, कोष आदि नही बने थे। खुद उर्दूमे इस दर्जेके उस्ताद कम थे जिनकी भाषाओसे उदाहरण लेकर प्रामाणिकता सिद्ध की जा सकती। उस समयके हमारे साहित्यिक फ़ारसीसे अत्यन्त प्रभावित होनेके बावजूद भारत ही के मुहावरे और शब्द बहुत लानेका प्रयत्न कर रहे थे। उनके यहाँ हिन्दीके ऐसे शब्द मिलते हैं जो इस प्रगतिके युगमे भी नही मिलते। मीरके यहाँ भी ऐसे शब्दोकी कमी नही है यथा ओर, नित, मूंद, टुक, निदान, तनिक, जीवड़ा आदि। यह हाल उस्ताद ज़ौकके ज़माने तक रहा उसके बाद यह बात धीरे धीरे खत्म हो गई। मीरके सिलसिलेमे यह ज़िक्र ज़रूरी है क्योंकि आजकी उर्दूके माप दंडपर इनकी रचनाको पूरी

न उतरते देखकर आप उन्हें भाषा ज्ञान विहीन कह सकते हैं। मीरका वह ज़माना था जब 'ने' का प्रयोग आजकी तरह ज़रूरी नहीं था जैसे,

"इक रोग में बिसाहा जीको कहां लगाया", "मीरको तुम अबस उदास किया," "नक़्क़ाश देख तो मैं क्या नक़्शे-यार खींचा"

इसी प्रकार उस समय कर्ता बहुवचन होने पर भी कभी कभी क्रिया भी बहुवचन होती थी। जैसे—

"दिलकी कुछ तक़सीर नहीं है आंखें उससे लग पड़ियां—
मार रखा सो इनने मुझको किस ज़ालिमसे जा लड़ियां"

पड़ी और लड़ीकी बजाय अब पड़ियाँ और लड़ियाँ प्रयोगमें नही आते। लेकिन इनमे जो संगीतका माधुर्य है उससे आज भी जी चाहता है कि इनका प्रचलन होता।

मीरके ज़मानेमे 'उसने' की बजाय 'उनने' प्रचलित था। उदाहरणार्थः—

"मीरके दीनो-मज़हबको क्या पूछते हो उनने तो—
क़श्क़ा खींचा दैरमें बैठा, कब का तर्क इस्लाम किया"।

मीर साहबके ज़मानेकी भाषा की कुछ और भी विशेषताएँ है। जैसेः—

"काम मेरा भी तिरे हाथों कभू हो जायगा",
"मैं रोऊं तुम हँसो हो क्या जानो मीर साहब"
"समझते नहीं हम फ़लक क्या करे हैं",
कभू जायगी जो उधर सबा"

मीरके समयमें भारतीय भाषाओंके शब्द तेज़ीसे उर्दूमें आ रहे थे। स्वरको कोमल बनानेके लिए ब्रजभाषाका ढंग अपनाया जा रहा था। मीरने इन शब्दोंको चुन चुनकर जगह दी है। फ़ारसी शब्दोंके बहुत प्रयोग पर भी वे एक प्रकारसे फ़ारसीके प्रति विद्रोही थे। उन्होंने गैरज़ी फ़ारसी मुहावरोंको हिन्दुस्तानी बना दिया। कभी कभी उन्होंने फ़ारसी शब्दोंका उच्चारण भी ठेठ हिन्दुस्तानी कर दिया, जैसे 'मस्जिद' के स्थानपर 'मसीत'।

डा० अमरनाथ झाने अपने एक विद्वतापूर्ण लेखम एक सूची दी है जिसमें से कुछ उदाहरण दे कर हम दिखायेंगे कि हिन्दुस्तानी शब्द और मुहावरे मीरको कितने प्यारे थे, यथा—"**जो काम मीरजीने किया सो कुदब किया**" "**जाने हीके हैं लच्छन सारे इस आसमांके,**" "**एक समय तुम हम....**", "**कुछ ठौर भी थी उसकी कुछ उसका ठिकाना था,**" "**दूं किसको दोष दुश्मने जानी थी दोस्तो,**" "**दिन आजका भी सांझ हुआ इंतजारमें,**" "**रहता है पेशे-दीदएतर आहका स्वभाव,**" "**सुध अपनी बिसर जाये...,**" "**मीर क्यों रहते हैं अक्सर अनमने**", "**अचरज है इस नगरसे जाता नहीं रहा कुछ,**" रात हुई जिस जागह हमको हमने **वहीं बिसराम किया,**" "**इक बात उससे हो गयी दो दो बचनके साथ।**"

यह सूची लम्बी चौड़ी है। इसमें मीर साहबके इस प्रकारके शब्द भी हैं, जैसे, अचपल, बासन, बान, भसम, परकिमा (परिक्रमा), तजना, जोग, सुमिरन, स्वर, निपट, हुकार, ससार, गुन, धीर बंधना आदि।

ग़ज़लमें स्थानीय वर्णनकी ज्यादा गुजाइश नही है। लेकिन मीर साहबने इस बारेमें भी यथा सम्भव प्रयास किया है। उनके कुछ शेर देखिए जिनका वातावरण ठेठ भारतीय है:—

"आतिशे इश्क़ने रावनको जलाकर मारा,
गर्चे लंकासा था उस देवका घर पानीमें"।
"अजब नहीं है जो जाने न मीर चाह की रीत,
सुना नहीं है मगर यह कि जागी किसके मीत"।
"दिलो-दिल्ली दोनों हैं गर्चे खराब,
ये कुछ लुत्फ़ इस उजड़े नगरमें भी है"।
"सुबहे चमन का जल्वा हिंदी बुतोंने देखा,
संदल भरी जबीं है होठोंकी लालियां हैं"।

लेकिन यह न समझना चाहिए कि मीर साहबकी रचनाओंमें सार्वभौमिकता नहीं है। बात इसकी ठीक उलटी है। उन्होंने दर्शन, नीति,

प्रेम और तसव्वुफ़ पर ऐसे ऊँचे शेर कहे हैं जिनसे उनकी महानता का लोहा मानना ही पड़ता है। पुस्तकमें संकलित शेरोंसे इस बातका काफ़ी सबूत मिल जायगा फिर भी कुछ शेर यहाँ दे देना मुनासिब मालूम होता है:—

"कुछ न देखा फिर बजुज़ इक शोलए पुर पेचोताब,
शमा तक तो हमने देखा था कि परवाना गया"।
"मत सहल हमें जानों फिरता है फ़लक बरसों,
तब ख़ाक के पर्दे से इन्सान निकलते हैं"।
"हम आप ही को अपना मक़सूद जानते हैं,
अपने सिवाय किसको मौजूद जानते हैं"।
"था मुस्तआर हुस्नसे उसके जो नूर था
खुर्शीदमें भी उस ही का ज़र्रा ज़हूर था"।
"गुलो-आइना क्या खुर्शीदो-मह क्या—
जिधर देखो तिधर तेरा ही रू है"।
"ग़ैरते यूसुफ़ है यह वक़्ते अज़ीज,
मीर इसको रायगां खोता है क्या"।
"है मुश्ते ख़ाक, लेकिन जो कुछ है मीर हम हैं,
मक़दूरसे ज़ियादा मक़दूर है हमारा"।

मीरके ज़मानेमें किसी शायरका नाम पैदा करना आसान न था। न पत्र थे और न प्रकाशनका कोई साधन। न वातावरण ही ऐसा था कि लोग चैनसे बैठकर साहित्य चर्चा करते। फिर सबसे बड़ी बात यह थी कि भाषा अपनी प्रारम्भिक अवस्थामें थी, उसका कोई माप दंड न था। मुशायरे होते थे सो भी आज की तरह रोज़ रोज़ नहीं। यातायातके साधनोंकी कमीसे मुशायरोंमें बाहरके लोगोंका आना लगभग असम्भव था। मीरने अपने ज़मानेके मुशायरोंका ज़िक्र करते हुए लिखा है:—

"क्या रहा है मुशायरेमें अब—लोग कुछ जमा आन होते हैं,
मीर, भिर्जा रफ़ी व ख्वाजा मीर—गिनतीके यह जवान होते हैं"।

इस कशमकशमें एक दिक़्कत और बढ़ जाती थी जो अच्छाई भी कही जा सकती है। जो गिनतीके साहित्यिक थे वे सब के सब फारसी साहित्यके पडित थे। वे उर्दूके क्षेत्रमें अपने प्रतिद्वद्वियोंकी बड़ी सख्त जाँच पड़ताल किया करते थे। ज़रा सी चूकपर एतराज़ोंकी बाढ़ आ जाती थी। चुनाँचे थोड़ेसे लोग जो सच्चे कवि थे अपनी पूरी तय्यारी और मज़बूती रखते थे और भाषा, उपमा, रूपक आदि सभीके बारेमें खुद बड़ी होशियारी रखते थे। फलतः उर्दू भाषा भी मँजती गई और कवि भी वे ही मैदानमें रह सके जो सच्चे कवि थे। बाक़ी लोग कुछ ही दिनोंमें भाग निकलते थे। बालकी खाल निकालनेमें सौदा सबसे आगे थे। वे किसीको माफ़ करना जानते ही न थे। मालूम नही उन्होने कितने शायरों पर 'हजवें' (निन्दात्मक कविताएँ) कही है। मीरको भी उन्होने नही छोड़ा। मीरके बारेमें लिखते है:—

"न पढ़ियो यह ग़ज़ल सौदा तू हरगिज़ मीरके आगे,
वह इन तर्ज़ोंसे क्या वाक़िफ़ वह यह अंदाज क्या जाने"।

और मीरने भी सौदाके लिए लिखा है:—

"तरफ़ होना बहुत मुश्किल है मीर इस शेरके फ़नमें,
यूंही सौदा कभो होता है सो जाहिल है क्या जाने"।

उसी ज़मानेमे एक शायर बक़ा उल्लाखां बका थे। उन्होंने दो शेर कहे:—

"इन आंखोंका नित गिरिया दस्तूर है—
दोआबा जहांमें यह मशहूर है"।
"सैलाब से आंखोंके रहते हैं ख़राबेमें—
टुकड़े जो मिटे दिलके बसते हैं दोआबेमें"।

मीर साहबने खुदा जाने इन शेरोंको सुनकर या अपनी तबियतसे ही यह शेर कहा:—

"वे दिन गये कि आंखें दरिया सी बहतियां थीं,
सूखा पड़ा है अब तो मुद्दतसे यह दोआबा"।

इस पर बक़ा बिगड़ गये और निम्न लिखित क़िता कहा:—

"मीरने गर तेरा मजमून दोआबेका लिया,
ऐ बक़ा तू भी दुआ दे जो दुआ देनी हो।
या खुदा मीरकी आंखोंको दोआबा कर दे,
और बेनीका यह आलम हो कि तिरबेनी हो"।

मालूम होता है कि मीर और बकासे बिगड़ती ही गई क्योंकि बक़ाने कई बार मीरका अपमान किया। दो अन्य क़ितोमे उन्होने मीर साहबको इस तरह याद किया:—

"मीर साहब फिर इस से क्या बेहतर—
इसमें होवे जो नाम शायरका।
लेके दीवां पुकारते फिरिए—
हर गली कूचा 'काम शायर का'।"
"तौबा जाहिदकी तौबः तिल्ली है—
चिल्ले बैठे तो शेख चिल्ली है।
पगड़ी अपनी संभालिएगा मीर—
और बस्ती नहीं, यह दिल्ली है"।

इन बातोंका उल्लेख यह दिखानके लिए किया है कि उस ज़मानेमें मुक़ाबला सख्त था। जब तक किसीमे प्रकांड विद्वता नहीं होती थी उसका उभरना असम्भव था। इसी कशमकशमे मीर साहबने नाम पैदा किया, यहांतक कि सौदाको भी उनका लोहा मानकर कहना पड़ा कि:—

"सौदा तू इस ग़ज़लको ग़ज़ल दरग़ज़ल ही लिख,
होना है तुझको मीरसे उस्तादकी तरफ़"।

मीरकी उस्तादी उनकी योग्यता और काव्यकलाके आधारपर ही थी। उन्होंने न केवल अपने कालकी रुचिके अनुसार ही ग़ज़लें कहीं, बल्कि ऐसी बातें भी लिख गये जो आज भी याद की जाती हैं। कहना पड़ता है कि मीर अपनी शताब्दीका ही नहीं बल्कि हर शताब्दी और हर युगका कवि था। यह बात विरले ही साहित्यिकोंके भाग्यमें नसीब होती है।

मीरको अपनी कलाकी महानताका बोध था। वे दिलसे समझते थे कि जो बातें उन्होंने कह दी हैं वे कम लोग कह सकेंगे। उन्होंने अक्सर अपनी महानताका उल्लेख किया है:—

"सारे आलम पर हूं मैं छाया हुआ—मुस्तनद है मेरा फ़रमाया हुआ"।
"जाने का नहीं शोर सुख़नसे मिरे हरगिज़—
ताहश्र जहांमें मिरा दीवान रहेगा"।

"रेख्ता रुत्बेको पहुंचाया हुआ उसका है,
मोतक़िद कौन नहीं मीरकी उस्तादीका"।
"समझे अंदाज़े-शेरको मेरे—मीर का सा अगर कमाल रखे"।

यह नहीं कहा जा सकता कि इस तरह अपनी बड़ाई करके मीर साहबने शायराना रस्म पूरी की है। जिस संघर्षमें मीरकी कविता उभर रही थी, उसमें सफलताके शिखरपर पहुँचकर प्रत्येक कलाकार यही अनुभव करता। यह मीरकी कलाकी पुकार थी। मीर नहीं बोल रहे थे, उनकी रूह बोल रही थी, उनकी विद्वताकी ठोस बुनियाद आवाज़ दे रही थी, बल्कि आनेवाली नस्लें मीरकी आवाज़में आवाज़ मिला रही थीं। जो लोग मीरके आलोचक थे वही उनके इन दावोंको सुनकर दिलसे हाँ कह रहे थे। आज भी हर समझदार और दिलवाला मीरकी रचनाओंको पढ़कर इन बातोंको सिर्फ़

शेखी या अतिशयोक्ति नहीं समझता बल्कि सोचता है कि उनके यह दावे बिल्कुल ठीक है।

ऊपर डा० अमरनाथ झाके जिस लेखका उल्लेख हुआ है उसीके अन्तिम भागका उद्धरण देकर हम मीर सम्बन्धी अपने लेखको खत्म करना चाहते है। डा० झाका लेख अंग्रेज़ीमें है और उनके उद्धरणका अनुवाद निम्न-लिखित है:—

"मैं कई बरससे 'कुल्लियाते मीर' का अध्ययन कर रहा हूँ। मेरे अध्ययन-ने मेरा मनोरंजन करनेके साथ मुझे लाभ भी पहुँचाया है और मेरे हृदयमें मीरकी महानताकी छाप बिठा दी है। मुझे महसूस होता है कि एक ऐसे व्यक्तिसे मेरी भेंट हुई है जो करुणाका प्रभाव डालनेका बादशाह है, फिर भी जीवन और उसके अन्य भावनाओंसे भी दिलचस्पी रखता है और यदि जीवनके उस दूसरे पहलूको स्वीकार नहीं करता तो उससे इनकार भी नहीं करता। जिन्दगीकी गहराइयों तक उसकी पहुँच है और उन गह-राइयोंमें उसने अक्सर चीज़े ऐसी पाई हैं जिन्होंने उसे सोचमे डाल दिया है और यह कहने पर मजबूर कर दिया है कि **'क़दम क़दम पे है यां जाय नालओ फरियाद'**। फिर वह ऊपरी चमक दमककी भी उपेक्षा नही करता। निस्सन्देह दृष्टिकोणके विस्तार और मानवताके प्रेम दोनोके लिहाज़से मीर हिन्दुस्तानके महान कवियोंमेसे है—

'आलम को सैर मीर की सुहबत में हो गयी,
ताला से मेरे हाथ यह बेदस्तोपा लगा।'

ग़ज़लका परिचय

आखिरमें यह बता देना भी मुनासिब मालूम होता है कि मीर जिस काव्य पद्धति—ग़ज़लके सबसे बड़े कवि थे वह है क्या और उसकी विशेषताएं क्या हैं। ग़ज़लका शब्दार्थ है औरतोंसे बात करना। लेकिन औरतोंसे

मतलब सिर्फ वे ही औरतें है जिनसे बेतकल्लुफ़ीके साथ हँसी मज़ाक़का या 'सेक्सुअल' सम्बन्ध हो सकता है। ग़ज़ल अरबीमें न थी। यह फ़ारसीवालों-की उपज थी। लेकिन इसकी ओर सारे कवि झुक पड़े। यदि उर्दूमें ग़ज़लके मुक़ाबलेमें और सभी काव्यपद्धतियोंको रख दिया जाय तो भी ग़ज़ल ही का पल्ला भारी रहेगा। कभी कभी दूरसे देखने-वाले समझते है कि उर्दूशायरी ही का दूसरा नाम गज़ल है। यह बात सही नहीं है, लेकिन इससे ग़ज़लकी लोकप्रियताका अन्दाज़ा हो जाता है।

ग़ज़लकी बुनियाद तो औरतोंसे बातचीत पर ही रखी गई थी और उन्हींके प्रेमसे इस महलका निर्माण भी हुआ, लेकिन ग़ज़ल केवल इन्हीं बातो तक सीमित कभी नहीं रही। वैसे तो ग़ज़ल शृंगारिक काव्य और बड़ा सीमित काव्य समझा जाता है। लेकिन उसमें सारे विषय कह डाले जाते हैं। नीति, राजनीति, दर्शन, धर्म, विज्ञान आदि सभी विषय इसके अन्तर्गत मिल जायेंगे। शायद ही कोई बड़ा शायर ऐसा हो जिसके यहाँ ग़ज़लमें प्रेम सम्बन्धी कड़ियोंके अलावा कुछ और न मिलता हो। क़ुली कुतुबशाह, जो अकबरका समकालीन दक्खिनका बादशाह था, जब ग़ज़लें लिखता था तो बीच बीचमें **प्रेमेतर** विषय भी ले आता था। मीरके पूर्व-कालीन दिल्लीके कवियों—वली, मज़हर जानजाना, फायज़ देहलवी आदिके यहाँ भी ऐसी ग़ज़लें मिलती है जिनसे हमारे कथनकी पुष्टि होती है। मीरके समयमें ग़ज़लकी यह विशेषता बढ़ गई थी और उनके बाद तो तेज़ीसे शृंगारके अलावा जीवनकी दूसरी समस्याएं ग़ज़लमें आने लगीं यहाँ तक कि आधुनिक कालमें तो ग़ज़लमें प्रेमका विषय दब ही सा गया और अन्य विषय अधिक आ गये। चकबस्त और इक़बालने तो ग़ज़लोंमें प्रेमकी बाते बहुत ही कम रखीं अधिकतर नीति, दर्शन तथा अन्य विषयों पर शेर कहे। वर्तमान समयमें तो राजनीति ग़ज़लों पर इतनी छा गई है कि विचारोंकी दृष्टिसे ग़ज़लमें शृंगार लगभग मिट ही गया है। गर्ज़ कि कोई

समय ऐसा नही हुआ जब कि ग़ज़ल केवल शृंगार तक सीमित रही हो। इसमें बेहद विस्तारकी गुजायश है।

ग़ज़लकी बुनियाद चूंकि शृंगार पर हीं थी इसलिए उसमे रगीनी और संक्षिप्तता आना जरूरी था। रंगीनीकी जरूरत तो जाहिर है और संक्षिप्तता इसलिए कि प्रेम निवेदन इशारोंमे ही होता है। उन्हे वे ही समझ पाते है जो या तो अनुभवी होते हैं या सरस। वे जानते है कि प्रेमियोंकी दुनियाँमें किस शब्दका अर्थ कितना अलग और कितना विस्तृत हो जाता है। एक एक अगका सचालन एक एक पुस्तकका काम करता है, लेकिन सिर्फ़ उन्हीके लिए जो प्रेमका पाठ पढ़ चुके होते है। भेदको भेद ही रहने देनेके ख्यालसे कमसे कम शब्दोमे अधिकसे अधिक अर्थ लानेका प्रयत्न किया जाता है। इसीलिए कविको दो ही मिसरोमे पूरा विचार व्यक्त कर देना पड़ता है। चुनाचे ग़ज़लका हर शेर दूसरेसे अलग होता है। शायद ही कभी भूले भटके दो शेरोसे मिलकर मतलब निकलना हो।

गज़लकी बनावट पर ध्यान दीजिए। पहले शेरके, जिसे मतला कहते है, दोनों मिसरोंमे क़ाफिया[1] और रदीफ़[2] होती है। रदीफ चाहे न हो लेकिन क़ाफ़िया जरूरी है। मतले एकसे ज्यादा भी हो सकते हैं लेकिन कमसे कम एक ज़रूरी ही है। ग़ालिबने यह बन्दिश हटाकर कुछ ग़जले बग़ैर मतलेके भी कही है और उनकी देखा देखी कुछ और लोगोंने भी ऐसा किया है लेकिन यह रुझान आमतौरसे नहीं है। ज्यादातर—बहुत ज्यादा—ग़ज़लें मतलेके साथ ही कही गई हैं। ग़ज़लके आखिरी शेरको मक़ता कहते है जिसमें शायर अपना तखल्लुस (उपनाम) ले आता है। ग़ज़लके शेरोकी संख्या सीमित नहीं है। मीरके कालमें और उनके बाद भी पचास पचास सौ सौ शेरोंकी ग़ज़लें कही गई हैं। आधुनिक

---

[1]तुक, पंक्तिके अन्तमें आनेवाले एक ढंगके भिन्न भिन्न शब्द [2]पंक्तिके अन्तमें बार बार आनेवाले शब्द।

कालमें शेरोंकी संख्या बहुत कम हो गई है। अब साधारणतः ११ या १३ शेरोंकी ग़ज़ल कही जाती है। बाज़ ग़ज़लें तो पाँच ही शेरोंमें ख़त्म हो जाती हैं।

गज़लके शेरोंके असम्बद्ध होनेपर कुछ लोगोंको आपत्ति है। वे कहते हैं कि गज़लमें एक शेरमें जीनेका ज़िक्र होता है, दूसरेमें मरनेका, तीसरेमें मिलनका, चौथेमें जुनूनका। इस तरह उसमे परस्पर विरोधी बातें आती रहती हैं जो बेतुकी और पागलपनकी मालूम होती है। किन्तु इस आपत्तिमें कोई जान नही है। आपत्ति करनेवाले शायद समझते हैं कि पूरी ग़ज़लमे एक ही समयके भावोंका चित्रण होता है। यह बात ग़लत है। शायर अपने विभिन्न समयकी अनुभूतियोंको एक एक शेरमें व्यक्त करता है। कभी वह प्रिय मिलनसे खुश होता है तो हँसता है, कभी प्रियकी कठोरता पर रोता भी है, कभी राजकीय अत्याचारोसे पीड़ित होकर चीखता भी है, कभी कोई अच्छी सूरत देखकर मस्त भी होता है। यानी विभिन्न परिस्थितियोमे उसके हृदयमे जो भाव हिलोरे लेते है उन्हे एक ही समयमें ग़ज़ल कहनेमे विभिन्न शेरोंमे व्यक्त करता है। यह सवाल उठता है कि वह ऐसा क्यों करता है। इसका जवाब यह है कि गज़लकी टेकनीक एकसे ज़्यादा शेर माँगती है। उसके सामने और कोई पद्धति ऐसी न थी कि एक शेर ही मे एक विचार प्रकट हो जाता।

ग़ज़लमें कुछ नाम ऐसे आते है जो प्रतीकात्मक है। ग़ज़लका मतलब समझनेके लिए इन प्रतीकोंको समझना ज़रूरी है। हम इन प्रतीकोंको पुस्तकके अन्तमे समझायेंगे।

मीरकी अन्य कविताएं

मसनवी

मसनवी उर्दूमे फ़ारसीसे आई है। अरबीमे इसका पता नही चलता। यह सम्बद्ध कविता होती है जिसमे छन्द कोई भी हो सकता है किन्तु हर शेरके दोनो मिसरोंमें एक तुक होनी चाहिए। शेरोंकी सख्या भी सीमित नही। हजारो शेरोकी मसनवी भी होती है और दस बीस शेरोकी भी। विषय कोई भी लिया जा सकता है। नीति, धर्म, दर्शन, इतिहास, शृगार, युद्ध—किसी भी विषय पर मसनवी हो सकती है। फ़ारसीमे मसनवीका इतना जोर था कि फिरदौसीका प्रसिद्ध महाकाव्य 'शाहनामा' भी मसनवी ही है।

उर्दूमे मसनवी शुरूसे ही लिखी जाती रही। दक्खिनकी प्राथमिक रचनाओंमें मसनवीका बड़ा भडार है। शायद ही कोई प्रसिद्ध कवि ऐसा हो जिसने मसनवी न लिखी हो। उत्तरी भारतमे भी मसनवियाँ काफ़ी लिखी गईं। फिर भी उर्दूकी मसनवी फ़ारसीके दर्जेको न पहुँच सकी। इसकी वजह यह है कि फ़ारसीकी भाति उर्दूको बादशाहोंका पूरा संरक्षण न मिला। फिर सच्ची बात यह है कि उर्दूमें फ़ारसी जैसे महाकवि भी न थे, और होते भी कैसे ? फ़ारसी हजारों बरस पुरानी भाषा थी और उर्दू बिल्कुल बच्चा।

उर्दूमें यों तो हजारों मसनवियाँ लिखी गईं और कई विषयों पर. लेकिन सबसे मशहूर मीर हसन की 'सहरुलबयान' और पं० दयाशकर नसीमकी 'गुलजारे नसीम' हैं। इन दोनोंमे बादशाहों और शाहजादोके प्रेमकी कहानियाँ हैं।

मीरने भी कई मसनवियाँ लिखी है जिनमे से कुछ आपके सामने हैं। मीरकी मसनवियाँ उनकी काव्यकलाके अनुरूप न हो सकी। इसका कारण यह था कि उर्दूकी अच्छी मसनवियाँ किसी क़िस्सेको लेकर होती

थी और मीर कथाकार न थे। स्वभावतः उनकी लेखनी भाव चित्रणके लिए थी, चरित्र चित्रण या दृश्योके वर्णनके लिए नही। कहानी लिखनेके लिए वर्णनशक्ति चाहिए और यह मीरके लिए उपयुक्त काम नही था। वे अन्तर्मुखी चित्रणके कलाकार थे, वहिर्मुखीके नही। यद्यपि उन्होंने अपनी मसनवियोंमे क़िस्से भी लिखे है फिर भी उनमे स्वाभाविक आकर्षण और चरित्र चित्रणकी क्षमता नही दिखाई देती। हाँ जहाँ उनके वर्णनमे भावनाओंका चित्रण किया है वहाँ उनकी कला चमक उठी है, विचारोमे गहराई और वर्णनमे बेहद ज़ोर आ गया है। ऐसा लगता है कि कोई नदी लहराती जा रही हो। विशेषतः जहाँ उन्होने प्रेमकी भावनाओंका चित्रण किया है वहाँ तो मालूम होता है कि उर्दूके सभी मसनवी लिखनेवाले मीरसे पीछे रह गये हैं।

रुबाई

इस काव्य पद्धतिमें चार मिसरों या दो शेरोंकी पूरी कविता हो जाती है। इसके पहले दूसरे और चौथे मिसरे एक तुकमे होते हैं और तीसरा तुकके लिहाज़से अलग। उर्दूमें सम्बद्ध कविताका यह सबसे छोटा रूप है। एक पूरी बात इन्ही चार मिसरोमें कह दी जाती है। शुरूसे आजतक आमतौर पर रुबाईमे कवियोंने ऊँचे और पवित्र विचार ही रखे हैं इसीलिए अन्य प्रकारकी कविताओंकी अपेक्षा रुबाईमें अधिक गम्भीरता और विचारोंका उत्कर्ष पाया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तकमें मीरकी कुछ रुबाइयाँ भी दी गई है। इनको पढ़कर आप हमारी बातका पूरा आशय समझ लेंगे और शायद इस बातमें हमसे सहमत भी हो जायेंगे कि मीरने इस प्रकारकी कवितामें भी अपना ऊँचा स्थान बनाया है।

२—ग़ज़लोंका संकलन

पहला दीवान

पहुंचा जो आपको[1] तो मैं पहुंचा ख़ुदाके तईं,
मालूम यह हुआ कि बहुत मैं भी दूर था।

* * *

आया तो सही वह कोई दमके लिए लेकिन,
होठोंपे मेरे जब नफ़से-बाज़पसी[2] था।
नाम आज कोई यां नहीं लेता है उन्होंका,
जिन लोगोंके कल मुल्क यह सब ज़ेरेनगीं[3] था।

* * *

खेल लड़कोंका समझते थे मुहब्बतके तईं,
है बड़ा हैफ़[4] हमें अपनी भी नादानीका।

* * *

उसके गये पर ऐसी गयी दिलसे हमनशीं[5],
मालूम भी हुआ न कि ताक़तको क्या हुआ।
बख़शिशने मुझको अब्रे-करमकी[6] किया ख़िजिल[7],
ऐ चश्मे-जोश[8] अश्के-नदामतको[9] क्या हुआ।

* * *

कहा मैंने गुलका है कितना सबात[10] ?
कलीने ये सुनकर तबस्सुम[11] किया।

* * *

---

[1]अपनेको पहचाना [2]आखिरी सांस [3]मातहत, अधीन [4]अफ़सोस [5]दोस्त [6]कृपाकी वर्षा करनेवाला बादल [7]लज्जित [8]जोशीली आँख [9]लज्जाके आंसू [10]ठहराव [11]मुसकरायी।

उल्टी हो गयीं सब तदबीरें कुछ न दवाने काम किया,
देखा इस बीमारी-ए-दिलने आख़िर काम तमाम किया।
अहदे-जवानी[1] रो रो काटा पीरीमें[2] लीं आखें मूंद,
यानी रात बहुत जागे थे, सुबह हुई आराम किया।
नाहक़ हम मजबूरोंपर यह तोहमत है मुख़्तारीकी[3],
चाहते हैं सो आप करें हैं हमको अबस[4] बदनाम किया।
सरज़द[5] हमसे बेअदबी तो वहशतमें[6] भी कम ही हुई,
कोसों उसकी ओर गये पर सजदा[7] हर हर गाम[8] किया।
किसका काबा ? कैसा क़िबला ? कौन हरम है ? क्या अहराम[9] ?
कूचेके उसके बाशिन्दोंने सबको यहींसे सलाम किया।
यांके सफ़ेदो-सियहमें हमको दख़्ल जो है सो इतना है,
रातको रो रो सुबह किया या दिनको ज्यूं त्यूं शाम किया।
साअदे-सीमीं[10] दोनों उसके हाथमें लाकर छोड़ दिये,
भूले उसके क़ौलो-क़समपर, हाय ख़याले-ख़ाम[11] किया।
'मीर'के दीनो-मज़हबको अब पूछते क्या हो ? उसने तो,
क़श्क़ा[12] खींचा, दैरमें[13] बैठा, कबका तर्क[14] इस्लाम किया।

* * *

लगा न दिलको कहीं, क्या सुना नहीं तूने ?
जो कुछ कि 'मीर'का इस आशिकीने हाल किया।

* * *

किस दिलसे तेरा तीरे नज़र पार न गुज़रा,
किस जानको यह मर्गका[15] पैग़ाम न आया।

---

[1]जवानीका ज़माना [2]बुढ़ापा [3]आज़ादी [4]बेकार [5]होना [6]उन्माद [7]सर झुकाना [8]क़दम [9]वह ग़ैरसिला कपड़ा जो हजके समय मुसलमान पहनते हैं [10]गोरी बाँहें [11]ग़लत ख़्याल [12]तिलक [13]मन्दिर [14]छोड़ा [15]मौत।

नै ख़ून ही आंखोंसे बहा, टुक न हुआ दाग़,
अपना तो ये दिल 'मीर' किसू काम न आया।

* * *

टुक 'मीरे'-जिगरसोख़्तः की[1] जल्द ख़बर ले,
क्या यार भरोसा है चराग़े-सहरीका[2]।

* * *

मुंह तका ही करे है जिस तिसका,
हैरती[3] है यह आईना[4] किसका?
शामसे कुछ बुझासा रहता है,
दिल हुआ है चराग़ मुफ़लिसका[5]।
ताब किसको जो हाले-'मीर' सुने,
हाल ही और कुछ है मजलिसका[6]।

* * *

उलझाव पड़ गया जो हमें उसके इश्क़में,
दिलसा अज़ीज़ जानका जंजाल हो गया।

* * *

बेताब जीको देखा, दिलको कबाब देखा,
जीते रहे थे क्यों हम, जो यह अज़ाब[7] देखा।
लेते ही नाम उसका सोतेसे चौंक उठे हो,
है ख़ैर 'मीर' साहब? क्या तुमने ख़्वाब देखा?

* * *

कब तलक धूनी रमाये जोगियोंकीसी रहूं,
बैठे बैठे दरपे तेरे तो मेरा आसन जला।

---

[1]दिल जले [2]सुबहका दिया [3]चकित [4]दर्पण (हृदय) [5]ग़रीब [6]जलसा [7]मुसीबत।

सूखते ही आंसुओंके, नूर आंखोंका गया,
बुझ ही जाते हैं दिये जिस वक़्त सब रोग़न[1] जला।
आगसी इक दिलमें सुलगे है, कभी भड़की तो 'मीर',
देगी मेरी हड्डियोंका ढेर ज्यूं ईंधन जला।

* * *

छातीसे एक बार लगाता जो वह तो 'मीर'
बरसों यह ज़ख़्म सीनेका हमको न सालता।

* * *

गुल, शर्मसे बह जायगा गुलशनमें होकर आबसा,
बुरक़ेसे गर निकला कहीं चेहरा तेरा मेहताबसा।
थी इश्क़की वह इब्तदा[2] जो मौजसी उठ्ठी कभू,
अब दीदएतरको[3] जो तुम देखो तो है गिर्दाबसा[4]।

* * *

मर रहते जो गुल[5] बिन तो सारा ये ख़लल जाता,
निकला ही न जी वरना कांटासा निकल जाता।
मैं गिरिय-ए-ख़ूनीको[6] रोके ही रहा वरना,
इकदममें ज़मानेका यां रंग बदल जाता।

* * *

मर चले बेक़रार होकर हम,
अब तो तेरे तईं क़रार हुआ।

* * *

वह जो ख़ंजर-बकफ़[7] नज़र आया,
'मीर' सौ जानसे निसार हुआ।

* * *

---

[1]तेल [2]शुरुआत [3]नम आंख [4]भंवर [5]फूल (प्रियतम)
[6]खूनके आंसू रोना [7]हाथमें ख़ंजर लिये।

इतना न तुझसे मिलते ने दिलको खोके रोते,
जैसा किया था हमने वैसा ही यार पाया।

* * *

पूजेसे और पत्थर होते हैं यह सनम तो,
अब किस तरह अताअत[1] उनकी करूं ख़ुदाया[2]।
आख़िरको मर गये हैं उनकी ही जुस्तजूमें,
जीके तई भी खोया लेकिन न उनको पाया।

* * *

पूछो तो 'मीर'से क्या कोई नज़र पड़ा है,
चेहरा उतर रहा है कुछ आज उस जवांका।

* * *

हमारे आगे तेरा जब किसूने नाम लिया,
दिले-सितमज़दाको[3] हमने थाम थाम लिया।
मेरे सलीक़ेसे मेरी निभी मुहब्बतमें,
तमाम उम्र मैं नाकामियोंसे काम लिया।

* * *

बूए-ख़ूंसे[4] जो रुका जाता है ऐ बादेबहार!
हो गया है चाक[5] दिल शायद किसी दिलगीरका।
क्योंकि नक़्क़ाशेअज़ल[6]ने नक़्श अबरूक। किया,
काम है इक तेरे मुंहपर खींचना शमशीरका।
किस तरहसे मानिए यारो, कि यह आशिक़ नहीं,
रंग उड़ा जाता है टुक चेहरा तो देखो 'मीर'का।

* * *

मौजें करे है बहरे-जहांमें अभी तो तू,
जानेगा बादे-मर्ग[7] कि आलम[8] हुबाब[9] था।

* * *

---

[1]पूजा [2]ऐ ख़ुदा [3]मुसीबतका मारा [4]ख़ूनकी बू [5]टुकडे [6]सबसे पहला कलाकार (भगवान) [7]मरनेके बाद [8]संसार, [9]बुलबुला।

सुबहतक शमअ सरको धुनती रही,
क्या पतिंगेने इल्तमास[1] किया?

* * *

क्या कहूं कैसा सितम ग़फलतमें मुझसे हो गया,
काफ़िला जाता रहा मैं सुबह होते सो गया।
बेकसी मुद्दत तलक बरसा की अपनी गोरपर[2]
जो हमारी ख़ाकपरसे होके गुज़रा रो गया।
मुद्दआ[3] जो है सो वह पाया नहीं जाता कहीं,
एक आलम जुस्तजूमें जीको अपने खो गया।

* * *

किसको नहीं है शौक़ तेरा, पर न इस क़दर,
मैं तो इसी ख़यालमें बीमार हो गया।
क्या कहिए, आह! इश्कमें ख़ूबी नसीबकी,
दिलदार अपना था सो दिल-आज़ार[4] हो गया।

* * *

निकली थी तेग़ बेदरेग़ उसकी,
मैं ही इक इम्तहानसे निकला।
नामुरादी[5]की रस्म 'मीर'से है,
तौर यह इस जवानसे निकला।

* * *

हम ख़स्ता-दिल[6] हैं तुझसे भी नाज़ुक मिज़ाजतर,
त्योरी चढ़ायी तूने कि यां दम निकल गया।
हर ज़र्रा ख़ाक तेरी गलीकी है बेक़रार,
यां कौनसा सितमज़दा[7] माटीमें रल गया।

---

[1]निवेदन [2]कब्र [3]लक्ष्य [4]निर्दयी [5]असफलता, दुर्भाग्य [6]निराश लोग [7]पीड़ित।

अरक़-फ़शानीसे[1] उस ज़ुल्फ़की हिरासां[2] हूं,
भला नहीं है बहुत टूटना भी तारोंका।
निगाहे मस्तके मारे तेरे ख़राब हैं शोख़,
न ठौर है न ठिकाना है होशियारोंका।

* * *

तलवार मारना तो तुम्हें खेल है वले[3],
जाता रहे न जान किसी बेगुनाहका।
ज़ालिम! ज़मींसे लोटता दामन उठाके चल,
होगा कमींमें[4] हाथ किसी दाद-ख़्वाहका[5]।
बीमार तू न होवे, जिये जबतलक कि 'मीर',
सोने न देगा शोर तेरी आह आहका।

* * *

सब गये होश-ओ-सब्र-ओ-ताब-ओ-तवां[6]
लेकिन ऐ दाग़ दिलसे तू न गया।

* * *

गुलो-बुलबुल बहारमें देखा,
एक तुझको हज़ारमें देखा।
जल गया दिल, सफ़ेद हैं आंखें,
यह तो कुछ इंतज़ारमें देखा।

* * *

कभू जायगी जो उधर सबा[7] तो यह कहियो उससे कि बेवफ़ा,
मगर[8] एक मीरे शिकस्ता[9] पा तेरे बाग़े ताज़ामें ख़ार था।

* * *

[1]बूंद गिरना [2]परेशान [3]लेकिन [4]ताक [5]फरयादी [6]ताक़त [7]सुबहकी हवा [8]शायद [9]लाचार।

मेहकी[1] तुझसे तवक़्क़ो[2] थी, सितमगर निकला,
मोम समझे थे तेरे दिलको सो पत्थर निकला।
हम रहरवाने[3] राहे फ़ना हैं बरंगे-उम्र[4],
जावेंगे ऐसे, खोज भी पाया न जायगा।
अब देख ले कि सीना भी ताज़ा हुआ है चाक[5],
फिर हमसे अपना हाल दिखाया न जायगा।
याद उसकी इतनी ख़ूब[6] नहीं 'मीर' बाज़ आ,
नादान, फिर वह जीसे भुलाया न जायगा।

* * *

फिर नौहागरी[7] कहां जहांमे,
मातमज़दा 'मीर' अगर न होगा।

* * *

दिलकी वीरानीका क्या मज़कूर[8] है,
यह नगर सौ मरतबा लूटा गया।

* * *

आलममें कोई दिलका तलबगार न पाया,
इस जिंसका यां हमने ख़रीदार न पाया।

* * *

चश्मे-ख़ूंबस्तासे[9] कल रात लहू फिर टपका,
हमने जाना था कि बस अब तो यह नासूर गया।

* * *

दिलसे आंखोंमें लहू आता है, शायद रातको
कशमकशमें बेक़रारीकी यह फोड़ा छिल गया।

* * *

---

[1]कृपा [2]आशा [3]यात्री [4]उम्रकी तरह [5]फटा [6]अच्छी [7]रोना [8]जिक्र [9]खूनसे चिपकी आँख।

सस्त काफ़िर था जिनने पहले 'मीर'
मज़हबे इश्क़ अख़्तियार किया।

* * *

वे दिन गये कि आंखे दरियासी बहतियाँ थीं,
सूखा पड़ा है अब तो मुद्दतसे यह दोआबा।

* * *

दुख अब फ़िराक़का हमसे सहा नहीं जाता,
फिर इसपे जुल्म यह है कुछ कहा नहीं जाता।
नहीं गुज़रती घड़ी कोई मुझ ख़राबपे, आह!
कि जिसमें ग़मसे तेरे जी ढहा नहीं जाता।

* * *

जुनूंमे अबकी मुझे अपने दिलका ग़म है, पे हैफ़[1],
ख़बर ली जब कि न जामेमें एक तार रहा।
सितममे ग़ममे सरंजाम[2] उसका क्या कहिए,
हज़ारों हसरतें थीं तिसपे जीको मार रहा।
बहा तो ख़ूं हुआ, आंखोंकी राह बह निकला,
रहा जो सीनए सोज़ांमें[3] दाग़दार रहा।
गलीमें उसकी गया, सो गया, न बोला फिर,
मैं 'मीर' 'मीर'कर उसको बहुत पुकार रहा।

* * *

जीतेजी कूचए-दिलदारसे जाया न गया,
उसकी दीवारका सरसे मेरे साया न गया।
वह तो कल देरतलक देखता ईधरको रहा,
हमसे ही हालेतबाह अपना दिखाया न गया।

---

[1]अफ़सोस [2]नतीजा [3]जलती छाती।

ज़ेरे शमशीरे सितम[1] 'मीर' तड़पना कैसा,
सर भी तसलीमे मुहब्बतमें[2] उठाया न गया।

* * *

दिलके तईं आतशे हिजरांसे[3] बचाया न गया,
घर जला सामने और हमसे बुझाया न गया।
दिल जो दीदारके क़ातिलका बहुत भूका था,
उस सितम कुश्तासे[4] इक ज़ख़्म भी खाया न गया।
शहरे दिल आह अजब जाय[5] थी पर उसके गये,
ऐसा उजड़ा कि किसी तरह बसाया न गया।

* * *

गुलमें उसकीसी जो बू आयी तो आया न गया,
हमको बिन दोशे-हवा[6] बाग़से लाया न गया।
गुलने हरचंद कहा बागमें रह, पर उस बिन,
जो जो उचटा तो किसू तरह लगाया न गया।
'मीर' मत उज्र[7] गरेबांके फटे रहनेका कर,
ज़ख़्मे दिल, चाकेजिगर[8] था कि सिलाया न गया।

* * *

हुआ रोनेसे राज़े दोस्ती फ़ाश,
हमारा गिरिया[9] था दुश्मन हमारा।
किया था रेख़्ता[10] परदा सुख़नका,[11]
सो ठहरा है यही अब फ़न[12] हमारा।

* * *

---

[1]ज़ुल्मकी तलवारके नीचे [2]प्रेमकी स्वीकृति [3]विरहाग्नि [4]पीड़ित [5]जगह [6]हवाका कंधा [7]बहाना [8]फटा कलेजा [9]रोना [10]उर्दू [11]सूक्ति [12]कला।

राहे-दूरे[1]-इश्क़से रोता है क्या,
आगे आगे देखिए होता है क्या।
क़ाफ़िलेमें सुबहके इक शोर है,
यानी ग़ाफ़िल हम चले, सोता है क्या।
यह निशाने इश्क़ है जाते नहीं,
दाग़ छातीके अबस[2] धोता है क्या।
ग़ैरते यूसुफ़[3] है यह वक़्ते अज़ीज़,
'मीर' इसको रायगां[4] खोता है क्या।

* * *

आंखोंने राज़दारी[5] मुहब्बतकी ख़ूब की,
आंसू जो आते आते रहे, तो लहू बहा।

* * *

जिस दम कि तेग़ेइश्क़ खिंची, बुलहविस[6] कहां,
सुन लीजिओ कि हमने ही सीनासिपर[7] किया।

* * *

कुछ न देखा फिर बजुज़[8] इक शोलएपुर पेचोताब[9]
शमअ तक हमने तो देखा था कि परवाना गया।

* * *

वस्लोहिजरां[10] ये जो दो मंज़िल है राहे इश्क़की,
दिल ग़रीब इनमें ख़ुदा जाने कहां मारा गया।

* * *

---

[1]लम्बा रास्ता [2]बेकार [3]यूसुफ़से भी प्यारा [4]बेकार [5]भेद छिपाना [6]वासना प्रिय [7]सीनाको सामने किया [8]सिवा [9]चक्करदार लौ [10]संयोग वियोग।

अश्क आंखोंमें कब नहीं आता ?
लहू आता है जब नहीं आता।
होश जाता नहीं रहा लेकिन,
जब वह आता है, तब नहीं आता।
सब्र था एक मूनिसेहिजरां[1],
सो वह मुद्दतसे अब नहीं आता।
जीमें क्या क्या है अपने ऐ हमदम[2],
पर सुख़न[3] ताबलब[4] नहीं आता।
दूर बैठा गुबारे 'मीर' उससे,
इश्क़ बिन यह अदब नहीं आता।

* * *

ग़ाफ़िल न रहियो हरगिज, नादान, दाग़ेदिलसे,
भड़केगा जब यह शोला, तब घर जला रहेगा।

* * *

मैंने तो सर दिया, पे ऐ जल्लाद !
किसकी गर्दनपे यह अज़ाब[5] पड़ा।

* * *

रहे-तलब[6]में गिरे होते सरके बल हम भी,
शिकस्तापाई[7]ने अपनी हमें संभाल लिया।

* * *

यह हसरत है मरूं इसमें लिये लबरेज़[8] पैमाना,
महकता हो निपट जो फूलसी दारूसे मैख़ाना।

---

[1]विरहका संगी [2]साथी [3]बात [4]होंठों तक [5]पाप
[6]वासनाका मार्ग [7]पैरका टूटना [8]छलकता।

मेरा सर नज़अ[1]में ज़ानू पे रखकर यों लगा कहने,
कि ऐ बीमार मेरे! तुझपे जल्द आसां हो मर जाना।

* * *

दिल कि इक क़तरा ख़ूं नहीं है बेश,
एक आलमके सर बला लाया।
लबपे जिस बार[2]ने गरानी[3] की,
उसको यह नातवां[4] उठा लाया।
दिल मुझे उस गलीमें ले जाकर,
और भी ख़ाकमें मिला लाया।
अब तो जाते हैं बुतकदे[5]से 'मीर',
फिर मिलेंगे अगर ख़ुदा लाया।

* * *

लहू लगता है टपकने जो पलक मारूं हूं,
अब तो यह रंग है इस दीदएअश्कअफ़्शां[6]का।
उठ गया एक तो इक मरनेको आ बैठे हैं,
क़ायदा है यही मुद्दतसे हमारे हांका।
चारए[7]इश्क़ बजुज़[8] मर्ग[9] नहीं है ऐ मीर!
इस मरजमें है अबस[10] फ़िक्र तुम्हें दरमां[11]का।

* * *

ज्यूं बर्गहाए लाला[12] परेशान[13] हो गया,
मज़कूर[14] क्या है अब जिगरे लख़्त लख़्त[15]का,
दिल्लीमें आज भीख भी मिलती नहीं उन्हें,
था कल तलक दिमाग़ जिन्हें ताजोतख़्तका।

* * *

---

[1]मरण पीड़ा [2]जंघा [3]बोझ [4]भारीपन [5]कमज़ोर
[6]मूर्तिस्थल [7]रोनेवाली आँख [8]इलाज [9]सिवा [10]मौत [11]बेकार [12]इलाज
[13]गुल्लालाकी पंखुड़ियाँ [14]बिखरना [15]ज़िक्र [16]टुकड़े टुकड़े।

दिलहीके ग़ममे गुज़री अपनी तो उम्र सारी,
बीमारे आशिक़ी यह किस दिन भला रहेगा।
दानिस्ता[1] है तग़ाफ़ुल,[2] ग़म कहना उससे हासिल ?
तुम दर्देदिल कहोगे, वह सर झुका रहेगा।

* * *

भला होगा कुछ इक अहवाल इससे या बुरा होगा,
मआल[3] अपना तेरे ग़ममें ख़ुदा जाने कि क्या होगा।

* * *

ऐसी है 'मीर'की भी मुद्दतसे रोनी सूरत,
चेहरेपे उसके किस दिन आंसू रवां न पाया।

* * *

यह ऐशगह[4] नहीं है, यां रंग और कुछ है,
हर गुल है इस चमनमे साग़र[5] भरा लहूका।

* * *

बैठकर 'मीर' जहां ख़ूब न रोया होवे,
ऐसी कूचेमें नहीं है तेरे जानां इकजा[6]।

* * *

सराहा उनने तेरा हाथ जिनने देखा ज़ख़्म,
शहीद मैं हूं तेरी तेग़के लगानेका।

* * *

कब तलक यूं सितम उठाइएगा,
एक दिन यूंही जीसे जाइएगा।

---

[1]जानबूझकर [2]उपेक्षा [3]नतीजा [4]आरामकी जगह
[5]प्याला [6]एक जगह।

शिरकते[1] शेख़ो बरहमनसे 'मीर',
काबाओ दैर[2]से भी जाइएगा।

* * *

गुज़रे है लहू वां सरेहरख़ार[3]से अबतक,
जिस दश्त[4]मे फूटा है मेरे छंका छाला।

* * *

लगती नहीं पलकसे पलक इंतज़ारमें,
आंखे अगर यही है तो भर नींद सो चुका।

* * *

कूचेमे उसके जाकर बनता नहीं फिर आना,
ख़ून एक दिन गिरेगा उस ख़ाकपर हमारा।
इस कारवां-सरामें क्या 'मीर' बार खोलें,
यां कूच लग रहा है शामोसहर हमारा।

* * *

ग़म रहा जब तक कि दममें दम रहा,
दमके जानेका निहायत ग़म रहा।
दिल न पहुंचा गोशा-ए-दामां[5] तलक,
क़तरएख़ूं[6] था, मिज़ा[7]पर जम रहा।
मेरे रोनेकी हक़ीक़त जिसमें थी,
एक मुद्दत तक वह काग़ज़ नम रहा।
सुबहे पीरी[8] शाम होने आई 'मीर',
तू न चेता, यां बहुत दिन कम रहा।

* * *

---

[1]साथ [2]मन्दिर [3]हर कांटेकी नोक [4]जंगल [5]अंचलके छोर [6]ख़ूनकी बूंद, [7]पलक बरौनी [8]बुढापा।

किसको मेरे हालसे थी आगही[1] ?
नाला-ए-शब[2] सबको ख़बर कर गया।

* * *

दामानेकोह[3]में मैं जो ढाढ़ मार रोया,
इक अब्र[4] वांसे उठकर बेअख़्तियार रोया।
हर गुल ज़मीं[5] यहांकी रोनेकी ही जगह थी,
मानिंदे अब्र हर जा[6] मैं ज़ार ज़ार रोया।

* * *

इक उम्र मुझे ख़ाकमें मिलते हुए गुज़री,
कूचेमे तेरे आनके लोहूमे नहाया।
ऐसे बुते बेमेह्र[7]से मिलता है कोई भी,
दिल 'मीर'को भारी था जो पत्थरसे लगाया।

* * *

सरसरी तुम जहानसे गुज़रे,
वरना हर जा[8] जहानेदीगर[9] था।
दिलकी कुछ क़द्र करते रहियो तुम,
यह हमारा भी नाज़परवर[10] था।
बारे[11] सजदा[12] अदा किया तहेतेग़[13],
कबसे यह बोझ मेरे सरपर था।
बेज़री[14]का न कर गिला[15] ग़ाफ़िल,
रह तसल्ली कि यूं मुक़द्दर था।

---

[1]जानकारी [2]रातका रोना [3]पर्वतके अंचलमे [4]बादल [5]चप्पा-चप्पा [6]जगह [7]कठोर हृदय [8]जगह [9]दूसरी दुनिया [10]नाज़ोंका पाला [11]बोझ [12]सर झुकाना [13]तलवारके तले [14]गरीबी [15]शिकायत।

इतने मुनइम[1] जहानमें गुज़रे,
वक़्ते-रहलत[2] के किस कने ज़र[3] था?

* * *

मुश्किल बहुत है हमसा फिर कोई हाथ आना,
यूं मारना तो प्यारे आसान है हमारा।

* * *

रात हैरान हूं कुछ चुप ही मुझे लग गयी 'मीर',
दर्दे पिनहां[4] थे बहुत पर लबेइज़हार[5] न था।

* * *

बेताक़ती सुकूं नहीं रखती है हमनशीं[6],
रोनेने हर घड़ीके तो मुझको डुबो दिया।
पूछा जो मैंने दर्दे मुहब्बतसे 'मीर'को,
रख हाथ उनने दिलपे टुक इक अपने रो दिया।

* * *

नाला[7] हमारा हर शब[8] गुज़रे है आसमांसे,
फ़रयादपर हमारी किस दिन तू कान देगा?

* * *

जहांको फ़ितनेसे ख़ाली कभू नहीं पाया,
हमारे वक़्तमें तू आफ़ते ज़माना हुआ।

* * *

मत पूछ किस तरहसे कटी रात हिज्रकी,
हर नाला मेरी जानको तेग़ेकशीदा[9] था।

* * *

---

[1]धनी [2]मौत [3]धन [4]छिपे दर्द [5]कहनेवाला होंठ [6]साथी [7]रोना [8]रात [9]खिंची तलवार।

जी तो ऐसे कई सदक़े[1] किये तुझपर लेकिन,
हैफ़[2] यह है कि तनिक तू भी पशेमां[3] न हुआ।
कौनसी रात ज़मानेमें कटी जिसमें 'मीर',
सीनए-चाक[4]से मैं दस्तो-गरेबां[5] न हुआ।

* * *

आयी अगर बहार तो अब हमको क्या सबा[6] ?
हमसे तो आशियां[7] भी गया और चमन गया।
सरसब्ज़ मुल्के हिन्दमें ऐसा हुआ कि 'मीर',
यह रेख़्ता लिखा हुआ तेरा दकन गया।

* * *

रोती है शमअ इतना हरशब कि कुछ न पूछो,
मैं सोज़ेदिल[8]को अपने मजलिसमें क्यों कहा था।

* * *

कैसा चमन ? कि हमसे असीरोंको मना है,
चाके-क़फ़स[9]से बाग़की दीवार देखना।
ऐ हमसफ़र[10] न आबले[11]को पहुंचे चश्मेतर[12],
लागा है मेरे पांवमें आ ख़ार[13] देखना।
गर ज़मज़मा[14] यही है कोई दिन तो हमसफ़ीर,
इस फ़स्ल हीमें हमको गिरफ़्तार देखना।

* * *

---

[1]न्यौछावर [2]अफ़सोस [3]लज्जित [4]फटा सीना [5]खींच-तान करना [6]बसन्ती हवा [7]घोंसला [8]दिलके दर्द [9]पिंजड़ेका छेद [10]यात्राका साथी [11]छाला [12]रोनेवाली आँख [13]काँटा [14]गाना।

जो इस शोरसे 'मीर' रोता रहेगा,
तो हमसाया[1] काहेको सोता रहेगा।
मैं वह रोनेवाला जहांसे चला हूं,
जिसे अब्र[2] हर साल रोता रहेगा।
बस ऐ गिरिया[3] आंखें तेरे क्या नहीं हैं,
तू कबतक जहांको डुबोता रहेगा।
बस ऐ 'मीर' मिज़गां[4]से पोंछ आंसुओंको,
तू कबतक यह मोती पिरोता रहेगा।

* * *

ख़राबी दिलकी इस हद है कि यह समझा नहीं जाता,
कि आबादी भी यां थी या कि वीराना था मुद्दतका।

* * *

गयी तसबीह[5] उसकी नज़अ[6]में कब 'मीर'के दिलसे,
उसीके नामकी सुमरन थी जब मनका ढलकता था।

* * *

दिलकी शिकस्तगी[7]ने डराये रखा हमें,
वां चींजबींपे[8] आयी कि यां रंग ज़र्द था।
आशिक़ हैं हमतो 'मीर'के भी ज़ब्ते इश्क़के,
दिल जल गया था और नफ़स[9] लब[10]पे सर्द था।

* * *

तेरे कूचेके रहनेवालोंने,
यहींसे काबेको सलाम किया।

* * *

---

[1]पड़ोसी [2]बादल [3]रोना [4]पलक [5]माला जपना [6]अन्त समय [7]टूटने [8]माथेपर बल [9]सांस [10]होंठ।

दैरो-हरम[1]में क्योंकि क़दम रख सकेगा 'मीर',
ईधर तो उससे बुत फिरे, ऊधर ख़ुदा फिरे।

* * *

क्या 'मीर' है यही जो तेरे दरपे था खड़ा,
नमनाक चश्मोख़ुश्क[2] लबो रंग ज़र्दसा।

* * *

किसूकी बातने आगे मेरे न पाया रंग,
दिलोंमें नक़्श[3] है मेरी सुख़नतराज़ी[4]का।

* * *

लगनेके लिए दिलके छिड़का था नमक मैंने,
सो छातीके ज़ख़्मोंने कर देर, मज़ा रक्खा।

* * *

सब गये होशो सब्रो ताबो तवां[5],
दिलसे इक दाग़ ही जुदा न हुआ।
ज़ुल्मो जौरो जफ़ा, सितम बेदाद,
इश्क़में तेरे हमपे क्या न हुआ।
हम तो नाकाम[6] ही जहांमें रहे,
यां कभू अपना मुद्दआ[7] न हुआ।

* * *

आहे-सहर[8]ने सोज़शे-दिल[9]को मिटा दिया,
इस बाव[10]ने हमें तो दियासा बुझा दिया।
पोशीदा[11] राज़े इश्क़ चला जाय था सो आज,
बेताक़तीने दिलकी वह परदा उठा दिया।

---

[1]मन्दिर और काबा [2]भीगी आँख [3]अंकित होना [4]कविता [5]ताकत [6]असफल [7]उद्देश्य (पूरा) [8]सुबहकी आह [9]दिल जलना [10]हवा [11]छिपा।

आवारगाने-इश्क़[1]का पूछा जो मैं निशां,
मुश्ते-ग़ुबार[2] लेके सबा[3]ने उड़ा दिया।

* * *

किसके लगा है ताज़ा तीरेनिगाह उसका,
इक आह मेरे दिलके होती है पार हर शब[4]।

* * *

अब वे नहीं कि आंखे थीं पुरआब[5] रोज़ोशब[6],
टपका करे है पलकोंसे ख़ूंनाब[7] रोज़ोशब।

* * *

रुकनेसे दिलके आज बचा हूं तो अब जिया,
छाती हीमें रहा है मेरा दम तमाम शब।

* * *

किसकी मस्जिद ? कैसे बुतख़ाने[8] ? कहांके शेख़ोशाब[9],
एक गर्दिशमे तेरी चश्मेसियह[10]के सब ख़राब।
मूद रखना चश्मका[11] हस्ती[12]मे ऐनेदीद[13] है,
कुछ नहीं आता नज़र जब आंख खोले है हुबाब[14]।
कुछ नहीं, बहरे जहां[15] की मौज पर[16] मत भूल 'मीर',
दूरसे दरिया नज़र आता है लेकिन है सराब[17]।

* * *

सब हुए नादिम[18] पये तदबीर[19] हो, जानां[20] समेत,
तीर तो निकला मेरे सीने से, लेकिन जां समेत।

---

[1]प्रेमके दीवानो [2]एकमुट्ठी धूल [3]सुबहकी हवा [4]रात [5]आंसूभरी [6]रातदिन [7]खूनके आंसू [8]मन्दिर [9]कर्मकांडी पण्डित [10]काली आँख [11]आँख [12]जीवन [13]असली देखना [14]बुलबुला [15]संसाररूपी नदी [16]लहर [17]मृग मरीचिका [18]पछताये [19]कोशिश करके [20]प्रियतम।

उठ गया परदा नसीहतगर[1]के लग पड़ने[2]से 'मीर',
फाड़ डाला मैं गरेबां[3] रातको दामां[4] समेत।

* * *

पलकोंपे थे पार-ए-जिगर[5] रात,
हम आंखोंमें ले गये बसर रात।
क्या दिन थे कि ख़ून था जिगरमें,
रो उठते थे बैठ दो पहर रात।
क्या सोज़ेजिगर[6] कहूं मैं हमदम,
आया जो सुख़न[7] ज़बानपर रात।
सुहबत यह रही कि शमअ रोई,
ले शामसे ता-दमे-सहर[8] रात।

* * *

मुझसा ही हो मजनूं भी, यह कब माने है आक़िल,
हर सर नहीं ऐ 'मीर' सज़ावारे[9]-मुहब्बत।

* * *

जीमें है यादे-रुख़ो-ज़ुल्फ़े सियहफ़ाम[10] बहुत,
रोना आता है मुझे हर सहरो-शाम[11] बहुत।
दस्तेसय्याद[12] तलक भी न मैं पहुंचा जीता,
बेक़रारीने लिया मुझको तहे-दाम[13] बहुत।
फिर न आये जो हुए ख़ाकमें जा आसूदा[14],
ग़ालिबन[15] ज़ेरेज़मीं[16] 'मीर' है आराम बहुत।

* * *

---

[1]उपदेशक [2]उलझने [3]कपड़ेका ऊपरी भाग [4]निचला छोर [5]कलेजेके टुकडे [6]दिलका जलना [7]बात [8]सुबहतक [9]योग्य [10]मुखड़े और काले बालोंकी याद [11]सुबहशाम [12]शिकारीके हाथ [13]जालके नीचे [14]निवाससे सन्तुष्ट [15]शायद [16]ज़मीनके नीचे।

गो कि आतशज़बां[1] थे आगे 'मीर',
अबकी कहिए, गयी वह तबकी बात।

* * *

आये हैं 'मीर' मुंहको बनाये ख़फ़ासे आज,
शायद बिगड़ गयी है कुछ उस बेवफ़ासे आज।
जीनेमें अख़्तियार नहीं, वरना हमनशीं[2],
हम चाहते हैं मौत तो अपनी ख़ुदासे आज।
साक़ी टुक एक मौसिमेगुल[3]की तरफ़ भी देख,
टपका पड़े है रंग, चमनमे हवासे आज।
था जीमें, उससे मिलिए तो क्या-क्या न कहिए 'मीर',
पर कुछ कहा गया न ग़मेदिल[4] हया[5]से आज।

* * *

जी सदा इन अब्रुओं[6]हीमें रहा,
की बसर हम उम्र तलवारोंके बीच।
चश्म[7] हो, तो आईनाख़ाना है दहर[8],
मुंह नज़र आता है दीवारोंके बीच।
हैं अनासिर[9] की यह सूरतबाज़ियां[10],
शोब्दे[11] क्या-क्या है इन चारोंके बीच।
यारो मत उसका फ़रेबे-मह्र[12] खाओ,
'मीर' भी थे उसहीके यारोंके बीच।

* * *

चश्मेबद्दूर[13] कि कुछ रंग है अब गिरियापर[14],
लूल झमके है पड़ा दीदए-गिरियांके[15] बीच।

---

[1]बहुत कहनेवाले [2]साथी [3]बहार [4]दिलका दर्द [5]लज्जा [6]भौंवों [7]आंख [8]संसार [9]तत्वों [10]शक्लें दिखाना [11]जादू [12]कृपाका धोखा [13]नज़र न लगे' [14]रोना [15]रोनेवाली आंख।

हाल गुलज़ारे[1] ज़मानाका है जैसे कि शफ़क़[2],
रंग कुछ और ही हो जायगा इक आनके बीच।

* * *

ज़िंदगी किसके भरोसेपे मुहब्बतमें करूं,
इक दिले-ग़मज़दा[3] है सो भी है आफ़ात[4]के बीच।

* * *

होने लगा गुदाज़े-ग़मे-यार[5] बेतरह,
रहने लगा है दिलको अब आज़ार[6] बेतरह।
लोहूमें शोरबोर है दामानो-जेब[7] 'मीर',
बिफरा है आज दीदए-ख़ूंबार[8] बेतरह।

* * *

सर उठाते ही हो गये पामाल[9],
सबज़-ए-नौदमीदा[10]के मानिंद[11]।

* * *

बहुत है हाथ ही तेरे, न कर क़फ़स[12]की फ़िक्र,
मेरा तो काम इन्हींमें तमाम है, सय्याद[13]!
चमनमें मैं नहीं ऐसा फँसा कि यों छूटूं,
मुझे तो हर रगे-गुल[14] तारे-दाम[15] है, सय्याद।
यही, गुलोंको तनिक देखूं इतनी मोहलत हो,
चमनमें और तो क्या मुझको काम है, सय्याद!

* * *

---

[1]बाग़ [2]शामकी लाली [3]दुखी हृदय [4]मुसीबतों [5]प्रेममें घुलना [6]दुख, रोग [7]वस्त्र [8]खून बरसानेवाली आँख [9]कुचला [10]नई घास [11]तरह [12]पिंजड़ा [13]शिकारी [14]फूलकी नस [15]जालका डोरा।

मेरे संगे मज़ारपर फ़रहाद,
रखके तेशा[1] कहे है या उस्ताद।
हमको मरना ये है कि कब होवें,
अपनी क़ैदे हयातसे आज़ाद।
फ़िक्रे-तामीर[2]में न रह, मुनइम[3]!
ज़िंदगानीकी कुछ भी है बुनियाद?
ख़ाक भी सरपे डालनेको नहीं,
किस ख़राबे[4]मे हम हुए आबाद।
सुनते हो टुक सुनो, कि फिर मुझ बाद--
न सुनोगे यह नाल-ओ-फ़रियाद।

* * *

क्या जाने किसके तईं लबे-ख़ंदा[5] कहे है ख़ल्क़[6],
मैंने जो आंखें खोलके देखीं सो चश्मेतर[7]।
ऐ सैल[8] टुक संभलके क़दम बादिये[9]में रख,
हर सिम्त[10]को है तिश्ना लबी[11]का मेरी ख़तर।
करता है कौन मना कि सज अपनी तू न देख,
लेकिन कभू तो 'मीर'के कर हालपर नज़र।

* * *

ग़ैरोंसे वे इशारे हमसे छिपा-छिपाकर,
फिर देखना इधरको आंखें मिला-मिलाकर।
एक लुत्फ़की निगह भी हमने न जानी उससे,
रक्खा हमें तो उनने आंखें दिखा-दिखाकर।

---

[1]कुदाल [2]भवन निर्माणकी चिन्ता [3]धनी [4]उजाड़ [5]हँसते होंठ
[6]दुनिया [7]भीगी आँखें [8]बाढ़ [9]जंगल [10]दिशा [11]प्यास।

ज्यूं शमए-सुबहगाही[1] यक बार बुझ गये हम,
उस शोला-खूं[2]ने मारा हमको जला-जलाकर।
मैं 'मीर' मना तुझको करता न था हमेशा?
खोई न जान तूने दिलको लगा-लगाकर?

* * *

किस ढबसे राहे इश्क़ चलूं यह है डर मुझे,
फूटें कहीं न आबले[3], टूटें कहीं न खार[4]।
वसअत[5] जहांकी छोड़ जो आराम चाहे 'मीर',
आसूदगी[6] रखे है बहुत गोश-ए-मज़ार'।

* * *

सफ़र हस्ती[7]का मत कर सरसरी ज्यूं बाद[8] ए रहरौ[9],
यह सब ख़ाक आदमी थे, हर क़दमपर टुक ताम्मुल[10] कर।
न वादा तेरे आनेका, न कुछ उम्मेद तालअ[11]से,
दिले बेताबको किस मुंहसे कहिए, टुक तहम्मुल[12] कर।
गुदाज़े-आशिक़ी[13]का 'मीर'के, शब[14] ज़िक्र आया था,
जो देखा शमए-मजलिस[15]को तो पानी हो गयी घुलकर।

* * *

कर रहम टुक कबतक सितम मुझपर जफ़ाकार इस क़दर,
एक सीना, ख़ंजर सैकड़ों; इक जान, आज़ार[16] इसक़दर,
मंज़िल पहुंचना एक तरफ़, नै सब्र है नै है सुकूं,
यकसर[17] क़दममें आबले[18], फिर राह पुरख़ार[19] इस क़दर।

* * *

---

[1]सुबहकी मोमबत्ती [2]आग भभूका [3]छाले [4]कांटे [5]फैलाव सन्तोष [6]क़ब्रका कोना [7]जीवन [8]हवा [9]राहगीर [10]ठिठकना [11]भाग्य [12]सब्र [13]प्रेममें घुलना [14]रात [15]बैठककी मोमबत्ती [16]रोग [17]नितांत [18]छाले [19]कांटेदार।

क़यामत[1] था समां[2] उस ख़श्मगीं[3] पर,
कि तलवारें चलीं अब्रू[4]की चीं[5]पर।
हुआ है हाथ गुलदस्ता हमारा,
कि दाग़े ख़ूं बहुत है आस्तीं[6]पर।
कभू जो आंखसे आंसू है चलते,
तो फिर जाता है पानी सब ज़मींपर।
क़दम दश्ते-मुहब्बत[7]में न रख 'मीर',
कि सर जाता है गामे-अव्वलींपर[8]।

* * *

दिल, दिमाग़ो जिगर यह सब एक बार,
काम आये[9] फ़िराक़[10]में ऐ यार।
सैर कर दश्ते-इश्क़[11] का, गुलशन[12]!
गुंचे[13] हो हो रहे हैं सौ सौ ख़ार[14]।
रोज़े-महशर[15] है रात हिजरां[16]की,
ऐसी हम ज़िंदगीसे हैं बेज़ार।
'मीर' साहब! ज़माना नाज़ुक है,
दोनों हाथोंसे थामिये दस्तार[17]।
यही दरख़्वास्त पासे-दिल[18] की है,
नहीं रोज़ा नमाज़ कुछ दरकार।
जीमें आवे सो कीजियो, प्यारे!
एक होना न दरपये-आज़ार[19]।

* * *

---

[1]प्रलय [2]दृश्य [3]क्रोधी [4]भौ [5]बल [6]प्रेमका जंगल [7]पहला कदम [8]मारे गये [9]विरह [10]प्रेमका जगल [11]बाग [12]कलियाँ [13]काँटे [14]प्रलयका दिन [15]विरह [16]पगड़ी [17]दिलका ख्याल करना [18]कष्ट पहुँचानेको उद्यत।

लबों[1]पर है हर लहज़ा[2] आहे शररबार[3],
जला ही पड़ा है हमारा तो घरबार।
हुई मुझ सितम दीदा[4] के पास इकजा,
निगाहें शररेज़[5] पलके जिगर पार।
सुबुक[6] कर दिया दिलकी बेताक़तीने,
न जाना था उसकी तरफ़ हमको हरबार।
जहां 'मीर' रहनेकी जागह[7] नहीं है,
चला चाहिए, यां से असबाब कर बार।

* * *

ग़ुस्सेसे उठ चले तो हो दामनको झाड़कर,
जाते रहेंगे[8] हम भी गरेबान फाड़ कर।
दिल वह नगर नहीं कि फिर आबाद हो सके,
पछताओगे, सुनो हो? यह बस्ती उजाड़ कर।
या रब[9] रहे-तलब[10] में कोई कब तलक फिरे,
तस्कीन दे, कि बैठ रहूं पांव गाड़ कर।

* * *

क्या क़स्रे-दिल[11] की तुमसे वीरानी नक़्ल करिए,[12],
हो हो गये हैं टीले सारे मकान ढह कर।
हम अपनी आंखों कबतक यह रंगे इश्क़ देखें,
आने लगा है लोहू रुख़सार[13] पर तो बह कर।
ताअत[14]कोई करे है? जब अब्र[15] ज़ोर झूमे,
गर हो सके तो ज़ाहिद[16] इस वक़्तमें गुनहकर।

---

[1]होठों [2]क्षण [3]आग बरसानेवाली आह [4]ग़ज़बकी आँखोंवाला [5]आग बरसानेवाली [6]हलका [7]जगह [8]मर जावेंगे [9]ऐ खुदा [10]प्रेमके मार्ग [11]दिलका महल [12]बताइए [13]गाल [14]ईश्वरका ध्यान [15]बादल [16]कर्मकांडी ।

क्यों तूने आख़िर आख़िर इस वक़्त मुंह दिखाया,
दी जान 'मीर' ने जो, हसरतसे एक निगह कर।

* * *

सह्ल मत बूझ[1] यह तिलिस्मे-जहां[2],
हर जगह यां ख़याल है कुछ और।
तू रगे-जां[3] समझती होगी, नसीम[4],
उसके गेसूका बाल है कुछ और।
'मीर' तलवार चलती है तो चले,
ख़ुश-ख़रामों[5] की चाल है कुछ और।

* * *

हम जईफ़ों[6] को पायमाल[7] न कर,
दौलते हुस्न पर न हो मग़रूर।
शिकवए आबला[8] अभीसे 'मीर'!
है पियारे 'हनोज़[9] दिल्ली दूर'।

* * *

परदा रहेगा[10] क्योंकर ख़ुर्शीदे-ख़ावरीका[11],
निकले है सुबुह वह भी अब बे नक़ाब होकर।
जो क़तरा[12] आब[13] मैंने इस दौर[14] में पिया है,
निकला है चश्मेतर[15] से वह ख़ूने-नाब[16] होकर।

* * *

मर्ग[17] इक मांदगी[18] का वक़्फ़ा[19] है,
यानी आगे चलेंगे दम लेकर।

---

[1]समझ [2]दुनियाका जादूघर [3]जिस नसमें जान होती है [4]ठंडी हवा [5]सुन्दर चालवालों [6]कमज़ोरों [7]कुचला हुआ [8]छाला पड़नेकी शिकायत [9]अभी [10]इज़्ज़त रहेगी [11]चमकता सूरज [12]बूंद [13]पानी [14]मद्यपान [15]भीगीआँख [16]खालिस खून [17]मौत [18]ठहरना [19]अवकाश।

उसके ऊपर, कि दिलसे था नज़दीक,
ग़मे दूरी चले हैं हम लेकर।
दिलपे कब इक्तफ़ा[1] करे है इश्क़,
जायेगा जान भी यह ग़म लेकर।
'मीर' साहब भी चूके एबद-अहद[2],
वरना देना था दिल क़सम लेकर।

* * *

डूबे उछले हैं आफ़ताब[3] हनोज़[4],
कहीं देखा था तुझको दरिया पर।
फुरसते-ऐश[5] अपनी यों गुज़री,
कि मुसीबत पड़ी तमन्ना[6] पर।
'मीर' क्या बात उसके होंठोंकी,
जीना दूभर हुआ मसीहा[7] पर।

* * *

झूठे भी पूछते नहीं अहवाल आनकर,
अनजान इतने क्यों हुए जाते हो जानकर।
वे लोग तुमने एक ही शोख़ीमें खो दिये,
पैदा किये थे चर्ख़[8] ने जो ख़ाक छानकर।
कहते न थे कि जानसे जाते रहेंगे हम,
अच्छा नहीं है, आ, न हमें इम्तहानकर।
हम वे हैं जिनके ख़ूंसे तेरी राह सब है गुल,
मतकर ख़राब हमको तू औरोंमें सानकर।
ता[9] कुश्त-ए-वफ़ा[10] हमें जाने तमाम ख़ल्क़[11],
तुरबत पै मेरी ख़ूनसे मेरे निशानकर।

---

[1]सन्तोष [2]वादा तोडनेवाला [3]सूरज [4]अबतक [5]आरामका मौक़ा [6]कामना [7]ईसा जिलानेवाला [8]आसमान [9]ताकि, [10]प्रेमका मारा [11]दुनिया।

नाज़ो-अताबो-ख़श्म[1] कहां तक उठाइए,
या रब[2] ! कभू तो हम पे उसे मेहरबान कर।

* * *

आज़ार[3] देखे क्या क्या उन पलकोंसे अटककर,
जी ले गये यह कांटे दिलमें अटक अटक कर।
यह मुश्ते-ख़ाक[4] यानी इंसान ही है रूकश[5],
वरना उठायी किनने इस आसमांकी टक्कर।
दिल काम[6] चाहता है अब उसके गेसुओंसे,
वां मर गये हैं कितने बरसों भटक भटक कर।

* * *

आतिशे दिल बुझी नहीं शायद,
क़तर-ए-अश्क[7] है शरारा[8] हनोज़।
अश्क झमका है, जब न निकला था—
चर्ख़पर[9] सुबहका सितारा हनोज़।
उम्र गुज़री दवाएं करते 'मीर',
दर्दे दिलका हुआ न चारा[10] हनोज़।

* * *

दिले-पुर-दाग़[11] चमन है पर उसे क्या कीजे,
जीसे जाती ही नहीं हसरते-गुलज़ार[12] हनोज़।
बह गये, उम्र हुई, अब्रे-बहारी[13] को मगर,
लहू बरसा रहे हैं दीद-ए-ख़ूंबार[14] हनोज़।

---

[1]गुस्सा [2]ऐ खुदा [3]मुसीबते [4]मुट्ठीभर मिट्टी [5]सामना करनेवाला [6]सफलता [7]आँसूकी बूंद [8]चिनगारी [9]आसमान [10]इलाज [11]दागोंसे भरा [12]बाग मे जानेकी अभिलाषा [13]बहारका बादल [14]खून बरसानेवाली आँखें।

बारहा चल चुकी तलवार तेरी चाल पे, शोख़ !
तू नहीं छोड़ता इस तर्ज़की रफ़्तार हनोज़ ।
कोई तो आबला-पा[1] दश्ते-जुनूं[2] से गुज़रा,
डूबा ही जाय है लोहूमें सरे-ख़ार हनोज़ ।

* * *

क्योंकि निकला जाय बहरे-ग़म[3] से मुझ बे दिलके पास[4],
आके डूबी जाती है कश्ती मेरी साहिल[5] के पास ।
है परीशां[6] दश्त[7] मे | किसका ग़ुबारे-नातवां[8],
गर्द कुछ गुस्ताख़ आती है चली महमिल[9] के पास,

* * *

मर गया मैं, मिला न यार अफ़सोस !
आह ! अफ़सोस, सद हज़ार अफ़सोस ।
रुखसते-सैरे-बाग़[10] टुक न हुई,
यूंही जाती रही बहार, अफ़सोस ।

* * *

तसवीरकी सी शमएं, खामोश जलते हैं हम,
सोज़े-दरूं[11] हमारा आता नहीं ज़बां तक ।
रोते फिरे हैं लोहू इक उम्र[12] इस गलीमें,
बाग़ो-बहार ही है जावे नज़र जहां तक ।
आंखें जो रोते रोते जाती रहें बजा है,
इंसाफ़ कर कि कोई देखे सितम कहां तक ।
मानिंदे-तीरे-नौ-पर,[13] उठ्ठे, जहां गये हम,
दुश्वार है हमारा आना फिर आशियांतक ।

* * *

---

[1]छालेदार पैरोवाला, [2]प्रेमका जंगल [3]रंजका समुद्र [4]से [5]किनारा [6]बिखरा [7]जंगल [8]कमज़ोर धूल [9]प्रियतमकी सवारी [10]बाग़की सैरकी फ़ुरसत [11]अन्दरूनी जलन [12]एक उम्रतक [13]नये उड़नेवाले पक्षीकी भांति ।

मुद्दत हुई घुट घुटके हमें सहरमें मरते,
वाक़िफ़[1] न हुआ कोई इस असरार[2] से अबतक।
बरसों हुए दिल-सोख़्ता[3] बुलबुलको मुए[4] लेक[5],
इक दूद[6] सा उठता है चमनज़ार[7] से अबतक।
क्या जानिए होते हैं सुखन[8] लुत्फ़[9] के कैसे,
पूछा नहीं उनने तो हमें प्यार से अबतक।

* * *

जिसे शब[10] आग सा देखा सुलगते,
उसे फिर ख़ाक ही पाया सहर[11] तक।
तेरा मुंह चांद सा देखा है शायद,
कि अंजुम[12] रहते हैं हरशब इधर तक।
कहां फिर शोरो-शेवन[13] जब गया 'मीर',
यह हंगामा[14] है उसही नौहागर[15] तक।

* * *

क़ैदे-क़फस[16] से छूटके देखा जला हुआ,
पहुंचे न होते काश कि हम आशियां[17] तलक।

* * *

गुल[18] की जफ़ा[19] भी जानी, देखी वफ़ाए बुलबुल,
इक मुश्ते-पर[20] पड़े हैं गुलशनमें जाए बुलबुल[21]।
यह दिलख़राश[22] नाले हरशबके मीर तेरे,
कर देंगे बेनमक[23] ही शोरे-नवाए-बुलबुल[24]।

* * *

---

[1]जानकार [2]भेद [3]दिलजला [4]मरे [5]लेकिन [6]धुआं [7]बाग़ [8]बातें [9]प्यार [10]रात [11]सुबह [12]सितारे [13]रोना पीटना [14]शोर [15]रोनेवाला [16]पिजड़ेकी कैद [17]घोंसला [18]फूल [19]अत्याचार [20]मुट्ठीभर पंख [21]बुलबुलकी जगह [22]हृदय-वेधक [23]बेमज़ा [24]बुलबुलका शोर।

सब्ज़ा-नौरस्ता[1] रह गुज़ार[2] का हूं,
सर उठाया कि हो गया पामाल[3]।
क्यों न देखूं चमनको हसरत से,
आशियां[4] था यहां मेरा परसाल।

* * *

हम अपने चाके-जेब[5]को सी रहते या नहीं,
फाटे[6] में पांव देने को आये कहांसे तुम।
जाओ न दिलसे, मंज़रे-तन[7] में है जा[8] यही,
पछताओगे, उठोगे अगर इस मकांसे तुम।

* * *

मुद्दत हुई कि चाके-क़फ़स[9] हीसे अब तो 'मीर',
दिखला रहे हैं गुलको दिले-चाक चाक[10] हम।

* * *

न फिर रक्खेंगे तेरी रह में पा[11] हम,
गये गुज़रे हैं आख़िर ऐसे क्या हम?
मरज़ ही इश्क़का बेडौल है कुछ,
बहुत करते हैं अपनी सी दवा हम।
हविस थी इश्क करनेमें, व लेकिन,
बहुत नादिम[12] हुए दिलको लगा हम।
कब आगे कोई मरता था किसी पर?
जहांमें कर गये रस्मे-वफ़ा हम।

* * *

---

[1]नई उगी घास [2]रास्ता [3]कुचला हुआ [4]घोंसला [5](उन्मादमें) फाड़े गये कपड़े [6]फटे [7]बदनकी दुनिया [8]जगह [9]टूटा पिंजड़ा [10]टुकड़े टुकड़े दिल [11]पैर [12]पछताये।

होता न दिलका ता यह सरंजाम[1] इश्क़में,
लगते ही जीके मर गये होते बलासे हम।

* * *

बेकली बे ख़ुदी कुछ आज नहीं,
एक मुद्दतसे वह मिज़ाज नहीं।
दर्द अगर यह है, तो मुझे बस[2] है,
अब दवा की भी एहतियाज[3] नहीं।
हमने अपनी सी की बहुत लेकिन,
मरज़े-इश्क़का इलाज नहीं।

* * *

सोज़शे-दिल[4] से मुफ़्त गलते हैं,
दाग़ जैसे चराग़ जलते हैं।
इस तरह दिल गया कि हम अब तक,
बैठे रोते है, हाथ मलते हैं।
भरी आती है आज यूं आंखें,
जैसे दरिया कहीं उबलते हैं।
दमे आख़िर[5] है बैठ जा, मत जा,
सब्र कर टुक, कि हम भी चलते हैं।
तेरे बे ख़ुद जो है सो क्या चेतें,
ऐसे डूबे कहीं उछलते हैं?
नज़र उठती नहीं, कि जब ख़ूबां[6],
सोतेसे आंख उठके मलते हैं।

---

[1]दशा [2]काफ़ी [3]ज़रूरत [4]दिलका जलना [5]आखिरी सांस [6]सुन्दर लोग।

इस सरे-जुल्फ़[1] का ख़याल न छोड़,
सांपके सर ही यां कुचलते हैं।

* * *

चश्मो-दिलो-जिगर यह सारे हुए परीशां,
किस किसकी तेरे ग़ममें हालत तबाह देखूं।

* * *

अपने कूचेमें फ़ुग़ां[2] जिसकी सुनो हो दिनरात,
वह जिगर-सोख़्ता[3]-ओ-सीना जला मैं ही हूं।

* * *

फाड़ा हज़ार जा से[4] गरेबाने-सब्र[5] 'मीर',
क्या कह गयी नसीमे-सहर[6] गुलके कानमें ?

* * *

जबां रख ग़ुंचा-सां[7] अपने दहन[8] में,
बंधी मुट्ठी चला जा इस चमनमें।
न खोल, ऐ यार ! मेरे गोर[9] में मुंह,
कि हसरत है मेरी जागह[10] कफ़नमें।
रखाकर हाथ दिल पर आह करते,
नहीं रहता चिराग़ ऐसी पवनमें।
जले दिलकी मुसीबत आप सुनकर,
लगी है आग सारे तन बदनमें।
न तुझ बिन होशमें हम आये साक़ी,
मुसाफ़िर ही रहे अपने वतन में।

* * *

---

[1]बालोंका सिरा [2]रोना [3]दुखी [4]जगह [5]सब्रकी पोशाक [6]सुबहकी ठंडी हवा [7]कलीकी तरह [8]मुंह [9]क़ब्र [10]जगह।

क्या तीरे-सितम उसके सीनेमें भी टूटे थे ?
जिस ज़ख्मको चीरूं हूं, पैकान[1] निकलते हैं।
मत सहल हमें जानों, फिरता है फ़लक[2] बरसों,
तब ख़ाक़के परदेसे इसान निकलते हैं।

* * *

तलवार ग़र्क़े-ख़ूं[3] है, आंखे गुलाबियां हैं,
देखें तो तेरी कबतक यह बदशराबियां[4] हैं।
मेहमान 'मीर' मत हो ख़्वाने-फ़लक[5] पे हरगिज़,
ख़ाली यह महरो-मह[6] की दोनों रकाबियां हैं।

* * *

जफ़ाएं देख लियां[7], बेवफ़ाइयां देखीं,,
भला हुआ कि तेरी सब बुराइयां देखीं।

* * *

बारहा[8] वादोंकी रातें आइयां[9],
तालओं[10] ने सुबह कर दिखलाइयां[11]।
इश्क़में ईजाएं[12] सबसे पाइयां[13],
रह गये आंसू तो आंखें आइयां।
एक भी चश्मक[14] न उस मह[15] की सी थी,
आंखें तारोंने बहुत झमकाइयां[16]।
रूकशी[17] को उसके मुंह भी चाहिए,
माह[18] के चेहरे पे हे सब झाइयां।

---

[1]तीर [2]आसमान [3]खूनमे डूबी [4]गहरा नशा [5]आसमान रूपी थाली [6]सूरज चांद [7]ली [8]कई बार [9]आयी [10]तकदीर, सुबहके पहलेका उजाला [11]दिखलाई [12]तकलीफ़ [13]पायी [14]इशारा [15]चांद [16]झपकायी [17]सामना करना [18]चांद।

शौक़े-क़ामत[1] में तेरे ऐ नौनिहाल[2],
गुल[3] की शाखें लेती हैं अंगड़ाइयां।
पास[4] मुझको भी नहीं है 'मीर' अब,
दूरतक पहुंचीं मेरी रुसवाइयां[5]।

* * *

देखें तो तेरी कब तक यह कज अदाइयां[6] हैं,
अब हमने भी किसूसे आंखें लड़ाइयां[7] हैं।
हम वे हैं ख़ूंगिरफ़्ता,[8] ज़ालिम! जिन्होंने तेरी,
अब्रू[9] की जुंबिश[10] ऊपर तलवारें खाइयां[11] हैं।

* * *

अब आंखोंमें खूं दमबदम देखते हैं,
न पूछो जो कुछ रंग हम देखते हैं।
गहे[12] दाग़ रहता है दिल, गहजिगर ख़ूं,
इन आंखोंसे क्या क्या सितम देखते हैं।
कहांतक भला रोओगे 'मीर' साहब,
अब आंखोंके गिर्द इक वरम देखते हैं।

* * *

खो दें हैं नींद मेरी मुसीबत बयानियां,
तुम भी तो एक रात सुनो यह कहानियां।
तलवारके तले ही गया अहदे-इंबसात[13],
मर मरके हमने काटी है अपनी जवानियां।

* * *

---

[1]क़दके प्रेम [2]नौ उम्र [3]फूल [4]ख़्याल [5]बदनामियां [6]टेढ़ा व्यवहार [7]लड़ायी [8]ख़ून बहानेके शौक़ीन [9]भौं [10]हिलना [11]खायीं [12]कभी [13]ख़ुशीका ज़माना।

सय्यद हो या चमार हो इस जा[1] वफ़ा है शर्त,
कब आशिक़ीमें पूछते हैं जातके तईं।

* * *

एक फ़क़त है सादगी तिसपे बलाए-जां है तू,
उशवा[2] करिश्मा[3] कुछ नहीं, आन नहीं, अदा नहीं।

* * *

ख़ूबरू[4] सबकी जान होते हैं,
आरज़ूए-जहान[5] होते हैं।
कभू आते हैं आप मे तुझ बिन,
घरमें हम मेहमान होते हैं।
रामज़-ए-चश्मे-ख़ुश क़दाने-ज़मीं[6],
फ़ित्ना-बर-आसमान[7] होते हैं।

* * *

कोई तो ज़मज़मा[8] करे 'मीर' आसा[9] दिलख़राश,
यों तो क़फ़स[10] में और गिरफ़्तार बहुत हैं।

* * *

जुनूं[11] मेरे की बातें दश्त[12] और गुलशनमें जब चलियां[13],
न चोबे-गुल[14] ने दम मारा न छड़ियां बेद[15] की हिलियां[16]।
चमन ताराज मारा है यहां तक रश्के-गुलरूने[17],
कि बुलबुल सर पटकती है, नहीं मुंह खोलतीं कलियां।

---

[1]जगह [2]जादू [3]चमत्कार [4]ख़ूबसूरत [5]दुनिया भरके प्यारे [6]ज़मीनके सुन्दरलोगोंकी आँखके इशारे [7]आकाशमें हलचल डालनेवाले गाना [8]मीरकी भाति [9]पिंजरा [10]उन्माद [11]जगल [12]चलीं [13]गुलाबकी लकड़ी [14]बेत [15]हिलीं [16]प्रियतमसे होनेवाली डाह।

दिवाना हो गया तू 'मीर' आख़िर रेख़्ता[1] कह कह,
न कहता था मैं ऐ ज़ालिम ! कि यह बातें नहीं भलियां[2]।

* * *

बज़्म[3] में जो तेरा ज़हूर[4] नहीं,
शमए-रौशनके मुंह पे नूर नहीं।
कितनी बातें बनाके लाऊं लेक[5],
याद रहतीं तेरे हुज़ूर[6] नहीं।
फ़िक्र मत कर हमारे जीनेका,
तेरे नज़दीक कुछ ये दूर नहीं।

* * *

एक लख़्त[7] सीनाकोबों[8] से फ़ुरसत नहीं हमें,
यानी कि दिलके जानेका मातम बहुत है यां।

* * *

कर नालाकशीं[9] कब तईं[10] औक़ात[11] गुज़ारे ?
फ़रयाद करें किससे ? कहाँ जाके पुकारें ?
दिलमें जो कभी जोशे-ग़म उठता है तो तादेर[12]
आंखोंसे चली जाती है दरिया की सी धारे।

* * *

यूं ही हैरान-ओ-ख़फ़ा ज़ूं-ग़ुंचा-ए-तसवीर[13] हूं,
उम्र गुज़री पर न जाना मैं कि क्यों दिलगीर हूं।

* * *

---

[1]उर्दू काव्य [2]भली [3]मजलिस [4]उपस्थिति [5]लेकिन [6]सामने [7]एक क्षण [8]छाती पीटना [9]रोते हुए, [10]कबतक [11]समय [12]देरतक [13]चित्रमेंकी कली।

आह और अश्क[1] ही सदा है यहां,
रोज बरसातकी हवा है यहां।
इक सिसकता है एक मरता है,
हर तरफ़ जुल्म हो रहा है यहां।

* * *

सुना जाता है शहरे-इश्क़के गिर्द,
मजारें ही मजारें हो गयी हैं।

* * *

हाल क्या पूछ पूछ जाते हो,
कभी पाते भी हो बहाल[2] हमें?
नज़र आते हैं होते जीके वबाल,
हल्का हल्का[3] तुम्हारे बाल हमें।

* * *

रही सही भी गयी उम्र तेरे पीछे यार,
यह कह कि, आह! तेरा कब तक इंतज़ार करें।

* * *

यही बस्ती आशिक़ोंकी, कभू चल तो सैर करने,
कि मुहल्लेके मुहल्ले है पड़े खराब तुझ बिन।

* * *

मुए[4] सहते सहते जफ़ा कारियां[5],
कोई हमसे सीखे वफ़ादारियां।
हमारी तो गुज़री इसी तौर उम्र,
यही नाला करना यही ज़ारियां।

---

[1]आँसू [2]अपनी असली दशामे [3]छल्ले छल्लेसे [4]मरे [5]अत्याचार।

फ़रिश्ता जहाँ काम करता न था,
मेरी आहने बर्छियां मारियां[1]।
गया जानसे इक जहां लेक[2] शोख़!
न तुझसे गयीं यह दिल आज़ारियां[3]।
ख़त[4]-ओ-काकुल-ओ-जुल्फ़-ओ-अंदाज़-ओ-नाज़,
हुईं दामे-रह[5] सब गिरफ़्तारियां।
तेरी आशनाईसे ही हब हुई,
बहुत की थीं दुनियामें हम यारियां।

* * *

आरज़ूएं हज़ार रखते हैं,
तिस पे हम जीको मार रखते हैं।
ग़ैर ही मूरदे-इनाइत[6] हैं,
हम भी तो तुमसे प्यार रखते हैं।
न निगह, नै पयाम,[7] नै वादा,
नामको हम भी यार रखते हैं।
चोट्टे दिलके हैं बतां[8] मशहूर,
बस यही एतबार रखते हैं।
फिर भी करते हैं 'मीर' साहब इश्क़,
हैं जवां, इख़्तियार रखते हैं।

* * *

एक सब आग, एक सब पानी,
बीदा-ओ[9]-बिल अज़ाब[10] हैं दोनों।

---

[1]मारी [2]लेकिन [3]दिल दुखाना [4]रेखे [5]रास्तेके जालोंमें [6]कृपापात्र [7]न सन्देश [8]सुन्दर लोग [9]आँख [10]मुसीबत।

आगे दरिया थे बीदा-ए-तर 'मीर',
अब जो देखो सुराब[1] हैं दोनों।

* * *

हुए थे जैसे मर जाते, पर अब तो सख़्त हसरत है,
किया दुश्वार नादानीसे हमने कारे-आसांको।
किसीके वास्ते रुसवाए-आलम[2] हो, पे जीमें रख,
कि मारा जाय जो ज़ाहिर करे इस राज़े-पिनहां[3] को।
गिरी पड़ती है बिजली ही तभीसे ख़िरमने-दिल[4] पर,
टुक इक हँस मेरे रोने पर कि देखें तेरे दंदां[5] को।
कोई कांटा सरे-रह[6] का हमारी ख़ाक पर बस है,
गुले-गुलज़ार[7] क्या दरकार है गोरे-ग़रीबां[8] को।
यह क्या जानूं हुआ सीनेमें क्या अब दिलको ऐ नासिह[9],
सहर[10] ख़ूंबस्ता[11] तो देखा था मैंने अपनी मिज़गां[12] को।
किया सैर इस ख़राबे[13] का बहुत, अब चलके सो रहिए,
किसू दीवारके सायेमें मुंहपर लेके दामांको।

* * *

आह! किस ढबसे रोइए कम कम,
शौक़[14] हदसे ज़ियाद[15] है हमको।
ना मुरादाना[16] ज़ीस्त करता[17] था,
'मीर' का तौर याद है हमको।

* * *

---

[1]मरीचिका [2]दुनियामें बदनाम [3]छिपे भेद [4]दिलके खलिहान [5]दाँत [6]रास्ता [7]बागका फूल [8]ग़रीबोंकी क़ब्र [9]हितेच्छु [10]सुबह [11]खूनसे चिपकी [12]पलक [13]दुनिया [14]प्रेम [15]अधिक [16]निराश [17]जीवन बिताता था।

जो कोई दम हो तो लोहूसा पीके रह जाऊं,
ग़मोंकी दिलमें भला कब तलक समाई हो।

* * *

कबतक गिरह रहेगा सीनेमें दिलके मानिंद[1],
ऐ अश्के-शौक़[2] इक दम रुख़सार[3] पर रवां हो।
उस तेग़ज़न[4] से कहियो क़ासिद[5]! मेरी तरफ़से,
अबतक भी नीम-जां[6] हूं, गर क़स्दे-इम्तहां[7] हो।

* * *

गर्चे कब देखते हो, पर देखो,
आरज़ू है कि तुम इधर देखो।
इश्क़ क्या क्या हमें दिखाता है,
आह! तुम भी तो इक नज़र देखो।
यूं अरक़[8] जल्वागर[9] है उस रुख़ पर,
जिस तरह ओस फूल पर देखो।
दिल हुआ है तरफ़ मुहब्बतका,
ख़ूनके क़तरेका जिगर देखो।

* * *

पानी पे जैसे गुंच-ए-लाला[10] फिरे बहा,
देखा मैं आंसुओंमें दिले दाग़दारको।

---

[1]तरह [2]प्रेमका आंसू [3]कपोल [4]तलवार चलानेवाला [5]सन्देश वाहक [6]अधमरा [7]परीक्षाका इरादा [8]पसीना [9]शोभायमान [10]गुल्लालाकी कली।

किस किसकी खाक़ अबकी मिलाती है ख़ाक़में,
जाती है फिर नसीम[1] उसी रहगुज़ार[2] को।
ऐ वह कोई ! जो आज पिये है शराबे-ऐश,
ख़ातिरमें रखियो कलके भी रंजेख़ुमार को।
गर साथ ले गड़ा तू दिले-मुज़तरब[3] तो 'मीर'
आराम हो चुका तेरे मुश्ते-ग़ुबार[4] को।

* * *

बे सोज़[5] दाग़ दिल पर गर भी जले बजा है,
अच्छा लगे है अपना घर बेचिराग़ किसको ?
गुलचीने-ऐश[6] होते हम भी चमनमें जाकर,
आहो-फ़ुग़ां[7] से अपनी लेकिन फ़राग़[8] किसको ?

* * *

दिन गुज़रता है मुझे फ़िक्र ही में ता[9] क्या हो,
रात जाती है इसी ग़ममें कि फ़रदा[10] क्या हो।
एक रोना ही नहीं आहो-ग़मो-नाला-ओ-दर्द,
हिज्र[11] में ज़िंदगी करनेके लिए क्या क्या हो।
ख़ाकमें लोटूं कि लोहूमें नहाऊं मैं 'मीर',
यार मुस्तग़ना[12] है उसको मेरी परवा क्या हो।

* * *

जाते नहीं उठाये यह शोर हर सहर[13] के,
या अब चमनमें, बुलबुल ! हम ही रहेंगे, या तू।

---

[1]ठंडी हवा [2]रास्ता [3]बेचैन दिल [4]मुट्ठीभर मिट्टी [5]जलना [6]आराम लेनेवाले [7]रोना [8]फ़ुरसत [9]कि [10]कल [11]विरह [12]निश्चिंत [13]सुबह।

कह सांझके मुए[1] को ऐ 'मीर' रोएं कब तक,
जैसे चिरागे-मुफ़लिस[2] इकदम में जल बुझा तू।

* * *

है फ़क्र[3] ही में ख़ैर, न कर आरज़ूए-वस्ल[4],
मिल बैठिए जो उससे तो शिकवा[5] दराज़[6] हो।
जूं तूं कि उसकी चाहका परवा किया है मैं,
ऐ चश्मे-गिरियानाक[7]! न अफ़शाए-राज़[8] हो।

* * *

दिल पर हुआ, सो आहके सदमेसे हो चुका,
डरता हूं यह कि अब कहीं टुकड़े जिगर न हो।
सौ दिलसे भी न काम चले उसके इश्क़में,
एक दिल रखूं हूं मैं तो, किधर हो किधर न हो।
हर इक क़दम पे लोग डराने लगे मुझे,
हां हां! किसू शहीदे-मुहब्बतका सर न हो।

* * *

जब मिलनेका सवाल करूं हूं, जुल्फ़ो-रुख़[9] दिखलाते हो,
बरसों मुझको यों ही गुज़रे सुबहो-शाम बताते हो।
बिखरी रहे है रुख़ पर जुल्फ़ें आंख नहीं खुल सकती है,
क्योंकि छिपें मैख़्वारिए-शब[10] जब ऐसे नींदके माते हो।

* * *

हाय उस ज़ख़्मी-ए-शमशीरे-मुहब्बत[11]का जिगर,
दर्दको अपने जो नाचार छिपा रखता हो।

* * *

---

[1]मरे [2]ग़रीबका दिया [3]विरह [4]मिलनकी आकांक्षा [5]शिकायत [6]लम्बी [7]रोनेवाली आंख [8]भेद खुलना [9]बाल और चेहरा [10]रातका शराब पीना [11]प्रेमकी तलवारके घायल।

गुल हो महताब हो आईना हो ख़ुर्शीद हो 'मीर',
अपना महबूब वही है जो अदा रखता हो।

* * *

चाह का दावा सब करते हैं, मानिए क्यों कर बे आसार[1],
अश्क[2] की सुर्ख़ी, ज़र्दी मुंहकी, इश्क़की कुछ तो अलामत[3] हो।
सरो-व-गुल अच्छे हैं दोनों, रौनक़ हैं गुलज़ारकी[4] लेक[5],
चाहिए रू[6] उसका सा रू हो, क़ामत[7] वैसा क़ामत हो।
शोरो- शग़ब[8] को रातोंके हमसाए[9] तुम्हारे क्या रोवें,
ऐसे फ़ितने[10] कितने उठेंगे 'मीर' जी तुम जो सलामत हो।

* * *

रात तो सारी गयी सुनते परीशां-गोई[11],
'मीर' जी कोई घड़ी तुम भी तो आराम करो।

* * *

अव्वले-इश्क़ ही में 'मीर'जी तुम रोने लगे,
ख़ाक अभी मुंहको मलो, नाला-ओ-फ़रियाद करो!

* * *

हरदमकी ताज़ा मर्गे-जुदाई[12] से तंग हूं,
होना जो कुछ हो, आह! सो यक बार क्यों न हो।

* * *

मक़सूद[13] दर्दे-दिल है न इस्लाम है न कुफ़्र[14],
फिर हो गलेमें सबहा[15] तो ज़ुन्नार[16] क्यों न हो?
तलवारके तले भी हैं आंखें तेरी उधर,
तू इस सितमका 'मीर' सज़ावार[17] क्यों न हो।

* * *

---

[1]निशान [2]आँसू [3]निशान [4]बाग़ [5]लेकिन [6]चेहरा [7]क़द [8]शोरगुल [9]पड़ोसी [10]मुसीबतें [11]दुखगाथा [12]विरहकी मौत [13]लक्ष्य [14]इस्लामसे इनकार [15]माला [16]जनेऊ [17]योग्य।

ख़ाली नहीं बग़ल कोई दीवानसे मेरे,
अफ़साना इश्क़का है यह मशहूर क्यों न हो।

* * *

है ग़ुबारे- 'मीर'[1] उसकी रह गुज़रमें इक तरफ़,
क्या हुआ दामन-कशां[2] यां तक भी आते यारको।

* * *

जो मैं न हूं तो करो तर्के-नाज़[3] करनेको,
कोई तो चाहिए जी भी नियाज़[4] करनेको।
जो बे दिमाग़ी[5] यही है तो बन चुकी अपनी,
दिमाग़ चाहिए हरइकसे साज़[6] करनेको।
जो आंसू आवें तो पी जा, कि ता[7] रहे परदा,
बला है चश्मे-तर[8] अफ़शाए-राज़[9] करनेको।

* * *

क़ैदे-हयात[10] सख़्त कोई क़ैद है? कि रोज़,
मर रहते हैंगे उसके गिरफ़्तार एक दो।
क्या क्या अज़ीज़ दोस्त मिले 'मीर' ख़ाकमें,
कुछ इस गलीमें हम ही नहीं ख़्वार[11] एक दो।

* * *

हाले दिल 'मीर' का ऐ अहलेवफ़ा[12]! मत पूछो,
उस सितम-कुश्ता[13] पे जो गुज़री जफ़ा[14] मत पूछो।

---

[1]'मीर' की मिट्टी [2]दामन उठाये हुए [3]बेपर्वाईसे बाज़ आना [4]सर-झुकाना [5]क्रोधी स्वभाव [6]दोस्ताना [7]ताकि [8]भीगी आँख [9]भेद खोलना [10]ज़िंदगीकी क़ैद [11]बरबाद [12]वफ़ादार दोस्तो [13]ज़ुल्मके मारे [14]अत्याचार।

ख़्वाह[1] मारा उन्हींने 'मीर' को, ख़्वाह आप मुआ[2],
जाने दो यार, जो होना था हुआ, मत पूछो।

* * *

नाला-ए-शब[3] ने किया है जो असर मत पूछो,
टुकड़े टुकड़े हुआ जाता है जिगर, मत पूछो।
ज्यूं त्यूं कर हाले-दिल इकबार तो मैं अर्ज़ किया,
'मीर' साहब जी! बस अब बारे-दिगर[4] मत पूछो।

* * *

उसकी तर्ज़े-निगाह मत पूछो,
जो ही जाने है, आह मत पूछो।

* * *

कहनेसे 'मीर' और भी होता है मुज़तरब[5]
समझाऊं कबतक इस दिले-ख़ाना ख़राबको।

* * *

क्या है गर बदनामी-ओ-हालत तबाही भी न हो,
इश्क़ कैसा? जिसमें इतनी रूसियाही[6] भी न हो।

* * *

आग़श्ता[7] मेरे ख़ूंसे ऐ काश जाके पहुंचे,
कोई परे-शकिस्ता[8] टुक गुलसितां[9] तलक तो।
अफ़साना ग़मका लब तक[10] आया है मुद्दतोंमें,
सो जाइयो न प्यारे! इस दास्तां[11] तलक तो।
ऐ काश ख़ाक ही हम रहते, कि 'मीर' इसमें,
होती हमें रसाई[12] उस आस्तां[13] तलक तो।

* * *

---

[1]चाहे [2]मरा [3]रातका रोना [4]दूसरी बार [5]बेचैन [6]अपमान [7]लिथड़ा हुआ [8]टूटा पर [9]बाग़ [10]होंठ [11]कहानी [12]पहुँच [13]चौखट।

हम हैं मजरूह[1] माजरा है यह,
वह नमक छिड़के है मजा है यह।
आग थे इब्तदाए-इश्क़में[2] हम,
अब जो हैं ख़ाक इंतहा[3] है यह।
शुक्र[4] उसकी जफ़ा[5]का हो न सका,
अपने दिलसे हमें गिला[6] है यह।
तेग़[7]पर हाथ दमबदम कबतक,
इक लगा चुक कि मुद्दआ[8] है यह।
'मीर' को क्यों न मग़तनम[9] जाने,
अगले लोगोंमें इक रहा है यह।

* * *

मुजरिम हुए हम दिल दे के वरना -
किसको किसूसे होती नहीं चाह।

* * *

गुज़रा[10] मैं इस सलूकसे, देखा न कर मुझे,
बर्छी सी लाग जा है जिगरमें तेरी निगाह।
बेताबियोंको सौंप न देना कहीं मुझे,
ऐ सब्र! मैंने आनके ली है तेरी पनाह।
ख़ूंबस्ता[11] बारे[12] रहने लगी अब तो यह मिज़ा[13],
आंसूकी बूंद जिससे टपकती थी गाह गाह[14]।

* * *

दिल, जिगर, जान—यह भस्मंत हुए सीनेमें,
घरको आतिश[15] दी मुहब्बतने, जला क्या क्या कुछ।

---

[1]घायल [2]प्रेमका आरम्भ [3]अन्त [4]कृतज्ञता [5]अत्याचार [6]शिकायत [7]तलवार [8]लक्ष्य [9]ग़नीमत [10]बाज़ आया [11]खूनसे चिपकी [12]शुक्र है [13]पलक [14]कभी कभी [15]आग।

क्या कहूं तुझसे कि क्या देखा है तुझमें मैंने ,
उश्वा-ओ-ग़मज़ा-ओ-अंदाज़-ओ-अदा क्या क्या कुछ ।
दिल गया, होश गया, सब्र गया, जी भी गया ,
शग़ल[1] में ग़म[2] के तेरे हमसे गया क्या क्या कुछ ।
दर्दे-दिल, ज़ख़्मे-जिगर, कुल्फ़ते-[3]ग़म, दाग़े-फ़िराक़[4]
आह ! आलम[5]से मेरे साथ चला क्या क्या कुछ ।
चश्मे-नमनाक[6], दिले-पुर[7], जिगरे-सद-पारा[8] ,
दौलते इश्क़से हम[9] पास भी था क्या क्या कुछ ।
एक महरूम चले 'मीर' हमीं दुनियांसे ,
वर्ना आलमको ज़मानेने दिया क्या क्या कुछ ।

* * *

क्या मुआफ़िक़ हो दवा इश्क़के बीमारके साथ ,
जी ही जाते नज़र आये हैं इस आज़ारके साथ ।
रात मजलिसमें तेरी हम भी खड़े थे चुपके ,
जैसे तसवीर लगा दे कोई दीवारके साथ ।
वे दिन अब सालते हैं रातोंको बरसों गुज़रे ,
जिन दिनों देर रहा करते थे हम यारके साथ ।
ज़िक्रे-गुल[10] क्या है ? सबा[11] अब कि ख़िज़ां[12] में हमने ,
दिलको नाचार लगाया है ख़सो-ख़ार[13] के साथ ।
किसको हरदम है लहू रोनेका हिजरां[14] में दिमाग़ ,
दिलको इक रब्त[15] सा है दीद-ए-ख़ूंबार[16] के साथ ।

* * *

[1]शौक़ [2]प्रेम [3]तकलीफ़ [4]विरहका दुःख [5]संसार [6]भीगी आँख [7]भरा दिल [8]टुकड़े-टुकड़े जिगर [9]हमारे पास [10]फूलका ज़िक्र [11]ठंडी हवा [12]पतझड़ [13]घास फूस [14]विरह [15]अपनापन [16]ख़ून बरसानेवाली आँख ।

आख़िरे-कार मुहब्बतमें न कुछ निकला काम,
सोना चाक[1]-ओ-दिले-पज़मुर्दा[2] मिज़हनमसे[3] भी।

* * *

ताबे-दिल[4] सर्फ़े-जुदाई[5] हो चुकी,
यानी ताक़त आज़माई हो चुकी।

* * *

दिल किस क़दर शिकस्ता[6] हुआ था कि रात 'मीर'
आयी जो बात लब[7] पे सो फ़रियाद हो गई।

* * *

आह मेरी ज़बान पर आई,
यह बला आसमान पर आयी।
हम भी हाज़िर हैं, खींचिए शमशीर,
तबअ[8] गर इम्तहान पर आयी।
आतिशे-रंगे-गुल[9] से क्या कहिए,
बर्क़ [10]थी, आशियान [11]पर आयी।

* * *

काबे सौ बार वह गया तो क्या,
जिसने यां एक दिलमें राह न की।

* * *

दिन रात मेरी छाती जलती है मुहब्बतमें,
क्या और न थी जागह[12] यह आग जो यां दाबी।

* * *

---

[1]फटा [2]मुरझाया [3]पलक [4]दिलकी ताक़त [5]विरहमें समाप्त [6]टूटा [7]होंठ [8]तबियत [9]फूलके रंगकी आग [10]बिजली [11]घोंसला [12]जगह।

घटा शमअ-सां[1] क्यों न जाऊं चला,
तपे-ग़म[2] जिगरको मेरे खा गयी।

* * *

ज़रे-फ़लक[3] जहां, टुक आसूदा[4] 'मीर' होते,
ऐसा नज़र न आया इक क़तए-ज़मीं[5] भी।

* * *

न मेरी क़द्रकी उस संगदिलने[6] 'मीर' कभू,
हज़ार हैफ़[7] कि पत्थरसे मैं मुहब्बत की।

* * *

क्या जली जाती है ख़ूबी ही में अपनी, ए शमअ!
कह पतिंगेकी भी कुछ शामो-सहर[8] करनेकी।

* * *

चमनका नाम सुना था वले[9] न देखा हाय,
जहां[10] में हमने क़फ़स[11] ही में ज़िंदगानी[12] की।

* * *

कैसी कैसी सुहबतें आंखोंके आगेसे गयीं,
देखते ही देखते क्या हो गया यकबारगी।

* * *

था दिल जो पक्का फोड़ा बिसियारी-ए-अलम[13] से,
दुखता गया दो चंदां[14] ज्यूं ज्यूं दवा लगायी।
दम भी न लेने पाया, पानी भी फिर न मांगा,
जिस तिश्ना-लब[15] को उनने तलवार आ लगायी।

---

[1]मोमबत्तीकी भांति [2]प्रेम की गर्मी [3]आसमानके नीचे [4]सन्तुष्ट [5]भूमि का टुकड़ा [6]निष्ठुर [7]अफ़सोस [8]सुबहशाम [9]लेकिन [10]संसार [11]पिंजरा [12]बितायी [13]रंजकी ज्यादती [14]दुगना [15]प्यासा।

जो आंसू पी गया मैं आख़िरको, 'मीर' उनने,
छाती जला जिगरमें इक आग जा लगायी।

* * *

कुछ मौजे-हवा[1] पेचां[2], ऐ 'मीर'! नज़र आयी,
शायद कि बहार आयी, ज़ंजीर नज़र आयी।
दिल्लीके न थे कूचे, औराक़े-मुसव्वर[3] थे,
जो शक्ल नज़र आयी तसवीर नज़र आयी।
उसकी तो दिलआज़ारी[4] बेहेच[5] ही थी यारो,
कुछ तुमको हमारी भी तक़सीर[6] नज़र आयी?

* * *

हो गयी शहर शहर रुसवाई,
ए मेरी मौत! तू भली आयी।
'मीर'! जबसे गया है दिल, तबसे,
मैं तो कुछ हो गया हूं सौदाई[7]।

* * *

जी भरा रहता है अब आठों पहर मानिंदे-अब्र,[8]
सैकड़ों तूफ़ां बग़लमें, है यह मिज़गां[9] मातमी।

* * *

मुझसा बेताब होवे जब कोई,
बेक़रारीको जाने तब कोई।
उसके कूचेमें हश्र[10] थी मुझ तक,
आहो-नाला करे न अब कोई।

* * *

---

[1]हवाकी लहर [2]चक्करदार [3]चित्रकारके काग़ज [4]दुख देना [5]अकारण [6]क़सूर [7]पागल [8]बादल की तरह [9]पलक, बरौनी [10]प्रलय।

बेगाना[1] सा लगे है चमन अब ख़िज़ां[2] में हाय,
ऐसी गयी बहार, मगर[3] आश्ना[4] न थी।
कब था यह शोरे-नौहा,[5] तेरा इश्क़ जब न था,
दिल था हमारा आगे तो, मातमसरा[6] न थी।
वह और कोई होगी, सहर[7] जब हुई क़बूल,
शर्मिंद-ए-असर[8] तो हमारी दुआ न थी।
आगे भी तेरे इश्क़से खींचे[9] थे दर्दो रंज,
लेकिन हमारी जानपर ऐसी बला न थी।

* * *

छन गया सीना भी, कलेजा भी,
यारके तीर! जान ले जा भी।
हाल कह चुप रहा तो मैं, बोला,
किसका क़िस्सा था? हां, कहे जा भी।

* * *

ख़ौफ़े-तनहाई[10] नहीं, कर तो जहां से तू सफ़र,
हरजगह राहे-अदम[11] में मिलेंगे यार कई।

* * *

अब्र! मत गोरे-ग़रीबां[12]पे बरस, ग़ाफ़िल! आह,
इन दिल-आज़ुर्दों[13]के जीमें भी लहर आयेगी।
'मीर' मैं जीतों में आऊंगा उसी दिन, जिस दिन,
दिल न तड़पेगा मेरा, चश्म[14] न भर आयेगी।

* * *

---

[1]पराया [2]पतझड़ [3]शायद [4]दोस्त [5]रोनेका शोर [6]मातम करनेकी जगह [7]सुबह [8]प्रभावकी कृतज्ञ [9]उठाये [10]अकेले होनेका भय [11]मौतका रास्ता [12]ग़रीबों की क़ब्र [13]दुखियों [14]आँख।

क्या करूं शरह[1] ख़स्ता-जानी[2] की,
मैंने मर मरके ज़िंदगानी की[3]।
हाले-बद[4] गुफ़्तनी[5] नहीं मेरा,
तुमने पूछा तो मेहरबानी की।
जिससे खोयी थी नींद 'मीर' ने कल,
इब्तदा[6], फिर वही कहानी की।

* * *

है यह बाज़ारे जुनूं मंडी है दीवानोंकी,
यहां दूकानें हैं कई चाके गरेबानोंकी।

* * *

रही न गुफ़्ता[7] मेरे दिलमें दास्तां[8] मेरी,
न इस दयार[9] में समझा कोई ज़बां मेरी।
वह नक़्शे-पाय[10] हूं मैं मिट गया है जो रह में,
न कुछ ख़बर है, न सुध होगी, रहरवां ! [11]मेरी।
तेरे फ़िराक़[12] में जैसे ख़याल मुफ़लिस[13] का,
गयी है फ़िक्रे-परीशां[14] कहां कहां मेरी।
हुआ हूं गिरिया-ए-ख़ूनी[15] का जबसे दामनगीर,[16]
न आस्तीन हुई पाक, दोस्तां[17] ! मेरी।

* * *

अबके भी सैरे-बाग़की जीमे हविस रही,
अपनी जगह बहारमे, कुंजे-क़फ़स[18] रही।

---

[1]बताना [2]दुखी होना [3]बिताई [4]दुर्दशा [5]कहने योग्य [6]शुरू [7]कही हुई [8]कहानी [9]दुनिया [10]पैरोंका निशान [11]पथिको [12]विरह [13]ग़रीब [14]भटके विचार [15]खून रोना [16]साथ पकड़नेवाला [17]मित्रो [18]पिंजड़ेका कोना।

ज्यूं सुबह इस चमनमें न हम खुलके हँस सके,
फ़ुरसत रही जो 'मीर' भी, सो इक नफ़स[1] रही।

* * *

आजकल बेक़रार हैं हम भी,
बैठ जा, चलनेहार है हम भी।
आनमें कुछ हैं आनमें कुछ हैं,
तुहफ़-ए-रोज़गार[2] हैं हम भी।
मनए-गिरिया[3] न कर तू, ऐ नासेह[4]!
इसमें बेअख़्तियार है हम भी।

* * *

ग़फ़लतमे गयी आह मेरी सारी जवानी,
ए उम्र गुज़िश्ता[5]! मैं तेरी क़द्र न जानी।
मुद्दतसे है इक मुश्ते-पर[6] आवारा चमनमे,
निकली है यह किसकी हविसे-बाल फ़शानी[7]।

* * *

कल बारे[8] हमसे उससे मुलाक़ात हो गयी,
दो दो बचनके होनेमें इक बात हो गयी।
अपने तो होंठ भी न हिले उसके रू-ब-रू,
रंजिशकी वजह 'मीर' वह क्या बात हो गयी।

* * *

बाज़ार दिल, कि यह क़ीमत है सारे आलम[10] की,
किसूसे काम नहीं रखती जिंस आदम की।

---

[1]दम [2]संसारकी विचित्र वस्तु [3]रोने से मना [4]हितेच्छु
[5]बीती उम्र [6]मुट्ठीभर पंख [7]पंख फड़फड़ानेकी हविस
[8]भाग्यसे [9]सामने [10]संसार।

तनिक तो लुत्फ़[1] से कुछ कह कि जां बलब[2] हूं मैं,
रही है बात, मेरी जां! बलब[3] कोई दमकी।

* * *

क्योंकर बुझाऊं आतशे-सोज़ाने-इश्क़[4] को,
अब तो यह आग दिलसे जिगरको भी जा लगी।
कुश्ते[5] का उसके ज़ख्म न ज़ाहिर हुआ कि 'मीर',
किस जाय[6] उस शहीदके तेग़े-जफ़ा[7] लगी।

* * *

देख तो दिल कि जां से उठता है,
यह धुआं सा कहांसे उठता है?
गोर[8] किस दिल जलेकी है यह फ़लक[9],
शोला[10] यक सुबुह यांसे उठता है।
सुध ले घरकी, भी शोलए-आवाज़[11],
दूद[12] कुछ आशियां[13] से उठता है।
यूं उठे आह उस गलीसे हम,
जैसे कोई जहां[14] से उठता है।
इश्क़ इक 'मीर' भारी पत्थर है,
कब यह तुझ नातवां[15] से उठता है।

* * *

टपकते वर्द हैं आंसूकी जागह[16],
इलाही चश्म[17] या ज़ख्मे-कुहन[18] है।

* * *

---

[1]कृपा [2]मरणोन्मुख [3]होंठपर [4]प्रेमकी आग [5]मारे हुए [6]जगह [7]जुल्मकी तलवार [8]क़ब्र [9]आसमान [10]लपट [11]आवाज़की लपट [12]धुआँ [13]घोंसला [14]संसार [15]कमज़ोर [16]जगह [17]आँख [18]पुराना घाव।

सोज़िश[1] गयी न दिलकी रोनेसे रोज़ो-शब[2] के,
जलता हूं और दरिया बहते हैं चश्मे-नम[3] से।
कुढ़िए न रोइए तो औक़ात[4] क्योंकि गुज़रे,
रहता है मश्अला[5] सा बारे-ग़मो-अलम[6] से।
पामाल[7] करके हमको पछताओगे बहुत तुम,
कमयाब[8] है जहां[9] में सर देनेवाले हमसे।

* * *

नहीं, ए हमनफ़स[10] अब जीमें ताक़त दूरी-ए-गुलकी[11],
जिगर टुकड़े हुआ जाता है आख़िर शबके[12] नालोंसे।

* * *

चंदे[13], सिपहर[14]! छाती हमारी जला करे,
अब दाग़ खाते खाते कलेजे तो पक गये।
उश्शाक़[15] पर जो वे सफ़े-मिज़गां[16] फिरीं तो 'मीर',
ज्यूं अश्क[17] कितने चू गये, कितने टपक गये।

* * *

ज़िंदगी होती है[18] अपनी ग़मके मारे देखिए,
मूंद लीं आंखें इधरसे तुमने, प्यारे! देखिए।
लख़्ते-दिल[19] कब तक इलाही! चश्म[20] से टपका करें,
ख़ाक में ताचंद[21] ऐसे लाल-पारे[22] देखिए?

---

[1]जलन [2]रातदिन [3]भीगी आंख [4]समय [5]दिलचस्पी, शौक़ [6]रंजका बोझ [7]कुचल [8]दुर्लभ [9]ससार [10]साथी [11]फूल (प्रियतम) से दूरी [12]रात [13]कुछ [14]आसमान [15]प्रेमियों [16]बरौनियोंकी पंक्तियां [17]आंसू [18]खत्म होती है [19]दिलके टुकड़े [20]आंख [21]कबतक [22]लालके टुकड़े।

राहे-दूरे-इश्क़में अब तो रखा हमने क़दम,
रफ़्ता रफ़्ता[1] पेश क्या आता है बारे देखिए।
एक ख़ूं हो बह गया, दो रोते रोते ही गये,
दीदा-ओ-दिल[2] हो गये हैं सब कनारे देखिए।

* * *

फ़लक[3], ऐ काश ! हमको ख़ाक ही रखता कि इसमें हम,
ग़ुबारे-राह[4] होते या किसी की ख़ाके पा[5] होते।
इलाही ! कैसे होते हैं जिन्हें है बंदगी[6] ख़्वाहिश,
हमें तो शर्म दामनगीर होती है ख़ुदा होते।

* * *

गुज़र सरसे, तब इश्क़की राह चल,
कि हरगाम[7] यां इक ख़तरगाह[8] है।

* * *

जहांसे[9] तू रख़्ते-अक़ामतको[10] बांध,
यह मंज़िल नहीं, बेख़बर ! राह है।

* * *

सैर कर 'मीर' इस चमनकी शिताब[11],
है ख़िज़ां[12] भी सुराग़[13] में गुलके।

* * *

इश्क़में नैं[14] ख़ौफ़ो-ख़तर चाहिए,
जानके देनेको जिगर चाहिए।

---

[1]धीरे धीरे [2]आँखे और दिल [3]आसमान [4]रास्तेकी धूल [5]चरणरज [6]बन्दा होना [7]क़दम [8]भयानक स्थान [9]संसार [10]ठहरनेका सामान [11]जल्दी [12]पतझड़ [13]तलाश [14]न।

हाल यह पहुंचा है कि अब ज़ोफ़[1] से,
उठते पलक एक पहर चाहिए।
शर्त सलीक़ा है हर इक अम्र[2] में,
ऐब भी करनेको हुनर चाहिए।

* * *

हस्ती[3] अपनी हुबाब[4] की सी है,
यह नुमायश सुराब[5] की सी है।
नाज़ुकी उसके लब[6]की क्या कहिए,
पंखड़ी इक गुलाबकी सी है।
मैं जो बोला कहा कि यह आवाज़,
उसी ख़ाना ख़राबकी सी है।
बार बार उसके दर पै जाता हूं,
हालत अब इज़्तराब[7] की सी है।
'मीर' उन नीमबाज़[8] आंखोंमें,
सारी मस्ती शराबकी सी है।

* * *

ख़ाली न छोड़ेंगे हम अपनी जगह,
गर यही रोना है तो मर जायेंगे।
राह दमे-तेग़[9] पे क्यों हो न 'मीर',
जी पै रखेंगे तो गुज़र जायेंगे।

* * *

अब जो इक हसरते-जवानी है,
उम्रे-रफ़्ता[10] की यह निशानी है।

---

[1]कमज़ोरी [2]बात [3]जीवन [4]बुलबुला [5]मरीचिका [6]होंठ
[7]बेचैनी [8]अधखुली [9]तलवारकी धार [10]बीती उम्र।

उसकी शमशीरे-तेज़[1] से हमदम[2],
मर रहेंगे, जो ज़िंदगानी है।
यां हुए 'मीर' तुम बराबर ख़ाक,
वां वही नाज़ो-सर गरानी[3] है।

* * *

सताया 'मीरे'-ग़मकश[4] को किन्होंने,
कि फिर अब अर्श[5] तक जाते हैं नाले[6]।

* * *

दिलके मामूरे[7] की मतकर फ़िक्र, फ़ुरसत चाहिए,
ऐसे वीरानेके अब बसनेको मुद्दत चाहिए।
तंग मत हो इब्तदाए[8] आशिक़ीमें इस क़दर,
ख़ैरियत है 'मीर' साहब! दिल सलामत चाहिए।

* * *

क़ुरबां-गहे-मुहब्बत[9] वह जा है जिसमें हरसू[10],
दुश्वार जान देना आसान हो रहा है।

* * *

सर जायेगा, व लेकिन आंखें उधर ही होंगी,
क्या तेरी तेग़[11] से हम क़तए-नज़र[12] करेंगे?

* * *

जीते हैं जब तलक हम आंखें भी लड़तियां[13] हैं,
देखें तो, जोर[14] ख़ूबां[15] कब तक रवा[16] रखेंगे।

* * *

---

[1]तेज़ तलवार [2]साथी [3]नाज़ नख़रे [4]पीड़ित [5]आसमान [6]पुकार [7]बस्ती [8]आरम्भ [9]प्रेमकी बलिवेदी [10]हर तरफ़ [11]तलवार [12]आंख बचाना [13]लड़ती [14]जुल्म [15]सुन्दर लोग [16]जायज़।

गर दिलकी बेक़रारी होती यही जो अब है,
तो हम सितम-रसीदा[1] काहे को जीने पाते।
गर जानते कि यूं ही बरबाद जायेंगे, तो,
काहेको ख़ाकमें हम अपने तईं मिलाते।
शायद कि ख़ून दिलका पहुंचा है वक़्ते आख़िर,
थम जाते हैं कुछ आंसू रातोंको आते आते।

* * *

तेरे दिल जलेको रखा जिस घड़ी,
धुआं सा उठा कुछ लबे-गोर[2] से।
जो हो 'मीर' भी उस गलीमें सबा,
बहुत पूछियो तू मिरी ओर से।

* * *

पछताओगे बहुत जो गये हम जहानसे,
आदमकी क़द्र होती है ज़ाहिर जुदा हुए।
सर दे के हमने 'मीर' फ़राग़त[3] की इश्क़में,
ज़िम्मे हमारे बोझ था, बारे अदा हुए।

* * *

क्योंकि तुं हो दश्ते-शौक़[4], आख़िरको मानिंदे-सरश्क[5],
मेरे पावोंमें तो पहले ही क़दम छाले पड़े।

* * *

पासे-नामूसे-इश्क़[6] था वरना,
कितने आंसू पलकतक आये थे।

---

[1]उत्पीड़ित [2]क़ब्रके किनारे [3]छुट्टी [4]प्रेमका वन [5]आँसूकी तरह [6]प्रेमकी मर्यादाका ख्याल।

वही समझा न, वरना हमने तो,
ज़ख़्म छातीके सब दिखाये थे।
फ़ुरसते-ज़िंदगीसे मत पूछो,
सांस भी हम न लेने पाये थे।

* * *

कहां है आदमी आलम[1] में पैदा,
ख़ुदाई[2] सदक़ेकी[3] इंसान[4] परसे।

* * *

ख़ूब ही, ऐ अब्र[5]! इक दिन आओ, बाहम[6] रोइए,
पर न इतना भी कि डूबे शहर, कमकम रोइए।

* * *

क्या छिपें शहरे-मुहब्बतमें तेरे ख़ाना-ख़राब[7],
घरके घर उनके हैं इस बस्तीमें वीरान हुए।
जामे-ख़ूं[8] बिन नहीं मिलता है हमें सुबहको आब[9],
जबसे इस चर्ख़े-सियह-कार[10]के मेहमान हुए।

* * *

या रब![11] कोई हो, इश्क़का बीमार न होवे,
मर जाय, वले[12] उसको यह आज़ार[13] न होवे।
ज़ंदां[14] में फंसे, तौक़ पड़े, क़ैदमें मर जाय,
पर दामे-मुहब्बत[15] में गिरफ़्तार न होवे।

---

[1]संसार [2]सृष्टि [3]न्योछावर [4]मनुष्य [5]बादल [6]मिलकर [7]बरबाद [8]ख़ूनका प्याला [9]पानी [10]अभागा आसमान [11]हे भगवान [12]लेकिन [13]रोग [14]क़ैद खाना [15]प्रेमका जाल।

इस वास्ते कांपूं हूं कि है आह निपट सर्द,
यह बाद[1] कलेजेके कहीं पार न होवे।

* * *

खींचा था आहे-शोला-फ़शां[2] ने जिगरसे सर,
बरसों तईं पड़े हुए जंगल जला किये।
अब ख़ाक सी उड़े है मुंह ऊपर, वगर्ना 'मीर',
इस चश्मे-गिरियानाक[3] से दरिया बहा किये।

* * *

दी आग दिलको मुहब्बतने जबसे, जलता हूं,
मैं, जिस तरह किसूका ख़ानमान[4] जल जावे।
न बोल 'मीर'से, मज़लूमे-इश्क़[5] है वह ग़रीब,
मबादा[6] आह करे, सब जहान[7] जल जावे।

* * *

किया था जाबजा[8] रंगीं, लहू तुझ हिज्र[9] में रोकर,
गरेबां 'मीर' का देखा, मगर[10] गुलचीं[11] का दामां है।

* * *

बालीं[12] पे मेरी आकर टुक देख शौक़े-दीदार[13]
सारे बदन का जी अब आंखोंमें आ रहा है।

* * *

पकड़ी है निपट 'मीर' तपिश[14] और जिगरने,
शायद कि मेरे जी ही पे अब आन बनी है।

* * *

---

[1]हवा [2]लपटें देनेवाली आह [3]रोनेवाली आँख [4]माल असबाब [5]प्रेमोत्पीड़ित [6]ऐसा न हो [7]संसार [8]जगह जगह [9]विरह [10]शायद [11]फूल चुननेवाला [12]सरहाने [13]देखने की चाह [14]जलन।

सैरे-गुलज़ार मुबारक हो सबा[1] को, हम तो,
एक परवाज़[2] न की थी कि गिरफ़्तार हुए।

* * *

भलेको अपने सब दौड़े हैं, यह अपना बुरा चाहे,
चलन इस दिलका तुम देखो तो दुनियासे निराला है।

* * *

बजाए-सीनाकोबी[3] संग[4] से दिल ख़ून होते हैं,
जो हमदम[5] ऐसे जाते हैं तो मातम सख़्त होता है।
न रक्खो कान नज़्मे-शायराने-हाल[6] पर इतने,
चलो टुक 'मीर' को सुनने कि मोती से पिरोता है।

* * *

हम तो उसके ज़ुल्मसे, हमदम[7]! चले,
रह सके हैं तू तो रह यां हम चले।
मुझ से ना शायस्ता[8] क्या देखा कि 'मीर'
आते आते कुछ जो आंसू थम चले।

* * *

जब तुझ बिन लगता है तड़पने, जाय है निकला हाथोंसे,
है जो गिरह सीनेमें उसको दिल कहिए या पारा है।

* * *

लायी तेरी गली तक आवारगी हमारी,
ज़िल्लत[9] की अपनी अब हम इज़्ज़त किया करेंगे।

---

[1]ठंडी हवा [2]उड़ान [3]छाती पीटनेकी जगह [4]पत्थर [5]साथी [6]नये कवियोकी रचना [7]साथी [8]अनुचित [9]बदनामी।

अहवाले-'मीर'[1] क्यों कर आख़िर[2] हो एक शबमें[3],
इक उम्र हम यह क़िस्सा तुमसे कहा करेंगे।

* * *

हम हुए, तुम हुए, कि 'मीर' हुए,
उसकी ज़ुल्फ़ोंके सब असीर[4] हुए।
नहीं आते किसूकी आंखोंमें,
हो के आशिक़ बहुत हक़ीर[5] हुए।

* * *

जब कि पहलूसे यार उठता है,
दर्द बे इख़्तियार उठता है।
अब तलक भी मज़ारे-मजनू[6] से,
नातवां[7] इक ग़ुबार[8] उठता है।
है बगूला ग़ुबार किसका 'मीर',
कि जो हो बेक़रार उठता है।

* * *

दिल! जाओ तो अब जाओ, हो ख़ूं तो जिगर होवे,
इक जान है, किस किसके ग़मख़्वार[9] रहा कीजे।
है ज़ीस्त[10] कोई यह भी जो 'मीर' करे है तू,
हर आनमें मरनेको तय्यार रहा कीजे।

* * *

हमने भी सैर की थी चमनकी, पर ऐ नसीम[11]!
उठते ही आशियां[12] से गिरफ़्तार हो गये।

---

[1]मीरका हाल [2]समाप्त [3]रात [4]कैदी [5]अपमानित [6]मजनूकी क़ब्र [7]कमज़ोर [8]धूल, मिट्टी [9]दोस्त [10]जीवन [11]सुबहकी हवा [12]घोंसला।

कैसे हैं वे कि जीते हैं सद[1] साल, हम तो 'मीर',
इस चार दिनकी ज़ीस्त[2] में बेज़ार[3] हो गये।

* * *

शोला-अफ़शां[4] अगर ऐसी ही रही आह तो 'मीर',
घरको हम अपने किसू रात जल, बैठेंगे।

* * *

जब सरे-राह[5] आवे है वह शोख़,
एक आलमका जान जाता है।

* * *

शमए-अख़ीर शब[6] सुन सरगुज़िश्त[7] मेरी,
फिर सुबह होने तक तो क़िस्सा ही मुख़्तसर है।
वे दिन गये कि आंसू रोते थे, 'मीर'! अब तो,
आंखोंमें लख़्ते-दिल[8] है या पारए-जिगर[9] है।

* * *

पर[10] तो गुज़रा क़फ़स[11] ही में, देखें,
अबकी कैसा यह साल आता है।
शेख़की तू नमाज़ पर मत जा,
बोझ सा सरका डाल आता है।

* * *

प्यार करनेका जो ख़ूबां[12] हम पे रखते हैं गुनाह,
उनसे भी तो पूछते तुम इतने क्यों प्यारे हुए।

---

[1]सौ [2]जीवन [3]दुखी [4]आग बरसानेवाली [5]रास्तेमें [6]अन्तिम पहरका दीपक [7]कहानी [8]दिलका टुकड़ा [9]कलेजेका टुकड़ा [10]गतवर्ष [11]पिंजड़ा [12]सुन्दर व्यक्ति।

आज मेरे ख़ून पर इसरार हरदम है तुम्हें,
आये हो, क्या जानिए, तुम किसके सनकारे हुए।

* * *

करे क्या कि दिल भी तो मजबूर है,
ज़मीं सख़्त है, आसमां दूर है।
तमन्नाए-दिल[1] के लिए जान दी,
सलीक़ा हमारा तो मशहूर है।
दिल अपना निहायत है नाज़ुक मिज़ाज,
गिरा गर यह शीशा तो फिर चूर है।
कहीं जो तसल्ली हुआ हो यह दिल,
वही बेक़रारी बदस्तूर है।
बहुत सई[2] करिए तो मर रहिए 'मीर',
बस अपना तो इतना ही मक़दूर[3] है।

* * *

अब 'मीर' जी तो अच्छे ज़ुंदीक़[4] ही बन बैठे,
पेशानी[5] पे दे क़श्क़ा[6] ज़ुन्नार[7] पहन बैठे।

* * *

गुमां कब था यह परवाने पर इतना शमअ रोएगी,
कि मजलिसमेंसे जिसके अश्क[8] के भर भर लगन[9] निकले।

* * *

गुफ़्तगू[10] रेख़्ते[11] में हमसे न कर,
यह हमारी ज़बान है प्यारे।

---

[1]हृदयकी इच्छा [2]कोशिश [3]ताक़त [4]धर्म (इस्लाम) विमुख [5]माथा [6]तिलक [7]जनेऊ [8]आँसू [9]दीवट [10]बातचीत [11]उर्दू।

छोड़ जाते हैं दिलको तेरे पास,
यह हमारा निशान है प्यारे।
'मीर' अम्दन[1] भी कोई मरता है?
जान है तो जहान है प्यारे।

* * *

ख़ूं-बस्ता[2] जबतलक थीं, दरिया रुके खड़े थे,
आंसू गिरे करोड़ों पलकोंके टुक हिलाये।
इक हर्फ़की भी मुहलत हमको न दी अजल[3] ने,
था जी में, आह! क्या क्या, पर कुछ न कहने पाये।

* * *

शौक़ था, जो यारके कूचे हमें लाया था, 'मीर'!
पांवमें ताक़त कहां इतनी कि अब घर जाइए।

* * *

ऐ शबे-हिज्र रास्त[4] कह तुझको,
याद कुछ सुबहकी भी आती है।
चश्मे बद्दूर[5]! चश्मे-तर[6], ऐ मीर!,
आंखें तूफ़ानको दिखाती हैं।

* * *

जेब[7] और आस्तींसे रोनेका काम गुज़रा,
सारा निचोड़ अब तो दामन पे आ रहा है।
काहेका पास[8] अब तो रुसवाई दूर पहुंची,
राज़े-मुहब्बत अपना किससे छुपा रहा है?

* * *

---

[1]जानबूझकर [2]खूनसे चिपकी [3]मौत [4]सच [5]नज़र न लगे [6]भीगी आंख [7]वस्त्रका मध्य भाग [8]ख्याल।

रुकती नहीं तेग़े-नाला[1] हर्गिज़,
जबतक कि जिगर सिपर[2] न होवे।
कर बेख़बर इक निगहसे, साक़ी!
लेकिन किसूको ख़बर न होवे।
रख देखके राहे-इश्क़में पाए[3],
यां 'मीर' किसूका सर न होवे।

* * *

जम गया ख़ूं कफ़े-क़ातिल[4] पे तेरा, 'मीर'! जिबस,[5]
उनने रो रो दिया कल हाथको धोते धोते।

* * *

घबरा न 'मीर'! इश्क़में, उस सहल-जीस्त[6] पर,
जब बस न कुछ चला तो मेरे यार! मर गये।

* * *

मुए[7] ही जाते हैं हम दर्दे-इश्क़से यारो!
किसूके पास इस आज़ार[8] की दवा भी है?
कहां तलक शबो-रोज़[9], आह! दर्दे-दिल कहिए,
हर एक बातकी आख़िर कुछ इंतहा[10] भी है?

* * *

गये वक़्त आते हैं हाथ कब, हुए हैं गँवाके ख़राब सब,
तुझे करना होवे सो कर तू अब, कि यह उम्र बर्क़े-शिताब[11] है।
मेरा शोर सुनके जो लोगोंने किया पूछना, तो कहे है क्या,
जिसे 'मीर' कहते हैं, साहबो! यह वही तो ख़ाना-ख़राब[12] है।

* * *

---

[1]रोनेकी तलवार [2]ढाल [3]पैर [4]मारनेवालेकी हथेल [5]बहुत [6]आरामसे रहनेवाला [7]मरे [8]रोग [9]रात दिन [10]अन्त, सीमा [11]बिजलीकी कौंध [12]बरबाद।

नाले[1] जो आज सुनते हैं सो हैं जिगर-ख़राश,[2]
क्या जानिए क़फ़स[3] में गिरफ़्तार कौन है।

* * *

अंजामे-कारे-बुलबुल[4] देखा हम अपनी आंखों,
आवारा थे चमनमें दो चार टूटे पर से।
बेताक़तीने दिलकी आंखोंको मार रक्खा,
आफ़त हमारे जी की आयी हमारे घरसे।
दिलकश[5] यह मंज़िल आख़िर देखा तो आह निकली,
सब यार जा चुके थे आये जो हम सफ़र से।

* * *

रही न पुख़्तगी[6] आलम[7] मे, दौरे-ख़ामी[8] है,
हज़ार हैफ़[9]! कमीनोंक। चर्ख़[10] हामी[11] है।
न उठ तू घरसे, अगर चाहता है हूं मशहूर,
नगीं[12] जो बैठा है गड़कर सो कैसा नामी है।

* * *

सबने जाना कहीं यह आशिक़ है,
बह गये अश्क[13] दीदए-नम[14] से।
मुफ़्त यूं हाथसे न खो हमको,
कहीं पैदा भी होते हैं हम से?
देख वे पलकें बर्छियां चलियां[15],
तेग़[16] निकली उस अबू-ए-ख़म[17] से।

---

[1]रोने [2]कलेजा छीलनेवाले [3]पिंजड़ा [4]बुलबुलका अन्त [5]मनमोहक [6]गम्भीरता [7]ससार [8]टुच्चेपन का ज़माना [9]शोक [10]आसमान (भाग्य) [11]सहायक [12]नगीना [13]आँसू [14]भीगी आँख [15]चलीं [16]तलवार [17]टेढ़ी भौंह।

दर-पए-ख़ूने-'मीर'[1] ही न रहो,
हो भी जाता है जुर्म आदम[2] से।

* * *

न तुझे रहम, नै उसे टुक सब्र,
दिल पै मेरे अजब मुसीबत है।

* * *

कहता है तुझसे कौन कि, ऐ सीना! रुक न जा,
इतना तो हो कि आह जिगरसे निकल सके।

* * *

तलवार आप खींचिए हाज़िर है यां भी सर,
बस आशिक़ी की हमने जो मरनेसे डर गये।

* * *

लोटे है ख़ाको-ख़ूनमे ग़ैरोंके साथ 'मीर',
ऐसे तो नीम-कुश्ता[3] को इनमें न सानिए।

* * *

मेरे इस रुकके मर जानेसे वह ग़ाफ़िल है, क्या जाने,
गुज़रना जानसे आसां बहुत मुश्किल है क्या जाने।

* * *

बेकली मारे डालती है नसीम[4],
देखिए अबके साल क्या होवे।
मर गये हम तो मर गये, तू जिए,
दिल-गिरफ़्ता[5] तेरी बला होवे।

---

[1]मीरको मारनेकी घातमे [2]आदमी [3]अधमरे [4]ठंडी हवा
[5]रंजीदा।

न सुना रात हमने इक नाला[1],
ग़ालिबन[2] 'मीर' मर रहा होवे।

* * *

रोज़ आने पे नहीं निस्बते-इश्क़ी[3] मौक़ूफ़[4],
उम्रभर एक मुलाक़ात चली जाती है।

* * *

मुंसिफ़[5] जो तू है,—कबतई[6] यह दुख उठाइए,
क्या कीजिए, मेरी जां! अगर मर न जाइए।
फ़िक्रे-मआश[7] यानी ग़मे-जीस्त[8] ताबके,
मर जाइए कहीं कि टुक आराम पाइए।

* * *

नहीं वसवास[9] जी गंवानेके,
हाय रे जौक़[10] दिल लगानेके!
मेरे तग़ईरे-हाल[11] पर मत जा,
इत्तफ़ाक़ात[12] हैं ज़मानेके।
दमे-आख़िर ही क्या न आना था?
और भी वक़्त थे बहानेके।
चश्मे-नजमे-सिपहर[13] झपकी है,
सदक़े[14] इस अंखड़ियां लड़ानेके।
दिलो-दीं[15] होशो-सब्र सब ही गये,
आगे आगे तुम्हारे आनेके।

* * *

---

[1]रोनेकी आवाज़, पुकार [2]सम्भवतः [3]प्रेमसम्बन्ध [4]निर्भर [5]न्यायप्रिय [6]तक [7]जीविकाकी चिन्ता [8]जीवन दुख [9]सन्देह [10]शौक़ [11]दशा परिवर्तन [12]सयोग [13]आकाशके तारोंकी आँख [14]न्योछावर [15]दिल और ईमान।

दिल जो पुर-बेक़रार[1] रहता है,
आजकल मुझको भार रहता है।
जब्र[2] यह है कि तेरे ख़ातिर दिल,
रोज़ बे इख़्तियार रहता है।

* * *

वह[3] भी 'मीर' तुर्फ़ा[4] मक़तल[5] है,
जो है सो कोई दमका फ़ैसल[6] है।
मर गया कोहकन[7] इसी ग़ममें,
आंख ओझल पहाड़ ओझल है।

* * *

सब्र भी करिए बला पर 'मीर' साहब भी कभू,
जब न तब रोना ही कुढ़ना यह भी कोई ढंग है।

* * *

आज तेरी गलीसे, ज़ालिम! 'मीर',
लोहूमें शोरबोर आया है।

* * *

फ़क़ीराना आये, सदा[8] कर चले,
मियां ख़ुश रहो हम दुआ कर चले।
वह क्या चीज़ है आह! जिसके लिए,
हर इक चीज़से दिल उठा कर चले।
कोई नाउमीदाना[9] करते निगाह,
सो तुम हमसे मुंह भी छिपा कर चले।

---

[1]बेचैनीसे भरा [2]अत्याचार [3]संसार [4]विचित्र [5]वधस्थल [6]मेहमान [7]फ़रहाद [8]आवाज, पुकार [9]निराशासे।

बहुत आरज़ू थी गलीकी तेरी,
सो यां से लहूमें नहा कर चले।
जबीं[1] सजदा[2] करते ही करते गयी,
हक़्क़े-बंदगी[3] हम अदा कर चले।

* * *

आलम[4] मेरी तक़लीद[5] से ख़्वाहिश तेरी करने लगा,
मैं तो पशेमां[6] हो चुका, लोगोंको अब अरमान है।

* * *

मर गये लेकिन न देखा तूने ऊधर आंख उठा,
आह क्या क्या लोग, ज़ालिम! तेरे बीमारोंमें थे।

* * *

आनेका इस चमनमें सबब बेकली हुई,
ज्यूं बर्क़[7] हम तड़पके गिरे आशियान[8] से।

* * *

चाक पर चाक हुआ[9] ज्यूं ज्यूं सिलाया हमने,
इस गरेबां[10] ही से अब हाथ उठाया हमने।

* * *

सी चाके-दिल[11] कि चश्म[12] से, नासिह[13]! लहू थमे,
होता है क्या हमारे गरेबां सिये हुए।
काफ़िर हुए बुतोंकी मुहब्बतमें 'मीर' जी
मसजिदमें आज आये थे क़श्क़ा[14] दिये हुए।

* * *

---

[1]माथा [2]माथा टेकना [3]पुजारीका कर्तव्य [4]संसार [5]देखा देखी [6]पछता चुका [7]बिजली [8]घोंसला [9]फटता ही गया [10]कपडे [11]फटादिल [12]आँख [13]हितेच्छु [14]तिलक।

करो तवक्कुल[1] कि आशिक़ीमें न यूं करोगे तो क्या करोगे,
अलम[2] जो यह है तो दर्दमंदो ! कहां तलक तुम दवा करोगे।
अख़ीरे-उल्फ़त[3] यही नहीं है कि जलके आख़िर हुए पतंगे,
हवा जो यां की यह है तो, यारो ! ग़ुबार[4] होकर उड़ा करोगे।
बला है ऐसा तपीदने-दिल[5] कि सब्र इस पर है सख़्त मुश्किल,
बिसात इतना कहां रहेगा कि दस्त-बर-दिल[6] रहा करोगे।
अगर्चे अब तो ख़फ़ा हो, लेकिन मुए गये[7] पर कभू हमारे,
जो याद हमको करोगे प्यारे तो हाथ अपने मला करोगे।

* * *

सुन कान खोल कर कि तनिक जल्द आंख खोल,
ग़ाफ़िल यह ज़िन्दगानी फ़साना[8] है, ख़्वाब है।

* * *

अल्लारे, यह दीदादराई[9] ! हों न मुकद्दर[10] क्योंकर हम,
आंखें हमसे मिलाये गये फिर ख़ाकमें हमको मिलाये गये।
मरनेसे क्या, 'मीर' जी साहब ! हमको होश था क्या करिए,
जी से हाथ उठाये गये पर उससे दिल न उठाये गये।

* * *

इधरसे अब्र[11] उठकर जो गया है,
हमारी ख़ाक पर भी रो गया है।
सिरहाने 'मीर' के कोई न बोलो,
अभी टुक रोते रोते सो गया है।

* * *

---

[1]सन्तोष [2]रंज [3]प्रेमकी पराकाष्ठा [4]मिट्टी, धूल [5]दिलका तड़पना [6]दिल पर हाथ रखे [7]मरने पर [8]कहानी [9]बेशर्मी [10]नाराज़ [11]बादल।

उम्र भर हम रहे शराबीसे,
दिले-पुरख़ूं[1] की इक गुलाबी[2] से।
जी ढहा जाय है सहर[3] से, आह!
रात गुजरेगी किस ख़राबीसे।
खिलना कम कम कलीने सीखा है,
उसकी आंखोंकी नीम-ख़्वाबी[4] से।

* * *

गर दिल है यही मुज़तरिबुलहाल[5] तो ऐ मीर!
हम ज़ेरे-ज़मी[6] भी बहुत आराम करेंगे!!

* * *

---

[1]ख़ूनभरा दिल [2]सुरापात्र [3]सुबह [4]अधनींदापन [5]तड़पता हुआ [6]ज़मीनके नीचे।

दूसरा दीवान

लज्जतसे नहीं ख़ाली जानोंका खपा जाना,
कब ख़िज्रो-मसीहा[1] ने जीनेका मजा जाना।
ऐ शोरे-क़यामत[2] ! हम सोते ही न रह जायें,
इस राहसे निकले तो हमको भी जगा जाना।

* * *

पाये ख़िताब[3] क्या क्या देखे अताब[4] क्या क्या,
दिलको लगाके हमने खींचे अज़ाब[5] क्या क्या।
इक आग लग रही है सीनेमें, कुछ न पूछो,
जल जलके हम हुए हैं उस बिन कबाब क्या क्या।

* * *

उसके गये पे दिलकी ख़राबी न पूछिए,
जैसे किसूका कोई नगर हो लुटा हुआ।
कहता था 'मीर' हाल तू जबतक, तो था भला,
कुछ ज़ब्त करते करते तिरा हाल क्या हुआ।

* * *

तक़सीर[6] जान देनेमें हमने कभू न की,
जब तेग़[7] वह बुलंद[8] हुई, सर झुका दिया।
अब घुटते घुटते जानमें ताक़त नहीं रही,
टुक लग चली सबा[9] कि दिया सा बढ़ा दिया।

---

[1] (यह दो व्यक्ति अमर मान गये है) [2] प्रलयका गर्जन [3] उपाधियां
[4] गुस्सा [5] कष्ट [6] भूल [7] तलवार [8] ऊंची [9] ठंडी हवा।

क्या क्या जियान[1] 'मीर' ने खींचे हैं इश्क़में,
दिल हाथसे दिया है जुदा, सर जुदा दिया।

* * *

खो ही रहा न जानको ना आजमूदःकार[2],
होता न 'मीर' काश तलबगार इश्क़का।

* * *

शायद जिगर गुदाख़्ता[3] इक लख़्त[4] हो गया,
कुछ आबे-दीदा[5] रातसे ख़ूनाब[6] सा हुआ।

* * *

इस लुत्फ़से न ग़ुंच-ए-नर्गिस[7] कभू खिला,
खुलना तो देख उस मिज़ा-ए-नीमबाज़[8] का।
फिर 'मीर' आज मस्जिदे-जामअके थे इमाम,
बादे-शराब धोते थे कल जा-नमाज़ का।

* * *

लगा था रोग जबसे यह, तभीसे,
असर मालूम था हमको दवा का।

* * *

क्या लुत्फ़ है जिये जो बुरे हाल कोई 'मीर',
जीनेसे तूने हाथ उठाया भला किया।

* * *

मुद्दत हुई कि दिलसे क़रारो-सकूं[9] गये,
रहता है अब तो आठ पहर इज़्तराब[10] सा।

* * *

---

[1]हानि [2]अनुभवहीन [3]पिघला हुआ [4]एकदम [5]आँसू [6]खून [7]नर्गिसकी कली [8]अधमुदी पलक [9]चैन [10]बेचैनी।

इक आन इस ज़मानेमें यह दिल नवा[1] हुआ,
क्या जानिए कि 'मीर' ज़मानेको क्या हुआ।
ज़ाहिरको गो दुरुस्त रखा मरके मैं, वले[2],
दिलका लगाव कोई रहा है छिपा हुआ।
सोज़िश[3] वही थी छातीमें मरने तलक मिरे,
अच्छा हुआ न दाग़ जिगरका लगा हुआ।

* * *

ज्यूं बर्क़[4] हमको हँसते न देखा किसूने आह,
पाया तो अब्र[5] सा, कहीं रोता खड़ा हुआ।

* * *

पांवके नीचे की मिट्टी भी न होगी हम सी,
क्या कहें उम्रको इस तरह बसर हमने किया।
खा गया नाख़ुने-सरतेज़[6] जिगर दिल दोनों,
रातकी सीना ख़राशी[7] में हुनर हमने किया।

* * *

काहेको मैंने 'मीर' को छेड़ा कि उनने आज,
यह दर्दे-दिल कहा कि मुझे दर्दे-सर हुआ।

* * *

इश्क़की सोज़िशने दिलमें कुछ न छोड़ा, क्या कहें,
लग उठी यह आग नागाही[8] कि सब घर फुक गया।

* * *

---

[1]खुला [2]लेकिन [3]जलन [4]बिजली [5]बादल [6]तेज़ नाखून [7]छाती नोचना [8]अचानक।

आख़िर ज़मानासाज़ी[1]से खोया न वक़्[2] 'मीर',
यह इख़्तियार तुमने किया रोज़गार क्या।

* * *

फिर आज यह कहानी कल शब[3] पे रह गयी है,
सोता न रहता टुक, तो क़िस्सा ही मुख़्तसर था।
था वह भी इक ज़माना जब नाले आतशीं[4] थे,
चारों तरफ़से जंगल जलता दहर दहर था।

* * *

जी रुक गये, ऐ हमदम[5]! दिल ख़ून हो भर आया,
अब ज़ब्त करें कब तक मुंह तक तो जिगर आया।

* * *

यार है 'मीर' का मगर[6] गुल सा,
कि सहर[7] नालाकश है[8] बुलबुल सा।

* * *

हमारी ख़ाक पे इक बेकसी बरसती है,
इधरसे अब्र[9] जब आया तो अश्कबार[10] हुआ।

* * *

उससे यूं गुलने रंग पकड़ा है,
शमअसे जैसे लें चिराग़ लगा।

* * *

जी देते हैं मरने पर सब शहरे-मुहब्बतमें,
कुछ सारी ख़ुदाईसे यह तौर नया देखा।

* * *

---

[1]चाल [2]सम्मान [3]रात [4]आग भरे [5]साथी [6]शायद [7]सुबह [8]रोता हुआ [9]बादल [10]आंसू बहाता हुआ।

जीसे जाना बन गया उस बिन हमें पल मारते,
काम तो मुश्किल नज़र आता था पर आसां हुआ।

* * *

ग़ैरत[1] से 'मीर' साहब सब जज़्ब[2] हो गये थे,
निकला न बूंद लोहू सीना जो उनका चीरा।

* * *

आंसू गिरा न राज़े-मुहब्बत[3] का पास[4] कर,
मैं जैसे अब्र[5] बरसों तईं दिल भरा फिरा।

* * *

इश्क़ने क्या क्या तसर्रुफ़[6] यां किये हैं आजकल,
चश्मको पानी किया सब, दिलको सब लोहू किया।

* * *

वे दिन गये जो यां कभू उठता था दिलसे जोशसा,
अब लग गये रोने जहां पल मारते दरिया हुआ।

* * *

उड़ती है ख़ाक या रब! शामो-सहर[7] जहां में,
किसके ग़ुबारे-दिल[8] से यह ख़ाकदां[9] बनाया।

* * *

कहते न थे कि साहब इतना कुढ़ा न करिए,
इस ग़मने 'मीर' तुमको जी से निदान मारा।

* * *

---

[1]शर्म [2]सूखा [3]प्रेमका भेद [4]लिहाज़ [5]बादल [6]नयी बातें
[7]सुबह शाम [8]दिलकी मिट्टी (दुख) [9]मिट्टी रखनेका वर्तन (दुनिया)।

एक ढेरी राखकी थी सुबह जाए-'मीर'[1] पर,
बरसोंसे जलता था, शायद रात जल कर रह गया।

* * *

यह रफ़्तगी[2] भी होती है ? जी ही चला गया,
कल हाले-'मीर' देख के ग़श मुझको आगया।
आंसू तो डरसे पी गये, लेकिन वह क़तरा-आब[3],
इक आग तन बदनमें हमारे लगा गया।
क्या पूछते हो, दाग़ किया मर्गे-'मीर'[4] ने,
मरकर वह सीना-सोख़्ता[5] छाती जला गया।

* * *

नाम उसका सुनके आंसू गिर ही पड़े पलकसे,
दिलका लगाव यारो ! छिपता नहीं छिपाया।
था लुत्फ़े-ज़ीस्त[6] जिनसे, वे अब नहीं मयस्सर[7],
मुद्दत हुई कि हमने जीनेसे हाथ उठाया।

* * *

बेख़ुदी[8] ले गई कहां हमको,
देरसे इंतज़ार है अपना।
रोते फिरते हैं सारी सारी रात,
अब यही रोज़गार है अपना।
देके दिल हम जो हो गये मजबूर,
इसमें क्या इख़्तियार है अपना।
जिसको तुम आसमान कहते हो,
सो दिलोंका ग़ुबार है अपना।

* * *

---

[1]मीरकी जगह [2]जाना [3]पानीकी बूंद [4]मीरकी मौत [5]दिल जला
[6]जीनेका मज़ा [7]प्राप्त [8]आत्मविस्मृति।

क्या कहें ? कुछ कहा नहीं जाता,
अब तो चुप भी रहा नहीं जाता।

* * *

रुंधे इश्क़में कोई यूं कब तलक,
जिगर आह मुंह तक तो आने लगा।

* * *

कहते न थे 'मीर' मत कुढ़ा कर,
दिल हो न गया गुदाज़[1] तेरा ?

* * *

वसीयत 'मीर'ने मुझको यही की,
कि सब कुछ होना तू, आशिक़ न होना।

* * *

सद शुक्र कि दाग़ेदिल अफ़सुर्दा[2] हुआ वरना,
यह शोला[3] भड़कता तो घरबार जला जाता।
कहते तो हो, यूं कहते यूं कहते, जो वह आता,
सब कहनेकी बातें है, कुछ भी न कहा जाता।

* * *

की ज़िंदगी सो वह की, मुए[4] अब सो इस तरह,
जो काम 'मीर'जीने किया सो कुढब किया।

* * *

बहुतोंने चाहा कहिए पे कोई न कह सका,
अहवाल आशिक़ीका मिरी गो-मगो[5] रहा।

---

[1]पिघला हुआ [2]मुरझाया [3]लपट [4]मरे [5]कहें या न कहें, अनिश्चित।

जब रात सर पटकनेने तासीर कुछ न की,
नाचार 'मीर' मंडकरी सी मार सो रहा।

* * *

लड़ गयीं आंखें, उठायी दिलने चोट,
यह तमाशाई अबस[1] घायल हुआ।

* * *

मुए[2] ही रहनी थी इज्जत मिरी मुहब्बतमें,
हलाक[3] आपको करता न मैं, तो क्या करता।

* * *

बंधा रात आंसूका कुछ तारसा,
हुआ अब्रे-रहमत[4] गुनहगारसा।
मुहब्बत है या कोई जीका है रोग,
सदा मैं तो रहता हूं बीमारसा।
मगर[5] आंख तेरी भी चिपकी कहीं,
टपकता है चितवनसे कुछ प्यारसा।

* * *

सैकड़ों बेकसोका जान गया,
पर यह तेरा न इम्तहान गया।
कल न आनेमें एक यां तेरे,
आज सौ सौ तरफ गुमान गया।
कौन जीसे न जायगा ऐ 'मीर',
हैफ़[6] यह है कि तू जवान गया।

* * *

तड़पे है जब कि सीनेमें उछले है दो दो हाथ,
गर दिल यही है 'मीर' तो आराम हो चुका।

* * *

---

[1]बेकार [2]मरे हुए [3]मारा हुआ [4]कृपाघन [5]शायद [6]अफ़सोस।

हमारे देखते जेरे-नगीं[1] था मुल्क सब जिनके,
कोई अब नाम भी लेता नहीं उन मुल्क-गीरों[2] का।

* * *

जी ही जाते सुने हैं इश्कके मशहूर हुए,
क्या किया हमने, कि इस राज[3] को इजहार[4] किया।
'मीर' ऐ काश जबां बंद रखा करते हम,
सुबहके बोलनेने हमको गिरफ्तार किया।

* * *

बहुत रफ़्ता[5] रहते हो तुम उसके अब,
मिज़ाज आपका 'मीर' कीधर गया।

* * *

बहुत रोये हम शबनमो-गुल[6] को देख,
कि चस्पां[7] हमें भी कहीं प्यार था।

* * *

दिल गया मुफ़्त, और दुख पाया,
होके आशिक बहुत मैं पछताया।

* * *

तुमको जीता रखे खुदा ऐ बुतां!
मर गये हम तो करते करते वफ़ा।

* * *

अंदोहो-ग़म[8] के जोशसे दिल रुकके खूं हुआ,
अबके मुझे बहारसे आगे[9] जुनूं हुआ।

* * *

---

[1]मातहत [2]बादशाहों [3]भेद [4]स्पष्ट [5]दीवाने [6]ओस और फूल [7]लगा हुआ [8]रंज दुख [9]पहले।

बस अब न मुंह खुलाओ हमारा, ढके रहो,
महशर[1]को हम सवाल करें, तो जवाब क्या?

* * *

ऐ नुकीले! ये थी कहांकी अदा,
खुप गयी जीमें तेरी बांकी अदा।
जादू करते है इक निगाहके बीच,
हाय रे चश्मे-दिलबरां[2]की अदा।
बात करनेमे गालियां दे है,
सुनते हो मेरे बदज़बां[3]की अदा।
ख़ाकमें मिलके 'मीर' हम समझे,
बेअदाई[4] थी आसमांकी अदा।

* * *

मैं तो अफ़सुर्दा[5] हर चमन[6]में फिरा,
ग़ुंच-ए-दिल[7] मिरा कहीं न खिला।

* * *

तर्ज़े-निगह[8]से उसकी बेहोश क्या हूं मैं ही,
उन मस्त अंखड़ियोंने बहुतेरोंको सुलाया।

* * *

समुंदरका मैं क्यों अहसां सहूंगा,
मिरे आसू नहीं? उनपर बहूंगा।
न तू आवे, न जावे बेक़रारी,
यूं ही इक दिन, सुना, मैं मर रहूंगा।

---

[1]क़यामत (खुदाके आगे जवाब देनेका दिन) [2]सुदर लोगोंकी आंख [3]कड़वे वचन बोलनेवाला [4]दुश्मनी [5]मुर्झाया [6]बाग़ [7]दिलकी कली [8]देखनेका ढंग।

तिरे ग़म[1]के हैं ख़्वाहां[2] सब, न खा ग़म,
कमी क्या होगी जो इक मैं न हूंगा।

* * *

'मीर'की नब्ज़ पे रख हाथ लगा कहने तबीब[3],
आजकी रात यह बीमार नहीं जीनेका।

* * *

इश्क़ से दिल, यह ताज़ा दाग़, जला,
इस सियहख़ाने[4]में चिराग़ जला।
'मीर'की गर्मी[5] तुमसे अचरज है,
किससे मिलता है यह दिमाग़ जला।

* * *

तारेसे मेरी पलकों पे क़तरे[6] सरश्क[7] के,
देते रहे हैं 'मीर' दिखाई तमाम शब[8]।

* * *

शेर पढ़ते फिरते हैं सब 'मीर' के,
इस क़लमरौ[9] में है उनका दौर अब।

* * *

फूल इस चमनके देखते क्या क्या झड़े हैं हाय,
सैले-बहार[10] आंखोंसे मेरी रवां[11] है अब।

* * *

जैसा मिज़ाज आगे था मेरा सो कब है अब।
हर रोज़ दिलको सोज़[12] है हर शब तअब[13] है अब।

---

[1]प्रेम [2]इच्छुक [3]चिकित्सक [4]अंधेरा घर [5]प्यार
[6]बूंदे [7]आँसू [8]रात [9]राज्य [10]बसन्तकी बाढ़ [11]जारी [12]जलन [13]रंज।

सुध कुछ संभालते ही वह मग़रूर[1] हो गया,
हर आन बेदिमाग़ी[2] वह हरदम ग़ज़ब है अब।

* * *

उस आफ़ताबे हुस्न[3] के जल्वे[4] की किसको ताब[5],
आंखें उधर कियेसे भर आता है यूं ही आब[6]।
गुज़रे है 'मीर' लोटते दिन रात आगमें,
है सोज़े-दिल[7] से ज़िंदगी अपनी हमें अज़ाब[8]।

* * *

जो कहो तुम, सो है बजा साहब,
हम बुरे ही सही भला साहब।
फिर गयीं आंखें, तुम न आन फिरे,
देखा तुमको भी वाह वा साहब।
शौक़े-रुख़,[9] यादे-लब[10], ग़मे-दीदार[11],
जीमें क्या क्या भिरे रहा साहब।
किसने सुन शेरे-'मीर' यह न कहा,
कहियो फिर, हाय क्या कहा साहब।

* * *

अजब सुहबत है क्योंकर सुबह अपनी शाम करिए अब,
जहां टुक आन बैठे हम, कहा आराम करिए अब।
ज़बाने-ख़ामा[12] हिलते ही हज़ारों अश्क गिरते हैं,
हक़ीक़त अपने दिलकी आह क्या अरक़ाम[13] करिए अब।

* * *

---

[1]गर्वीला [2]ग़ुस्सा [3]सौन्दर्यका सूर्य [4]चमक [5]ताक़त [6]पानी [7]दिलकी जलन [8]मुसीबत [9]चेहरेका प्रेम [10]होंठकी याद [11]न देखनेका दुःख [12]क़लमकी ज़बान [13]लिखना।

अचरज यह है कि मुतलक़[1] कोई नहीं है ख़्वाहां[2],
जिंसे-वफ़ा अगर्चे है बहुत ही कमयाब[3]।

* * *

यह किस आशुफ़्ता[4] की जमईयते-दिल[5] थी मंजूर,
बाल बिखरे तिरे मुंह पर कहे हैं रातकी बात।

* * *

जब तक मिले जुलेसे जफ़ाएं थीं, उठ सकीं,
करने लगे हो अब तो सितमगारियां बहुत।
आज़ार[6] में तो इश्क़के जाता है भूल जी,
यूं तो हुई थीं यादमें बीमारियां बहुत।

* * *

देख ख़ाली जा कहेंगे बरसों अहले-रोज़गार[7],
'मीर' अक्सर दिलका क़िस्सा यां बयां करता था रात।
सर गुलने फिर झुकाके उठाया न शर्मसे,
गुलज़ार[8] में चली थी कहीं रुबरू[9] की बात।

* * *

बुलबुल के बोलनेसे है क्यों बे दिमाग़[10] गुल[11],
आपसमें यूं तो होती है यारो हज़ार बात।
आहू[12] को उसकी चश्मे-सुख़नगो[13] से मत मिला,
शहरीसे कर सके है कहीं भी गंवार बात।

---

[1]बिल्कुल [2]इच्छुक [3]अलभ्य [4]दुखी [5]तसल्ली [6]रोग [7]दुनियावाले [8]बाग़ [9]आमना सामना [10]नाराज़ [11]फूल [12]हिरन [13]बोलती आँख।

यूं बारे-गुल[1] से अबकी झुके है निहाले-बाग़[2],
झुक झुक के जैसे करते हैं दो चार यार बात।
यूं चुपके चुपके 'मीर' तलफ़[3] होगा कबतलक,
कुछ होवे, भिड़कर उससे भी कर एक बार बात।

* * *

कहते थे उससे मिलिए तो क्या क्या न कहिए लेक[4],
वह आगया तो सामने उसके न आयी बात।
अब मुझ जईफ़ो-ज़ार[5] को कुछ मत कहा करो,
जाती नहीं है मुझसे किसूकी उठायी बात।

* * *

हम उठे रोते तो ली गरदूं[6] ने फिर राहे-गुरेज़[7],
बैठ जावेगा यह मातमख़ाना[8] बामो-दर[9] समेत।

* * *

दिलकी वैसी ही ख़राबी कसरते-अंदोहसे[10],
जैसे रह पड़ता है दुश्मनका कहीं लश्कर बहुत।
सख़्त कर जी क्योंकि यकबारी करें हम तर्के-शह्र[11],
इन गली कूचोंमें हमने खाये हैं पत्थर बहुत।
कम मुझीसे बोलना, कम आंख मुझपर खोलना,
अब इनायत यारकी रहती है कुछ ईधर बहुत।
क्या सबब है अब मकां पर जो कोई पाता नहीं,
'मीर' साहब आगे तो रहते थे अपने घर बहुत।

* * *

---

[1]फूलका बोझ [2]बाग़का पौधा [3]ख़त्म [4]किंतु [5]अशक्त [6]आसमान [7]पलायन [8]रंजकी जगह [9]छत और दीवार [10]दुखकी अधिकता [11]शहर छोड़ना।

मलामतगर[1] ! न मुझको कर मलामत[2],
जलेको और तू इतना जला मत।
बहुत रोनेने रुसवा कर दिखाया,
न चाहत की छिपी मुझसे अलामत[3]।

* * *

सरसरी मत जहां[4] से जा ग़ाफ़िल,
पांव तेरा पड़े जहां टुक सोच।
फैल इतना पड़ा है क्यों यां तू,
यार अगले गये कहां, टुक सोच।
फ़ायदा सर झुकेका शैब[5] में 'मीर',
पीरी[6] से आगे, ऐ जवां ! टुक सोच।

* * *

दिल खो गया हूं मैं नहीं दीवानापनके बीच,
तुम भी तो देखो जुल्फ़े-शिकन-दर-शिकन[7] के बीच।
सर सब्ज़ हिंदमें ही नहीं कुछ यह रेख़्ता[8],
है धूम मेरे शेरकी सारे दकनके बीच।
सुथराई और नाजुकी गुलबर्ग[9]की, दुरुस्त,
पर वैसी बू कहां कि जो है उस बदनके बीच।
फ़रहादो-क़ैसो-मीर ये आवारगाने-इश्क़,
यूंही गये हैं, सबकी रही मनकी मनके बीच।

* * *

इश्क़ है जिसको तिरा उससे तू रख दिलको जमा[10],
ज़िंदगीकी नहीं उम्मेद इस आज़ार[11] के बीच।

---

[1]बुरा भला कहनेवाला [2]फटकार [3]चिह्न [4]संसार [5]बुढ़ापा [6]बुढ़ापा [7]घुंघराले बाल [8]उर्दू [9]पंखुड़ी [10]संतुष्ट [11]रोग।

बीदनी[1] दश्ते-जुनूं[2] है, कि फफोले पा[3] के,
मैंने मोतीसे पिरो रक्खे हैं हरख़ारके बीच।
परदा उठता है तो फिर जान पै आ बनती है,
ख़ूबी[4] आशिक़की नहीं इश्क़के इज़हार[5] के बीच।
आती है ख़ूनकी बू दोस्ती-ए-यारके बीच,
जी लिए उनने हज़ारोंके यूं ही प्यारके बीच।
चाल क्या कब्क[6] की, इक बात चली आती है,
लुत्फ़ निकले हैं हज़ारों तिरी रफ़्तारके बीच।
हुल्क़-ए-गेसूए-ख़ूबां[7]पे न कर चश्म[8] को वा[9],
'मीर' अमरत नहीं होता दहने-मार[10]के बीच।

* * *

बोरे-गरबूं[11] से हुई कुछ और मैख़ाने[12] की तर्ह[13],
भर न आवें मेरी आंखें क्यों कि पैमाने[14] की तर्ह।
चश्मके-अंजुम[15] में इतनी दिलकशी[16] आगे न थी,
सीख ली तारोंने उसको आंख झमकानेकी तर्ह।

* * *

तुझ बिन, ऐ नौबहारके मानिंद[17]!
चाक[18] है दिल अनारके मानिंद।
पहुंची शायद जिगर तक आतशे-इश्क़[19],
अश्क[20] हैं सब शरार[21]के मानिंद।

---

[1]देखने योग्य [2]जंगल [3]पांवँ [4]भलाई [5]प्रकट होना [6]चकोर [7]सुन्दर लोगोके बालोंकी घूघर [8]आंख [9]खुला [10]सांपका मुह [11]आसमानका चक्कर [12]मद्यगृह [13]शान [14]सुरापात्र [15]सितारोंका झपकना [16]आकर्षण [17]भांति [18]फटा [19]प्रेमज्वाला [20]आंसू [21]चिनगारी।

बर्क़[1] तड़पी बहुत, वले[2] न हुई,
इस दिले-बेक़रारके मानिंद।

* * *

लोहू आंखोंमें अब नहीं आता,
ज़ख़्म अब दिलके भर गये शायद।
बेकली भी क़फ़स[3] में है दुश्वार,
कामसे बालो-पर गये शायद।
शोर बाज़ारसे नहीं उठता,
रातको 'मीर' घर गये शायद।

* * *

कुछ हो रहेगा इश्को-हविसमें भी इम्तियाज़[4],
आया है अब मिज़ाज तिरा इम्तहान पर।

* * *

कुछ ख़ूब[5] नहीं इतना सताना भी किसूका,
है 'मीर' ग़रीब, उसको मत आज़ार[6] दिया कर।

* * *

क्या कहिए हाल दिलका जुदाईकी रातमें,
गुज़री है कब कहानी कहे से, यह शब[7] है और।

* * *

जो रुक गया कहीं तो फिर होयेगा अंधेरा,
मत छेड़ अब्र[8] मुझको यूंही बरस बरस कर।

* * *

इस तौरसे तुम्हारे तो मरते नहीं हैं हम,
अब वास्ते हमारे निकालो जफ़ा[9] कुछ और।

* * *

---

[1]बिजली [2]किन्तु [3]पिंजड़ा [4]भेद करना [5]अच्छा [6]दुख [7]रात [8]बादल [9]अत्याचार।

गुल[1] को होता, सबा[2] ! क़रार ऐ काश,
रहती इक आध दिन बहार ऐ काश।
बे अजल[3] 'मीर' अब पड़ा मरना,
इश्क़ करते न इख़्तियार ऐ काश।

* * *

इश्क़की रह[4] न चल, ख़बर है शर्त,
अव्वले-गाम[5] तर्के-सर[6] है शर्त।
दावए-इश्क़ यूं नहीं सादिक़[7],
ज़र्दी-ए-रंगो-चश्मे-तर[8] है शर्त।
दिलका देना है सहल क्या ऐ 'मीर',
आशिक़ी करनेको जिगर है शर्त।

* * *

क्या इश्क़े-ख़ाना-सोज़[9] के दिलमें छिपी है आग,
इक सारे तन बदनमें मिरे फुक रही है आग।
जल जलके सब इमारते-दिल ख़ाक हो गयी,
कैसे नगरको आह मुहब्बतने दी है आग।

* * *

कुछ न पूछो, बहक रहे हैं हम,
इश्क़की मै[10] से छक रहे हैं हम।
लाख ग़मसे हुए हैं कांटासे,
पर दिलोंमें खटक रहे हैं हम।
वक़्फ़-ए-मर्ग[11] अब ज़रूरी है,
उम्र तें करते थक रहे हैं हम।

* * *

---

[1]फूल [2]ठंडी हवा [3]मौत [4]राह [5]पहला क़दम [6]सर खोना [7]सच्चा [8]मुहका पीलापन और भीगी आँख [9]घर फूंकनेवाला प्रेम [10]शराब [11]मृत्यु रूपी अवकाश।

उठाते हाथ क्यों नौमेद[1] होकर,
अगर पाते असर कुछ हम दुआमें।

* * *

हथेलीमें लगायी उसने मेंहदी,
भरीं लोहूमें बहुतेरोंकी जानें।

* * *

मुद्दत हुई कि अपनी खबर कुछ नहीं हमें,
क्या जानिए कि 'मीर' गये हम किधरके तईं।

* * *

आतिशे-इश्क़ने रावनको जलाकर मारा,
गर्चे लंका सा था उस देवका घर पानीमें।
जोशिशे-अश्क[2] में सब दिल भी गया सीनेसे,
कुछ न मालूम हुआ हाय असर पानीमें।

* * *

करते हैं जो कि जीमें ठाने हैं,
खूबरू[3] किसकी बात माने हैं।
जा हमें उस गलीमें गिर रहना,
जोफ़ो-बेताक़ती[4] बहाने हैं।
इश्क़ करते हैं उस परीरू[5] से,
'मीर' साहब भी क्या दिवाने हैं।

* * *

हमसे नाकस[6] तो बहुत फिरते हैं जौं देते वले[7],
जलमे-तेरा उसके उठानेके सज़ावार[8] कहां।

---

[1]निराश [2]आंसूकी बाढ़ [3]सुदर लोग [4]निर्बलता [5]सुंदर [6]क्षुद्र [7]लेकिन [8]योग्य।

डूबा लोहूमें पड़ा था हमगीं-पैकर[1] 'मीर',
यह न जाना कि लगी ज़ुल्मकी तलवार कहां।

* * *

फ़िराक़[2] आंख लगनेकी जा[3] ही नहीं,
पलकसे पलक आशना[4] ही नहीं।
मुहब्बत जहांकी तहां हो चुकी,
कुछ इस रोगकी भी दवा ही नहीं।

* * *

रहा तू तो अक्सर अलमनाक[5] 'मीर',
तिरा तौर कुछ ख़ुश न आया हमें।

* * *

हिज्रकी कोफ़्त जो खींचे हैं उन्हींसे पूछो,
दिल दिये जाते हैं, जी अपना लिए जाते हैं।

* * *

बेताक़तीमें शब[6] की पूछो न जब्त मेरा,
हाथोंमें दिलको रक्खा दांतों तले जिगरको।
नज़दीक है कि जावें हम आपसे, अब आओ,
मिलते हैं दोस्तोंसे जाते हुए सफ़रको।
कब 'मीर' अब्र[7] वैसा बरसावे कर अंधेरी,
जैसा कि रोते हमने देखा है चश्मे-तर[8] को।

* * *

यही मशहूरे-आलम[9] हैं दो-आलम[10],
ख़ुदा जाने मिलाप उससे कहां हो।

---

[1]बदन भर [2]वियोग [3]जगह [4]परिचित [5]रंजीदा [6]रात [7]बादल [8]भीगी आँख [9]संसार प्रसिद्ध [10]लोक और परलोक।

जहां सजदे[1] में हमने ग़श किया था,
वहीं शायद कि उसका आस्तां[2] हो।
सुना है चाहकां दावा तुम्हारा,
कहो जो कुछ कि चाहो, मेहरबां हो।
हुए हम पीर[3], सो साकित[4] है अब 'मीर',
तुम्हारी बात क्या है, तुम जवां हो।

* * *

क्या उसके गये है ज़िक्र दिलका,
वीरान पड़ा है यह मकां तो।
क्या इससे रखें उमेदे-बहबूद[5],
फिरता है ख़राब आसमां तो।
मत तुरबते-'मीर'[6] को मिटाओ,
रहने दो ग़रीबका निशां तो।

* * *

दो नारों में ही सबके होगा मकान हू' का,
सुन रक्खो कान रखकर यह बात बस्ती वालो।
यारानें-रफ़्ता[7] ऐसे क्या दूरतर[8] गये है,
टुक करके तेज़ गामी[9] इस क़ाफ़िलेको जा लो।
बाज़ारी सारे वे ही कहते है राज़[10] बैठे,
जिनको हमीं कहा है तुम मुंहसे मत निकालो।
यूं रफ़्ता[11] और बेख़ुद[12] कब तक रहा करोगे,
तुम अब भी 'मीर' साहब अपने तईं संभालो।

* * *

---

[1]सर झुकाना [2]चौखट [3]बूढ़ा [4]चुप [5]भलाईकी उम्मेद [6]मीरकी क़ब्र [7]सुनसान [8]गुज़रे हुए साथी [9]अधिक दूर [10]जल्दी चलना [11]भेद [12]दीवानें [13]आत्म विस्मृत।

बारे[1] गयी सो गुज़री, जी भर भर आते हैं क्या,
आयंदा 'मीर' साहब दिल मत कहीं लगाओ।

* * *

आंखोंसे हुई ख़ानाख़राबी-ए-दिल[2], ऐ काश,
कर लेते तभी बन्द हम इन दोनों दरों[3] को।
सब तायरे-क़ुदसी[4] हैं जो यह ज़ेरे-फ़लक हैं,
मूंदा है कहां इश्क़ने इन जानवरोंको।
पैराहने-सदचाक[5] सिलाते हैं मिरा लोग,
तहसे नहीं मुतलक़[6] ख़बर इन बेख़बरोंको।

* * *

याद जब आती है वह ज़ुल्फ़े-सियाह,
सांप सा छाती पे फिर जाता है आह!
दीन[7] में उस क़ाफ़िरे-बेरहम के,
अज्र[8] इक रखता है ख़ूने-बेगुनाह।
जब्त बहुतेरा ही करते हैं वले,
आह इक मुंह से निकल जाती है गाह।

* * *

वक़्त कुढ़नेके हाथ दिल पर रख,
जान जाती रहे न आहके साथ।
जाज़बा[9] तो उन आंखोंका देखा,
जी खिंचे जाते हैं निगाहके साथ।
'मीर' से तुम बुरे ही रहते हो,
क्या शरारत है ख़ैरख़्वाहके साथ।

* * *

---

[1]ख़ैर [2]दिलकी बरबादी [3]दरवाजों [4]दैवी पक्षी [5]बहुत फटा कपड़ [6]बिल्कुल [7]धर्म [8]पुण्य [9]आकर्षण।

जागना था हमको, सो बेदार[1] होते रह गये,
कारवां जाता रहा हम हाय सोते रह गये।
जी दिये बिन वह दुरे-मक़सूद[2] कब पाया गया,
बेजिगर थे 'मीर' साहब जान खोते रह गये।

* * *

हमेशा चश्म[3] है नमनाक[4] हाथ दिल पर है,
ख़ुदा किसूको न हमसा भी दर्द मंद करे।

* * *

काबेमे जांबलब[5] थे हम दूरी-ए-बुतां[6] से,
आये हैं फिरके यारो अबकी ख़ुदाके यांसे।
जब कौंधती है बिजली तब जानिबे-गुलिस्तां[7],
रखती है छेड़ मेरे ख़ाशाके[8]-आशियां[9] से।
ख़ामोशी हीमें हमने देखी है मसलहत[10] अब,
हर इकसे हाल दिलका मुद्दत कहा जुबांसे।
इतनी भी बदमिज़ाजी हर लहज़ा,[11] 'मीर' तुमको,
उलझाव है जमींसे झगड़ा है आसमांसे।

* * *

अब हम फ़क़ीरजीसे दिलको उठाके बैठे,
उस ख़स्मे-जां[12] के दर पर तकिया लगा के बैठे।
जो कुफ़्र[13] जानते थे इश्क़े-बुतां[14]को, वह ही,
मसजिदके आगे आख़िर क़श्क़ा[15] लगाके बैठे।

---

[1]जागृत [2]इच्छित मोती [3]आंख [4]भीगी [5]मरणोन्मुख [6]प्रियतमों (मूर्तियों) से दूरी [7]बाग़की तरफ़ [8]घासफूस [9]घोंसला [10]भलाई [11]क्षण [12]जानका दुश्मन [13]धर्म विहीनता [14]संसारी (मूर्तियोंका) प्रेम [15]तिलक।

क्या जाने तेग़[1] उसकी कब हो बुलंद,[2] आशिक़,
यूं चाहिए कि हरदम सरको झुकाके बैठे।

* * *

हम आपसे गये, सो इलाही ! कहां गये ?
मुद्दत हुई कि अपना हमें इंतज़ार है।

* * *

मानिंदे-शमअ[3] टपके ही पड़ते हैं अब तो अश्क[4],
कुछ जलते जलते हो गये हैं हम गुदाज़[5] से।

* * *

हमसाए[6] मुझे रातको रोया ही करें हैं,
सोते नहीं बेचारे मिरी नालाकशी[7] से।
तालूसे ज़बां रातको मुतलक़[8] नहीं लगती,
आलम[9] है सियहख़ाना[10] मिरी नौहागरी[11] से।

* * *

'मीर' एक दम न उस बिन तू तो जिया पियारे,
क्या कहके तुझको रोवें, यह क्या किया पियारे।
रंगीन हम तो तुझको ऐसा न जानते थे,
तूने तो आशिक़ोंका लोहू पिया पियारे।

* * *

हुशियार, कि है राह मुहब्बतकी ख़तरनाक,
मारे गये हैं लोग बहुत बेख़बरीसे।

* * *

कुछ करो फ़िक्र मुझ दिवानेकी,
धूम है फिर बहार आनेकी।

---

[1]तलवार [2]ऊंची [3]मोमबत्तीकी तरह [4]आंसू [5]पिघला [6]पड़ोसी [7]रोना [8]बिल्कुल [9]संसार [10]अंधेरा घर [11]रोना।

तेज यूंही न थी सब आतिशे-शौक़[1],
थी ख़बर गर्म उनके आनेकी।

* * *

किसको कहते हैं, नहीं मैं जानता इस्लामो-कुफ़्र[2],
दैर[3] हो या काबा, मतलब मुझको तेरे दरसे है।
बादिए[4] ही मे पड़ा पाते है जब तब तुझको 'मीर',
क्या ख़फ़ा, ए खानुमांबर्बाद[5]! कुछ तू घरसे है।

* * *

लगा रहता है सीनेसे ही, बैठा हूं कि सोता हूं,
ग़रज़ छाती मिरी दाग़े-जुदाईने जला दी है।

* * *

रोता फिरा हूं बरसों लोहू चमन चमनमें,
कूचेमें उसके यकसर गुलकारी हो गयी है।
हमको तो दर्दे-दिल है तुम जर्द[6] क्यों हो ऐसे,
क्या 'मीर' जी तुम्हें कुछ बीमारी हो गई है।

* * *

तपिश[7] से रातकी ज्यूं त्यूं कि जी संभाला है,
नहीं है दिल, कोई दुश्मन बग़लमें पाला है।
हिना[8] से यारका पंजा नहीं है गुलके रंग,
हमारे उसने कलेजोंमें हाथ डाला है।

* * *

क्या सीनेके जलनेको हँस हँसके उड़ाता हूं,
जब आग कोई घरको इस तौर लगा जाने!

---

[1]प्रेमकी ज्वाला [2]इस्लाम और इस्लाम बिमुखता [3]मंदिर
[4]जगल [5]खराब हाल [6]पीला [7]जलन [8]मेंहदी।

आगाह[1] नहीं इंसां, ऐ 'मीर' नविश्ते[2] से,
क्या चाहिए है फिर, जो तालिअ[3] का लिखा जाने।

* * *

फिरते हो 'मीर' साहब सबसे जुदे जुदे तुम,
शायद कहीं तुम्हारा दिल इन दिनों लगा है।

* * *

दिले-बेताब आफ़त है, बला है,
जिगर सब खा गया, अब क्या रहा है।
हमारा तो है अस्ले-मुद्दआ[4] तू,
ख़ुदा जाने तिरा क्या मुद्दआ है।
मुहब्बत-कुश्ता[5] हैं हम, यां किसू पास,
हमारे दर्दकी भी कुछ दवा है?
हरम[6] से दैर[7] उठ जाना नहीं ऐब,
अगर है यां ख़ुदा, वां भी ख़ुदा है।
नहीं मिलता सुख़न[8] अपना किसूसे,
हमारी गुफ़्तगूका ढब जुदा है।

* * *

हो सकती है सद्दे-रह[9] पलकें कहीं रोनेकी,
तिनकोंसे रुके है कब दरिया जो बहा चाहे।

* * *

उस बुतकी क्या शिकायत राहो-रविश[10] की करिए,
परवेमें बदसलूकी हमसे ख़ुदा करे है।

---

[1]जाननेवाला [2]भाग्यका लिखा [3]भाग्य [4]वास्तविक लक्ष्य
[5]प्रेमके मारे [6]काबा [7]मंदिर [8]बात [9]रास्तेकी रुकावट [10]रंगढंग।

गर्म आके एक दिन वह सीनेसे लग गया था,
तबसे हमारी छाती हर शब[1] जला करे है।
क्या चाल यह निकाली हो कर जवान तुमने,
अब जब चलो हो, दिलको ठोकर लगा करे है।

* * *

यार बिन तल्ख़[2] जिंदगानी थी,
दोस्ती मुद्दई[3] की जानी थी।
लुत्फ़ पर उसके, हमनशीं[4]! मत जा,
कभू हमपर भी मेहरबानी थी।
आशिक़ी जो ही ले गयी आख़िर,
यह बला कोई नागहानी[5] थी।

* * *

पैदा कहां हैं ऐसे परागंदा-तबअ[6] लोग,
अफ़सोस तुमको 'मीर' से सुहबत नहीं रही।

* * *

ख़ूबीकी अपनी जन्नत[7] कैसी ही डींगें हांके,
उसकी गलीका साकिन[8] हरगिज़ उधर न झांके।

* * *

क्या जानिए कि इश्क़में ख़ूं हो गया कि दाग़,
छातीमें अब तो दिलकी जगह एक दर्द है।

* * *

वह कहां धूम जो देखी गयी चश्मे-तर[9] से,
अब्र[10] क्या क्या उठे हंगामेसे, क्या क्या बरसे।

---

[1]रात [2]कड़वी [3]दुश्मन, प्रेम प्रतिद्वंदी [4]साथी [5]अचानक [6]दुखी, खीझनेवाला [7]स्वर्ग [8]रहनेवाला [9]भीगी आंख [10]बादल।

यूं तो दस गज़की ज़बां हम भी, बुतां ! रखते हैं,
बातको तूल[1] नहीं देते ख़ुदाके डरसे।
मेह्र[2] की उससे तवक़्क़ो[3] ग़लती थी अपनी,
कहीं दिलदारी[4] हुई भी है किसू दिलबरसे।

* * *

उस आस्तां[5] की दूरी, इस दिलकी नासबूरी[6],
क्या कहिए आह ग़मसे घरके हुए न दर[7] के।

* * *

आह क्या सहल गुज़र जाते हैं जीसे आशिक़,
ढब कोई सीख ले इन लोगोंसे मर जानेका।

* * *

कभू 'मीर' उस तरफ़ आकर जो छाती कूट जाता है,
ख़ुदा शाहिद[8] है, अपना तो कलेजा टूट जाता है।
ख़राबी दिलकी क्या अंबोहे-दर्दो-ग़म[9] से पूछो हो,
वही हालत है जैसे शहर लश्कर लूट जाता है।

* * *

शब[10] जोशे-ग़मसे जिस दम लगता है दिल तड़पने,
हर ज़ख़्मे-सीना उस दम इक चश्मे-तर[11] बने है।
बरसों लगी रहे हैं जब मह्रो-मह[12] की आंखें,
तब कोई हमसा, साहेब ! साहेब-नज़र[13] बने है।
यारानेदैरो-काबा[14] दोनों बुला रहे हैं,
अब देखें 'मीर' अपना जाना किधर बने है।

* * *

---

[1]बढ़ावा [2]कृपा [3]आशा [4]दिल रखना [5]चौखट [6]बेसब्र [7]द्वार [8]गवाह [9]रंजकी ज़्यादती [10]रात [11]भीगी आंख [12]चांद सूरज [13]परखनेवाला [14]मंदिर और काबाके समर्थक मित्र।

इश्क़में अफ़सोस सा अफ़सोस अपना कर चुके,
ज़ेरे-लब[1] कहते रहे हम एक मुद्दत 'हाय रे'!

* * *

ऐ काश! क़िस्सा मेरा हर फ़र्द[2] को सुना दे,
ता दिल किसूसे अपना कोई न यां लगावे।

* * *

इश्क़ आदम[3] में नहीं कुछ छोड़ता,
हौले हौले कोई खा जाता है जी।

* * *

क्या जानिए कि छाती जली है कि दाग़े-दिल,
इक आग सी लगी है कहीं, कुछ धुआं सा है।

* * *

'मीर' दरिया है, सुने शेर ज़बानी उसकी,
अल्ला अल्ला रे तबीयतकी रवानी उसकी।
सरगुज़िश्त[4] अपनी किस अंदोह[5] से सब कहता था,
सो गये तुम, न सुनी आह! कहानी उसकी।
आबले[6] की सी तरह टीस लगी, फूट बही,
दर्दमंदीमें गयी सारी जवानी उसकी।

* * *

जुनूं[7] का अबस[8] मेरे मज़कूर[9] है,
जवानी दिवानी तो मशहूर है।
कहो चश्मे-ख़ूंबार[10] को चश्मे-तर[11],
ख़ुदा जाने कब का ये नासूर है,

---

[1]धीमे धीमे [2]व्यक्ति [3]मनुष्य [4]कहानी [5]दुख [6]छाले [7]प्रेमोन्माद [8]बेकार [9]ज़िक्र [10]खून बरसानेवाली आंख [11]भीगी आंख।

गदा[1] शाह[2] दोनों हैं दिलबाख़्ता[3],
अजब इश्क़बाज़ीका दस्तूर है।
गया शायद उस शमअ-रू[4] का ख़याल,
कि अब 'मीर' के मुंह पे कुछ नूर[5] है।

* * *

जबसे समझा कि हम चलाऊ हैं,
हाल पुरसी[6] टुक आके कर जा है[7]।

* * *

कुढ़ाया किसूको, खपाया किसूको,
बुराई ही की सबसे उस ख़ूबरूने।
तिरी चाल टेढ़ी, तिरी बात रूखी,
तुझे 'मीर' समझा है यां कम किसूने।

* * *

फोड़ डालेंगे सर ही उस दर[8] पर,
मिन्नत उठती नहीं है दरबां[9] की।
आदमीसे मलक[10] को क्या निस्बत,
शान अरफ़अ[11] है 'मीर' इंसांकी।

* * *

कोफ़्तसे जान लब[12] पे आयी है,
हमने क्या चोट दिल पे खाई है।
दीबनी[13] है शिकस्तगी[14] दिलकी,
क्या इमारत ग़मोंने ढायी है।
जिस मरज़में कि जान जाती है,
दिलबरोंकी ही वह जुदाई है।

---

[1]भिखारी [2]राजा [3]दिल हारे हुए [4]दीपक जैसे मुखवाला [5]चमक [6]हाल पूछना [7]जाता है [8]द्वार [9]दरबान [10]फ़रिश्ता [11]ऊंची [12]होंठ [13]देखने योग्य [14]टूटना।

मर्गे-मजनूं[1]से अक़्ल गुम है 'मीर',
क्या दिवानेने मौत पायी है।

* * *

सैर की हमने हर कहीं प्यारे,
फिर जो देखा तो कुछ नहीं प्यारे।
इक नज़र देखनेकी हसरतमें,
आंखें तो पानी हो बहीं प्यारे।
पहुंची है जोफ़[2]से ये अब हालत,
जहां पहुंचा रहा वहीं प्यारे।

* * *

दिल और जिगर दोनों मिरे जलके हुए ख़ाक,
क्या पूछते हो इश्क़ने क्या आग लगायी।

* * *

जल गया दिल मगर ऐसी जो बला निकले है,
जैसे लू, चलती मिरे मुंहपे हवा निकले है।
मुफ़्त दिल क़तर-ए-ख़ूं[3], टुकड़े जिगर हो होकर,
क्या कहूं मैं कि मिरी आंखोंसे क्या निकले है।
मैं जो हर सू[4] लगूं हूं देखने होके मुज़्तर,
आंसू हर मेरी निगह साथ खुपा निकले है।
पारसाई[5] धरी रह जायगी मसजिदमें शेख़!
जो वो इस राह कभू मस्तीमें आ निकले है।
सोज़[6] सीनेका भी दिलचस्प बला है अपना,
दाग़ हो निकले है, छातीसे लगा निकले है।

* * *

---

[1]मजनूंकी मौत [2]निर्बलता [3]खूनकी बूद [4]तरफ़ [5]पवित्रता [6]जलन।

तीसरा दीवान

दिल अगर कहता हूं तो कहता है वह यह दिल है क्या,
ऐसे नादां दिलरुबासे मिलनेका हासिल है क्या।
चोट मेरे दिलमें ऐसी है कि मैं हूं दमबख़ुद[1],
वह कुशिदा[2] यूं नहीं कहता कि तू घायल है क्या।
हम तो सौ सौ बार मर रहते हैं इक इक आनमें,
इश्क़में उसके गुज़रना जानसे मुश्किल है क्या।

* * *

कुछ सुध संभालते ही रखी उनने पगड़ी फिर,
ममनून[3] मैं नहीं हूं जवाबे-सलामका।
साहब हो, मार डालो मुझे तुम, वगर्ना[4] कुछ,
जुज़[5] आशिक़ी गुनाह नहीं है ग़ुलामका।

* * *

एक रहज़न[6] है उसकी काफ़िर ज़ुल्फ़,
ग़म ही रहता है दीनो-ईमांका।
उम्र आवारगीमें सब गुज़री,
कुछ ठिकाना नहीं दिलो-जांका।
मर गया 'मीरे'-नालाकश[7] बेकस,
नैंने मातममें उसके मुंह ढांका।

* * *

---

[1]भौंचक [2]मारनेवाला [3]कृतज्ञ [4]वरना [5]सिवाय [6]डाकू [7]रोनेवाला 'मीर' [8]बांसुरी।

ख़ूं होती रही दिल हीमें आज़ुर्दगी[1] मेरी,
किस रोज़ गिला[2] उसका मेरे ता-ब-लब[3] आया।
जो आंखोंमें आया है जिगर मुंहतईं मेरे,
क्या फ़ायदा यां चलकर अगर यार अब आया।

* * *

क्या काम किया हमने, दिल यूं न लगाना था,
इस जानकी जोखोंको इस वक़्त न जाना था।
क्योंकर गलीसे उसकी मैं उठके चला जाता,
यां ख़ाकमें मिलना था, लोहू में नहाना था।
जब तूने नज़र फेरी तब जान गयी उसकी,
मरना तिरे आशिक़का मरना कि बहाना था।
कहता था किसूसे कुछ, तकता था किसूका मुंह,
कल 'मीर' खड़ा था यां, सच है कि दिवाना था।

* * *

जहांमें 'मीर'से काहेको होते हैं पैदा,
सुना ये वाक़िया[4] जिनने उसे तास्सुफ़[5] था।

* * *

'मीर'को कितने दिनोंसे रहती थी बेताक़ती,
रात दिल तड़पा बहुत, शायद कि मरकर रह गया।

* * *

अगर वह माह[6] निकल घरसे टुक इधर आता,
तो रुकके मुंहतईं काहेको शब[7] जिगर आता।

---

[1]दुख दर्द [2]शिकायत [3]होंठोंतक [4]घटना [5]अफ़सोस [6]चांद [7]रात।

मुरीदे-पीरे-मुग़ां[1] सिद्क़से न हम होते,
जो हक़-शनास[2] कोई और भी नज़र आता।
शराबख़ानेमें शब मस्त हो रहा शायद,
जो 'मीर' होशमें होता तो अपने घर आता।

* * *

करता है वे सलूक अब जिससे कि जान जावे,
हम मीर यूं न मरते उसपर जो दिल न जलता।

* * *

दिलने क्या क्या न रात दर्द दिये,
जैसे पकता रहे कोई फोड़ा।
है लबे-बाम[3] आफ़ताबे-उम्र[4],
करले सो क्या, है 'मीर' दिन थोड़ा।

* * *

'मीर' तीर इन जोर-केशों[5] के जो खाये बेशुमार,
छाती अब छलनी है मेरी, है जिगर छाना हुआ।

* * *

दम न ले उसकी जुल्फ़ोंका मारा,
'मीर' काटा जिये न कालोंका।

* * *

यां शहर शहर बस्ती ऊजड़ ही होते पाये,
अक़लीमे-आशिक़ी[6] में बसता नगर न देखा।

* * *

---

[1]शराबख़ानेके नेताका शिष्य [2]सत्यको पहचाननेवाला [3]डूबता हुआ [4]उम्रका सूरज [5]ज़ालिमों [6]प्रेमका राज्य।

दिलपर तो चोट ही थी, ज़ख़्मी हुआ जिगर सब,
हरदम भरी रहे हैं, लोहूसे चश्मे-तर सब,
दुनियामें हुस्नो-ख़ूबी[1] 'मीर' इक अजीब शै[2] है,
रिंदानो-पारसायां[3] जिसपर रखें नज़र सब।
उस माह बिन तो अपनी दुखमें बसर हुई थी,
कल रात आ गया वह तो दुख गया बिसर सब।

* * *

शेरके पर्देमें मैंने ग़म सुनाया है बहुत,
मरसियेने दिलके मेरे भी रुलाया है बहुत।

* * *

अजब नहीं है न जाने जो मीर चाहकी रीत,
सुना नहीं है मगर[4] यह कि जोगी किसके मीत।
मत इन नमाज़ियोंको ख़ानासाज़े-दीं[5] जानो,
कि एक ईंटकी ख़ातिर यह ढाते हैंगे मसीत[6]।
कहा था हमने बहुत बोलना नहीं है ख़ूब[7],
हमारे यारको सो अब हमींसे बात न चीत।

* * *

ज़ख़्म झेले दाग़ भी खाये बहुत,
दिल लगाकर हम तो पछताये बहुत।
जब न तब जागह[8]से तुम जाया किये,
हम तो अपनी ओरसे आये बहुत।
गर बुका[9] इस शोरसे शब[10]को है तो,
रोवेंगे सोनेको हमसाये बहुत।

---

[1]सौंदर्य [2]चीज़ [3]शराबी और पवित्रात्मा [4]शायद [5]धर्मको बढ़ानेवाले [6]मस्जिद [7]अच्छा [8]जगह [9]रोना [10]रात।

'मीर'से पूछा जो मैं आशिक़ हो तुम?
होके कुछ चुपकेसे शरमाये बहुत।

* * *

गुज़रती है क्या 'मीर' दिलपर तिरे,
तू होता है हर लहज़ा[1] कुछ ज़र्द ज़र्द।

* * *

तड़पे है दिल घड़ीभर तो पहरों ग़श रहे है,
क्या जानूं आफ़त आयी क्या ताक़तो-तवां[2]पर।

* * *

पीस मारा दिल ग़मोंने कूटकर,
क्या उजाड़ा इस नगरको लूटकर।
अब्र[3]से आशोब[4] ऐसा कब उठा,
खूब रोये बीदए-तर[5] फूटकर।
क्यों गरेबांको फिरूं फाड़े न 'मीर',
दामन उसका तो गया है छूटकर।

* * *

नामे-ख़ुदा[6] निकाले क्या पांव रफ़्ता रफ़्ता[7],
तलवारें चलतियां[8] है उसके तो अब चलनपर।
किस तरह 'मीर' जीका हम तौबा करना मानें,
कलतक थे बारा मैं[9]के सब उनके पैरहन[10]पर।

* * *

क़यामत रहा इज़्तराब[11] उसके ग़म[12]में,
जिगर फिर गया रात होठोंपे आकर।

---

[1]क्षण [2]ताक़त [3]बादल [4]तूफ़ान [5]भीगी आंखें [6]भगवान भला करे! [7]धीरे धीरे [8]चलती [9]शराब [10]कपड़े [11]बेचैनी [12]प्रेम।

मुबारक तुम्हें 'मीर' हो इश्क़ करना,
बहुत हम तो पछताये दिलको लगाकर।

* * *

अमीरों तक रसाई[1] हो चुकी बस,
मिरी बख़्त-आज़माई[2] हो चुकी बस।
बहार अबके भी जो गुज़री क़फ़स[3]में,
तो फिर अपनी रिहाई हो चुकी बस।
लगा है हौसला भी करने तंगी,
रामोंका अब समाई हो चुकी बस।
दुनी[4]के पास कुछ रहती है दौलत,
हमारे हाथ आयी हो चुकी बस।
गलेमें गेरुई कफ़नी है अब 'मीर',
तुम्हारी मीरजाई[5] हो चुकी बस।

* * *

दिल जला, आंखें जलीं, जी जल गया,
इश्क़ने क्या क्या हमें दिखलाये दाग़।
वह नहीं अब 'मीर' जो छाती जले,
खा गया सारे जिगरको हाय दाग़।

* * *

चाके-दिल[6] है अनारकेसे रंग,
चश्म[7] पुरख़ूं-फ़िगार[8]केसे रंग।
इस बियाबां[9]में 'मीर' मत्त हुए,
नातवां[10] इक ग़ुबार[11]केसे रंग।

* * *

---

[1]पहुंच [2]क़िस्मत आज़माना [3]पिंजड़ा [4]दुनियादार [5]अमीरी [6]फटा दिल [7]आंख [8]खूनसे भरा घाव [9]जंगल रेगिस्तान [10]कमज़ोर [11]बगूला।

जीके तईं छिपाते नहीं यूं तो ग़मसे हम,
पर तंग आ गये हैं तुम्हारे सितमसे हम।
जानू[1]पे सर है क़ामते-ख़म-गश्ता[2]के सबब,
पीरी[3]में अपनी आन लगे है क़दमसे हम।

* * *

जी जाय किसूका कि रहे, तुमको क़सम है,
मक़दूर[4] तलक दर-पये-आज़ार[5] रहो तुम।

* * *

अब सैल सैल[6] आंसू आते हैं चश्मेतर[7]से,
दीवारो-दर[8]से कह दो बेइख़्तियार ह हम।
रोते हैं यूं कि जैसे शिद्दत[9]से अब्र[10] बरसे,
क्या जानिए कि कैसे दिलके बुख़ार हैं हम।

* * *

रो चुका ख़ूने-जिगर सब अब जिगरमें ख़ूं कहां,
ग़मसे पानी होके कबका बह गया, मैं हूं कहां।
खा गया अंदोह[11] मुझको दोस्ताने-रफ़्ता[12]का,
ढूंढता है जी बहुत, पर अब उन्हें पाऊं कहां।

* * *

बेख़ुद[13] उसकी जुल्फ़ो-रुख़[14]के काहेको आप[15]में फिर आये,
हम कहते हैं तसल्ली दिलको सांझ सवेरे फिरते हैं।
बरसे गर शमशीर सरोंपर मुंह मोड़ें जिनहार[16] नहीं,
सीधे जानेवाले उधरके किसके फेरे फिरते हैं।

* * *

---

[1]जंघा [2]झुका हुआ क़द [3]बुढ़ापा [4]शक्तिभर [5]दुखदायी [6]बाढ़की तरह [7]भीगी आख [8]दीवार और दरवाजे [9]ज़ोर [10]बादल [11]रंज [12]मृत साथी [13]आत्मविस्मृत [14]केश और मुख [15]होश [16]बिल्कुल।

जमा होते नहीं हवास कहीं,
जायें यांसे जो हम उदास कहीं।
दिलकी जो अश्क[1]से न निकली भड़ास,
ओसों बुझती नहीं है प्यास कहीं।

* * *

ज़िंदगी दूभर हुई है 'मीर', आख़िर ता-कुजा[2],
दिल जिगर जलते रहें, आंखें हमारी तर रहें।

* * *

हाय सुबुक[3] होना यह मेरा फ़र्ते-शौक़[4]से मजलिसमें,
वह तो नहीं सुनता दिल देकर मैं ही बातें बनाता हूं।
आनेकी मेरी फ़ुरसत कितनी ? दो दम, दो पल, एक घड़ी,
रंजिश क्यों, काहेको ख़ज़ूनत,[5] ग़ुस्सा क्या, मैं जाता हूं।
सर मारूं हूं ईधर ऊधर दूर तलक जाता हूं निकल,
पास नहीं पाता जो उसको क्या क्या मैं घबराता हूं।

* * *

सुबहे-चमन[6]का जल्वा[7] हिंदी-बुतों[8]में देखा,
संदल[9] भरी जबीं[10] है होठोंकी लालियां हैं।
इन गुलरुख़ों[11]की क़ामत[12] लहके है यूं हवामें,
जिस रंगसे लचकती फूलोंकी डालियां हैं।
वह दुज़्दे-दिल[13] नहीं तो क्यों देखते ही मुझको,
पलकें झुका लियां[14] हैं आंखें चुरा लियां हैं।
चलते हैं यह तो ठोकर लगती है 'मीर' दिलको,
चालें ही दिलबरोंकी सबसे निरालियां हैं।

* * *

---

[1]आंसू [2]कहांतक [3]अपमानित [4]प्रेमाधिक्य [5]रुखाई [6]बाग़ की सुबह [7]सौंदर्य [8]भारतके सुंदर लोग [9]चंदन [10]माथा [11]माशूक़ों [12]क़द, [13]मनका चोर [14]लीं।

जब दूर गया क़ाफ़िला तब चश्म[1] हुई बाज़[2],
क्या पूछते हो देर ख़बरदार हुआ मैं।
क्या चेतनेका फ़ायदा जो शैब[3] में चेता,
सोनेका समां आया तो बेदार[4] हुआ मैं।
रहता हूं सदा मरनेके नज़दीक ही अब 'मीर',
उस जानके दुश्मनसे भला यार हुआ मैं।

* * *

चिनगारियां गिरें हैं जब पलकें हिलतियां[5] हैं,
रोनेसे तब तो मेरे कुछ आंखें जलतियां[6] हैं।
आंखें मिलाके उससे टुक हाल देखो दिलका,
वे अंखड़ियां जियोंको अपने तो मलतियां[7] हैं।

* * *

देखें तो मीर क्या हो बेताक़तीसे हालत,
अब तो बदेर[8] जानें अपनी संभलतियां[9] हैं।
हम तू भी फ़स्ले-गुलमें चल टुक तो पास बैठें,
सर जोड़ जोड़ कैसे कलियां निकलतियां हैं।

* * *

जाय है जी नजात[10]के ग़ममें,
ऐसी जन्नत गयी जहन्नम में।
आप[11]में हम नहीं तो क्या है अजब,
दूर उससे रहा है क्या हममें।

---

[1]आंख [2]खुली [3]बुढ़ापा [4]जागा [5]हिलतीं [6]जलती [7]मलतीं [8]देरमें [9]सम्भलती [10]मुक्ति [11]अपनेमें, होशमें।

बेख़ुदी[1]पर न 'मीर'की जाओ,
तुमने देखा है और आलममें।

* * *

जिसका ख़ूबां[2] ख़याल लेते हैं,
दिल कलेजा निकाल लेते हैं।
देख उसे हो मलक[3]से भी लग़ज़िश[4],
हम तो दिलको संभाल लेते हैं।

* * *

ज्यूं दूद[5] उम्र गुज़री सब पेचो-ताब[6]हीमें,
इतना सता न ज़ालिम हम भी जले बले हैं।
जब याद आ गये हैं पाये-हिनाई[7] उसके,
अफ़सोस तबसे अपने हम हाथ ही मले हैं।

* * *

शरर[8]से अश्क[9] हैं अब चश्मे-तर[10]में,
लगी है आग इक मेरे जिगरमें।
समां यां सांझका सा हो न जाता,
असर होता अगर आहे-सहर[11]में।
लचकने हीने हमको मार रक्खा,
कटारी तो न थी उसकी कमरमें।

* * *

असर होता हमारी गर दुआमें,
लग उठती आग सब अरज़ो-समा[12]में।

* * *

---

[1]आत्मविस्मृति [2]सुन्दर लोग [3]फ़रिश्ते [4]चूक [5]धुआं [6]चक्कर खाना [7]मेंहदी लगे पांव [8]चिनगारी [9]आँसू [10]भीगी आंख [11]सुबह तकका रोना [12]ज़मीन और असमान।

जैसे बिजलीके चमकनेसे किसूकी सुध जाय,
बेख़ुदी[1] आयी अचानक तिरे आ जानेमें।
वह तो बाली[2] तईं आया था हमारे लेकिन,
सुध भी कुछ हमको न थी जानेके घबरानेमें।

* * *

आशिक़ी वह रोग है जिसमें कि हो जाती है यास,
अच्छे होते कम सुना है 'मीर' इस आज़ार[3]को।

* * *

सारे बाज़ारे-जहां[4]का है यही मोल ऐ 'मीर',
जानको बेचके भी दिलके ख़रीदार रहो।

* * *

लगा जी उसकी ज़ुल्फ़ोंसे बहुत हम 'मीर' पछताये,
हुआ है मुद्दई[5] एक एक अपना बाल मत पूछो।

* * *

शौक़से दीदारके भी आंखोंमें खिंच आया जी,
इस समयमें देखने हमको बहुत आया करो।
कब मयस्सर[6] उसके मुंहका देखना आता है 'मीर',
फूल गुलसे अपने दिलको तुम भी बहलाया करो।

* * *

हमको तो मारा इश्क़ने आख़िर पर ये वसीयत है यारो,
देर जहांमें तुम जो रहो तो किसूसे उलफ़त मत करियो।
मेरी तरफ़की यारो उससे बात कोई कहते हो, कहो,
माने न माने वह जाने, फिर तुम भी मिन्नत मत करियो।

* * *

---

[1]आत्मविस्मृति [2]सिरहाना [3]रोग [4]संसार रूपी बाज़ार [5]दुश्मन [6]प्राप्त।

पलकें इस तरह रोते रोते गयीं,
सब्ज़ा[1] होता है जिस तरह लबे-चाह[2]।
'मीर' 'काबे'से क़स्दे-दैर[3] किया,
जाओ प्यारे भला ख़ुदा हमराह[4]।

* * *

जला जी बहुत क़िस्स-ए-'मीर'[5] सुन,
बला सोज़[6] था उस कहानीके साथ।

* * *

क़िस्मतमें जो कुछ कि बदा हो देते हैं वही इंसांको,
ग़म ग़ुस्सा ही हमको मिला है, ख़ूबी अपनी क़िस्मतकी।
दक्खिन पूरब पच्छिमसे लोग आकर मुझको देखे हैं,
हैफ़[7]! तुम्हें परवाह नहीं है मुतलक़[8] मेरी सुहबतकी।

* * *

बाउसे भी गर पत्ता खड़के चोट चले है ज़ालिमकी,
हमने दाम-गहों[9]में उसके ज़ौक़े-शिकार[10]को देखा है।
जमा[11] करो दिल 'मीर'से तुम भी, बेताबी[12] थी दिलको बहुत,
कुछ अच्छे आसार[13] न थे, मैं उस बीमारको देखा है।

* * *

सोज़े-दरूं[14]ने आख़िर जी ही खपा दिया है,
ठंडा दिल अब है ऐसा जैसे बुझा दिया है।

---

[1]घास [2]कुएँके किनारे [3]मन्दिर जानेका इरादा [4]साथ (है) [5]'मीर' की कहानी [6]दर्द [7]अफ़सोस [8]बिल्कुल [9]जाल बिछी जगहें [10]शिकारका शौक़ [11]लगाओ [12]बेचैनी [13]लक्षण [14]अन्दरूनी जलन।

कुढ़ते हमेशा रहना हमको बग़ैर उसके,
क्या रोग दोस्तीने जीको लगा दिया है।

* * *

'मीर' जंगल पड़े हैं आज जहां,
लोग क्या क्या यहीं थे कल बसते।

* * *

बहार आयी निकालो मत मुझे अबकी गुलिस्तांसे,
मिरा दामन, बने, तो बांध दो गुलके गरेबां[1]से।
मुहब्बतमें किसूकी रंजो-मेहनतसे गये दोनों,
रही शर्मिन्दगी ही उम्र भर मुझको दिलो-जांसे।

* * *

जाइए इस शहर ही से अब गरेबां फाड़कर,
कीजिए क्या ? ग़मसे यूं मातम-गुसारी[2] कीजिए।
यूं बहे कबतक कि बेलाले-लब[3] उसके हर घड़ी,
चश्मा-चश्मा[4] ख़ूने-दिल आंखोंसे जारी कीजिए।
आश्ना[5] हो उससे हम मर मर गये, आयंदा 'मीर',
जीते रहिए तो किसूसे अब न यारी कीजिए।

* * *

कल जोशे-ग़ममें आंसू टपके न चश्मे-तर[6]से,
अफ़सोस है कि आकर यूं मेंह टुक न बरसे।

* * *

दख़ील[7] जात नहीं इश्क़में, कि 'मीर'को देख,
ज़लील[8] कैसे है उनकी है गो कि जात बड़ी।

* * *

---

[1]कपड़ा [2]रंज कम करना [3]होंठोंके लाल [4]बहता हुआ [5]दोस्त
[6]भीगी आंख [7]महत्वपूर्ण [8]अपमानित।

गयी गर्म-इख़्तलाती[1] कबकी इन सहर-आफ़रीनों[2]से,
लगे रहते हैं दाग़े-हिज्र[3] ही अब अपने सीनोंसे।
ख़ुदा जाने है अपना तो जिगर कांपा ही करता है,
चढ़ी त्योरीसे महबूबों[4]की और अब्रू[5]की चीनों[6]से।

* * *

क्योंकर न हो तुम 'मीर'के आज़ार[7]के दरपे[8],
यह जुर्म है उसका कि तुम्हें प्यार करे है।

* * *

कहो हो ज़ेर-लब[9] क्या देखकर हम नातवानों[10]को,
हमारी जानमें ताक़त नहीं बातें उठाने की।
अजब चौपड़ बिछी है, हर ज़मां[11] उड़ता है रंग अपना,
समझमें चाल कुछ आती नहीं अपने ज़माने की।
किसूसे आंखके मिलते ही अपनी जान दे बैठे,
नयी यह रस्म हम जाते हैं छोड़े दिल लगानेकी।

* * *

दिन फ़स्ले-गुल[12]के अबके भी जाते हैं बाउसे[13],
दिल दाग़ हो रहा है चमनके सुभाव से।
वारफ़्तगाने-इश्क़[14] भी क्या तुर्फ़ा[15] लोग हैं,
दिलके गये पे देते हैं जी कैसे चावसे।

* * *

पिये दारू पड़े फिरते थे कलतक 'मीर' कूचोंमें,
उन्हींको मस्जिदे-जामाकी देखी आज इमामत है।

* * *

---

[1]प्रेमसे मिलना [2]जादूगरों (माशूकों) [3]विरहके दाग
[4]माशूकों [5]भवों [6]सिलवटों [7]कष्ट देना [8]उद्यत [9]बड़बड़ाते हुए
[10]कमज़ोर [11]समय [12]बहार [13]हवा की तरह [14]प्रेमोन्मत्त [15]अजीब।

काबेके दरपे थे हम, या दैर[1]में दर[2] आये,
आवारगी तो देखो कीधरसे कीधर आये।
दीवानगी है मेरी अबकी कोई तमाशा,
रहते हैं घेरे मुझको क्या अपने क्या पराये।
वुसअत[3] बयां करूं क्या दामाने-चश्मे-तर[4]की,
रोनेसे मेरे क्या क्या अब्रे-सियहतर[5] आये।

* * *

दिलकी बीमारीसे ताक़त ताक़[6] है,
जिंदगानी अब तो करना शाक़[7] है।

* * *

बात क्या आदमीकी बन आयी,
आसमांसे जमीन नपवायी।

* * *

बुतकदे[8]से तो चले काबे वले[9],
दस क़दम हम दिलको कर पत्थर गये।
मजलिसोंकी मजलिसें बरहम हुईं,
लोग वे पल मारते कीधर गये।

* * *

---

[1]मंदिर [2]घुस आये [3]विस्तार [4]भीगी आँखका क्षेत्र [5]और काले बादल [6]दूर (ताक़पर) [7]मुश्किल [8]मंदिर [9]लेकिन।

चौथा दीवान

ऐ काश मिरे सरपर इक बार वह आ जाता,
ठहराव सा हो जाता यूं जी न चला जाता।
इक आग लगा दी है छातीमें जुदाईने,
वह मह[1] गले लगता तो यूं दिल न जला जाता।

* * *

गो बेकसी[2]से इश्क़की आतिश[3]में जल बुझा,
मैं ज्यूं चराग़े-गोर[4] अकेला जला किया।
बदहाल ठंडी सांसें भरा कब तलक करे,
सरगर्में-मर्ग[5] 'मीर' हुआ तो भला किया।

* * *

इक निगह करनेमें ग़ारत कर दिया, ऐ वाए[6] हम!
दिल जो सारी उम्रका अपनी था सरमाया[7] गया।

* * *

दिल संभाले जो कहीं कल मैं चला जाता था,
ज़ोफ़[8] इतना था, कहे बात टला जाता था।

* * *

इश्क़ क्या क्या आफ़तें लाता रहा,
आख़िर अब दूरी[9]में जी जाता रहा।
मुंह दिखाता बरसों वह ख़ुशरू[10] नहीं,
चाहका यूं कब तलक नाता रहा।

---

[1]चांद [2]बेबसी [3]आग [4]क़ब्रका दिया [5]मरनेके लिए प्रयत्नशील [6]हाय [7]पूंजी [8]कमज़ोरी [9]विरह [10]सुंदर।

कुछ न मैं समझा जुनूनो-इश्क़[1] में,
देर नासिह[2] मुझको समझाता रहा।

* * *

जान अपना जो हमने मारा था,
कुछ हमारा इसीमें चारा था।
हम तो थे महवे-दोस्ती[3] उसके,
गो कि दुश्मन जहान सारा था।
इश्क़बाज़ीमें क्या मुए[4] हैं 'मीर',
आगे ही जी उन्होंने हारा था।

* * *

रस्म उठ गयी दुनियासे इक बार मुरव्वतकी,
क्या लोग ज़मींपर हैं? कैसा ये समां आया?

* * *

वही है रोना, वही है कुढ़ना, वही है सोज़िश[5] जवानीकी सी,
बुढ़ापा आया है इश्क़ हीमें पे 'मीर' हमको न ढंग आया।

* * *

जिगर ख़ूं किया चश्म[6] नम कर गया,
गया दिल सो हमपर सितम कर गया।
शब[7] इक शोला[8] दिलसे हुआ था बुलंद[9],
तने-ज़ार[10] मेरा भसम कर गया।

* * *

क्या हुआ पहलूसे दिल क्या जानो? क्या जानूं हूं मैं?
एक क़तरा[11] ख़ूं झलकता सुबह चश्मे-नम[12] में था।

* * *

---

[1]प्रेम और उन्माद [2]हितेच्छु [3]प्रेममग्न [4]मरे [5]जल [6]आंख [7]रात [8]लपट [9]ऊंचा [10]कमज़ोर बदन [11]बूंद [12]भीगी आंख

वफ़ादारीने जी मारा हमारा,
उसीमें होगा कुछ वारा हमारा।
चढ़ी त्योरी कभू उसकी न उतरी,
ग़ज़ब है, क़हर[1] है प्यारा हमारा।
गिला[2] लबतक न आया 'मीर' हरगिज़,
खपा जी हीमें ग़म सारा हमारा।

* * *

पीर[3] होकर हुआ हूं यूं ग़ाफ़िल,
जैसे लड़कोंको आवे ख़्वाब[4] शिताब[5]।
यां क़दम चाहिए रखें गिनकर,
'मीर' ले है कोई हिसाब शिताब।

* * *

यह अर्ज़ मिरी याद रहे बंदगीमें 'मीर',
जी बचते नहीं इश्क़के इज़हार[6]से साहब।

* * *

जोश रोनेका मुझे आया है अब,
दीद-ए-तर[7] अब्र[8] सा छाया है अब।
काशके हो जाय सीना चाक चाक[9],
रुकते रुकते जी भी घबराया है अब।
'मीर' शायद काबे ही में रह पड़े,
वैरसे तो यां ख़ुदा लाया है अब।

* * *

---

[1]मुसीबत [2]शिकायत [3]बूढ़ा [4]नींद [5]जल्दी [6]प्रकट करना [7]भीगी आंख [8]बादल [9]टुकड़े टुकड़े।

जबसे आंखें लगी हैं हमारी नींद नहीं आती है रात,
तकते राह रहे हैं दिनको आंखोंमें जाती है रात।
ज्यूं दिन हिज्रके ग़ममें उसके शामो-सहर[1] हम करते हैं,
वरना किसे दिन ख़ुश आता है किसके तईं भाती है रात।

* * *

बादे-मर्ग[2] आंखें खुली रहनेसे यह जाना गया,
देखनेकी उसके मेरे जीमें थी हसरत बहुत।
आंख जाती है मुंदी ज़ोफ़े-दिली[3]से दमबदम,
इन दिनों उनको भी ईधर ही से है ग़फ़लत बहुत।

* * *

चश्म[4] रहने लगी पुर आब[5] बहुत,
शायद आवेगा ख़ूने-नाब[6] बहुत।
दिलके दिल हीमें रह गये अरमां,
कम रहा मौसमे-शबाब[7] बहुत।

* * *

हम गला काटते ही थे अपना,
तू गलेका हुआ है हार अबस[8]।
लोहू रोनेसे सब निचोड़ लिया,
अब पिये ख़ून रोज़गार[9] अबस।
हम तो आगे ही मर रहे 'मीर',
तेग़[10] खींचे फिरे हैं यार अबस।

* * *

मुंतज़र[11] तो रहते रहते फिर गयीं आंखें निदान,
वह न आया देखने हमको तो बीमारीके बीच।

---

[1]सुबहशाम [2]मरनेके बाद [3]दिलकी कमज़ोरी [4]आंख [5]भीगी [6]साफ़ख़ून [7]जवानीका ज़माना [8]बेकार [9]दुनिया [10]तलवार [11]प्रतीक्षामें।

रोते ही गुज़री हमें है शब-नशीनी[1] बाग़की,
ओस सी पड़ती रही है रात हर क्यारीके बीच।

* * *

है क्या तू, जैसे बंद है मुट्ठी, कि जा चला,
मत गुलके रंग[2] मुंहको खुला[3] राज़[4] फ़ाश[5] कर।
फिरता है क्या तू 'मीर' गुलिस्तां[6]में ग़मज़दा[7],
कुछ दिल-ख़राश[8] लिख भी क़लम इक तराशकर।

* * *

तुझको है सौगंध ख़ुदाकी मेरी ओर निगाह न कर,
चश्मे-सियाह[9] मिलाकर यूं ही मुझको ख़ाक-सियाह[10] न कर।
'मीर' न हम कहते थे तुझसे हाल नहीं कुछ रहनेका,
चाह बलाए-जानो-दिल[11] है, आ, जाने दे, चाह न कर।

* * *

जी ही हिला जाता है अपना मीर समां यह देखे से,
आंखें मलते उठते हैं बिस्तरसे जब दिलबर सोकर।

* * *

मुद्दत हुई कि ख़्वार[12] हो गलियोंमें मर गये,
क़िस्सा हमारे इश्क़का है दास्तां[13] हनोज़[14]।

* * *

दिल नहीं दर्दमन्द अपना 'मीर',
आह! नाले[15] करें असर क्योंकर।

* * *

---

[1]रातका बैठना [2]तरह [3]खोलकर [4]भेद [5]प्रकट [6]बाग [7]रंजीदा [8]दिलको चीरनेवाली चीज़ [9]काली आँख [10]भस्मीभूत [11]जान और दिलकी मुसीबत [12]बदनाम [13]कहानी [14]अबतक [15]रोना।

मैं तो तलवार तले उसके लिए बैठा 'मीर',
वह खड़ा भी न हुआ आके गुनहगारके पास।

* * *

अब नहीं होती चश्म[1]तर अफ़सोस,
बह गया खूं हो जिगर अफ़सोस।
'मीर' अबतर बहुत है दिलका हाल,
यानी वीरां पड़ा है घर अफ़सोस।

* * *

'मीर' खिलाफ़ मिजाज मुहब्बत मूजिबे-तलखी-कशीदन[2] है,
यार मुआफ़िक़ मिल जावे तो लुत्फ़ है चाह मजा है इश्क़।

* * *

कुछ रंजे-दिली 'मीर' जवानीमें खिचा था,
जर्दी नहीं जाती मिरे रुखसार[3]से अबतक।

* * *

बाद[4]से भी लचक लहक है उन्हें,
है यही सब्जे धान पानसे लोग।
आदमी अब नहीं जहांमें 'मीर',
उठ गये इस भी कारवानसे लोग।

* * *

खून हुआ है, चाक[5] हुआ है, जलते जलते दाग़ हुआ,
रवाहिश उसको क्या है बारे? किसके लिए बेदिल है दिल।
यूं तो गिरह सीनेमें हमारे दर्दो-ग़मकी होके रहा,
किससे जाहिर करते जाकर काम बहुत मुश्किल है दिल।

---

[1]आँख [2]कष्ट सहनेका कारण [3]गाल [4]हवा [5]टुकड़े।

आंखोंकी[1] देखा देखी हरगिज दिलको उससे न लगना था,
जैसी सजा पहुंचावे कोई अब उसके क़ाबिल है दिल।

* * *

चुपकेसे कुछ आ जाते हो, आंखे भर भर लाते हो,
'मीर' गुज़रती क्या है दिलपर कुढ़ा करो हो अक्सर तुम।

* * *

क्या दिन थे वे देखते तुमको नीची नज़र मैं कर लेता,
शरमा शरमा लोगोंसे जब आंखें मुझको दिखाते तुम।
बिस्तर पर मैं मुर्दा सा था, जान सी मुझमे आ जाती,
क्या होता जो रंजा क़दम कर[1] मेरे सिरहाने आते तुम।

* * *

भरदी थी चश्मे-साक़ी[2] में यारब कहांकी मै,
मजलिसकी मजलिसें नज़र इक करते छक गयीं।
क्या 'मीर' उसकी नोक पलकसे सुख़न[3] करे,
सरतेज छुरियां गड़तीं जिगर दिल तलक गयीं।

* * *

दिलकी कुछ तक़सीर[4] नहीं है आंखे उससे लग पड़ियां[5],
मार रखा सो उनने मुझको किस ज़ालिमसे जा लड़ियां[6]।
'मीर' बलाए-जान रहे हैं दोनों फ़िराक़ो-वस्ल[7] उसके,
हिज्र[8] की रातें वह भारी थीं, मिलनेके दिनकी यह कड़ियां।

* * *

चाक[9] सीनेके हमारे नहीं सीने अच्छे,
इन्हीं रखनों[10] से दिलो-जान हवा लेते है।

* * *

---

[1]पैरोंको कष्ट देकर [2]साक़ीकी आँख [3]बात [4]क़सूर [5]पड़ी [6]लड़ी [7]विरह और मिलन [8]विरह [9]टुकड़े, छेद [10]छेद।

चाक हुआ दिल, टुकड़े जिगर है लोहू रोये आंखोंसे,
इश्क़ने क्या क्या ज़ुल्म दिखाये दस दिन के इस जीनेमें।

* * *

याद आये वह क्या तड़पे है क्या बेताबी करता है,
कोई तसल्ली फिर होता है, जबतक दिलको थाम न लो।

* * *

क्या इज़्तराबे-इश्क़[1] से मैं हर्फ़ज़न[2] हूं 'मीर',
मुंहतक जिगर तो आने लगा गुफ़्तगू[3] के साथ।

* * *

बाग़े-वफ़ा[4] से हमने पाया सो फल ये पाया,
सीनेमें चाकतर[5] है अब दिल अनारसे भी।

* * *

है बला धूम दिल तड़पनेकी,
ऐसा होता नहीं है ऊधम भी।
हैफ़[6]! दिल जाते पड़ गयी जीकी,
वर्ना ग़म करते, लेते मातम भी।

* * *

कहनेमें यह बात आती नहीं हो सैर ख़ुदाकी क़ुदरत की,
मूंद कर आंखें 'मीर' अगर तू दिलकी तरफ़ टुक ध्यान करे।

* * *

इश्क़में दम मारा न कभू, तुम चुपके चुपके 'मीर' खपे,
लोहू मुंहसे मलकर अब फ़रियाद करो तो बेहतर हो।

* * *

---

[1]प्रेमकी तड़प [2]बातचीत करना [3]बातचीत [4]प्रेमोद्यान [5]ज्यादा फटा [6]अफसोस !

पानीकी सी बूंदें थीं सब अश्क,[1] न मैं जाना,
कपड़ों पे गिरेंगे तो वे आग जला देंगे।
हासिल[2] कड़े होनेका अब्रू[3] की कमां उसकी,
देखेंगे चढ़ी जिस दम हम सरको नवा देंगे।
माशूक़ोंकी गर्मी[4] भी ऐ 'मीर' क़यामत है,
छातीमें गले लगकर टुक आग लगा देंगे।

* * *

यूं 'मीर' तो ग़म अपना बरसों कहा करेंगे,
अब रात कम है सोओ बस हो चुकी कहानी।

* * *

सुनो सरगुज़श्त[5] अब हमारी ज़बानी,
सुनी गर्चे जाती नहीं यह कहानी।
मिला देती है ख़ाकमें आदमीको,
मुहब्बत है कोई बला आसमानी।

* * *

चलते हो तो चमनको चलिए, कहते हैं कि बहारां[6] है,
पात हरे हैं, फूल खिले हैं कम कम बादो-बारां[7] है।
रंग हवासे यूं टपके है जैसे शराब चुआते हैं,
आगे हो मैख़ाने[8] के निकलो अहदे-बादा गुसारां[9] है।
दिल है दाग़ जिगर है टुकड़े आंसू सारे ख़ून हुए,
लोहू पानी एक करे यह इश्क़े-लालाअज़ारां[10] है।

* * *

---

[1]आँसू [2]नतीजा [3]भौं [4]मुहब्बत [5]कहानी [6]बसत [7]हवा और वर्षा [8]शराबख़ाना [9]शराब पीने वालोंका ज़माना [10]माशूक़ोंका प्रेम।

हमें ही इश्क़में जीनेका कुछ ख़याल नहीं,
वगर्ना सबके तईं जान अपनी प्यारी है।

* * *

इश्क़में खोये जाओगे तो बात की तह भी पाओगे,
क़द्र हमारी कुछ जानोगे दिलको कहीं जो लगाओगे।
चाहत 'मीर' सभी करते हैं रंजो-तअब[1] में रहते हैं,
तुम जो अभी बेताब हो ऐसे जीसे हाथ उठाओगे।

* * *

इश्क़ छिपाकर पछताये हम सूख गये रंजूर[2] हुए,
यानी आंसू पीपी गये सो ज़ख़्मे-जिगर नासूर हुए।

* * *

दिलकी बात कही नहीं जाती, चुपके रहना ठाना है,
हाल अगर है ऐसा ही तो जी से जाना जाना है।
दिल जो रहे तो पांवोंको भी दामनमें हम खींच रहें,
सुबहसे लेकर सांझतलक ऊधर ही आना जाना है।

* * *

सर जानेकी ओर अपने ज़िनहार[3] निगाह न की हमने,
उठके अंधाधुंध आये चले ही, उस ज़ालिमके क़दम देखे।

* * *

देख रहिए ख़रामे-नाज़[4] उसका,
पर किसू-पा[5] से गर रहा भी जाय।
क्या कोई उस गलीमें आवे 'मीर',
आवे तो लोहूमें नहा भी जाय।

* * *

---

[1]दुखदर्द [2]दुखी [3]कभी [4]मस्तानी चाल [5]पांव।

आज हमें बेताबीसे ही सबकी दिलसे रुख़सत थी,
चारों ओर निगह[1] करनेमे आलम-आलम[2] हसरत थी।
जो उठता है यां से बगूला हमसा है आवारा कोई,
इस वादीमे 'मीर' मगर[3] सरगश्ता[4] किसूकी तुरबत[5] थी।

* * *

[1]निगाह [2]सारे संसारमें [3]शायद [4]वीरान [5]क़ब्र।

पांचवां दीवान

मरनेका भी ख़याल रहे 'मीर' अगर तुझे,
है इश्तियाक़[1] जाने-जहां[2] के विसाल[3] का।

* * *

दूर बहुत भागो हो हमसे, सीखे तरीक़[4] ग़ज़ालों[5] का,
वहशत[6] करना शेवा[7] है क्या अच्छी आंखों वालोंका।
सूरतगर[8] की परेशानीने तूल[9] निहायत खींचा है,
हमने क्यों बिस्तार किया था उसके लम्बे बालोंका।

* * *

बलाए ज़ेरे-सर[10] हूं, काश उफ़्तादा[11] रहूं यूं ही,
उठा सर ख़ाक से तो 'मीर' हंगामे[12] उठाऊंगा।

* * *

इश्क़ हमारे ख़याल पड़ा है ख़्वाब[13] गया आराम गया,
जी का जाना ठहर गया है सुबह गया या शाम गया।
आया यांसे जाना है तो जीका खपाना क्या हासिल[14],
आज गया या कल जावेगा, सुबह गया या शाम गया।
हाय जवानी क्या क्या कहिए शोर सरों[15] में रखते थे,
अब क्या है, वह अहद[16] गया वह मोसम वह हंगाम[17] गया।

* * *

उसकी सी जो चले है राह तो क्या,
आसमां पर गया है माह[18] तो क्या।

---

[1]शौक़ [2]प्रियतम [3]मिलन [4]ढंग [5]हिरनों [6]भड़कना [7]ढग [8]चित्रकार [9]विस्तार [10]सरसे दबाये हुए [11]गिरा [12]मुसीबतें [13]नीद [14]नतीजा [15]उच्छृंखलता [16]ज़माना [17]समय [18]चांद।

हुस्नवाले हैं कजरविश[1] सारे,
हुए दो चार रूबराह[2] तो क्या।
'मीर' क्या है फ़क़ीरे-मुस्तग़ना[3],
आवे उस पास बादशाह तो क्या।

* * *

रफ़्ता रफ़्ता[4] उस परीके इश्क़में,
'मीर' सा दाना[5] दिवाना हो गया।

* * *

फ़ायदा क्या नमाजे-मसजिदका,
क़द ही मेहराब सा जो ख़म[6] न हुआ।
बे दिलीमें है 'मीर' खुश उससे,
दिलके जानेका हैफ़[7] ग़म न हुआ।

* * *

जिगरके ज़ख़्म शायद हैं नमक बंद,
मज़ा कुछ आंसुओंका है सलोना।

* * *

दिल ख़ूं हुआ था यक सर पानी हुआ जिगर सब,
ख़ूं-बस्ता[8] रहतियां[9] थीं पलकें सो अब हैं तर सब।
यारब[10]! किधर गये वे जो आदमी-रविश[11] थे,
ऊजड़ दिखायी दें हैं शहरो-दिहो-नगर सब।
'मीर' इस ख़राबे[12] में क्या आबाद होवे कोई,
दीवारो-दर[13] गिरे हैं वीरां पड़े हैं घर सब।

* * *

---

[1]टेढ़ा चलनेवाले [2]रास्तेपर [3]निस्पृह सन्यासी। [4]धीरे धीरे [5]समझदार [6]टेढ़ा [7]अफ़सोस [8]ख़ूनसे चिपकी [9]रहती [10]हे भगवान! [11]इंसानियत रखनेवाले [12]उजड़ा नगर [13]दीवार और दरवाज़े।

सुनके हाल किसू के दिलका रोना ही मुझको आता था,
यानी कभू जो कुढ़ता था मैं, वह रोना हरदम है अब।
देखें क्योंकर दिन कटते हैं रातें क्योंकि गुज़रती हैं,
बेताबी है ज्यादा ज्यादा सब्र बहुत कम कम है अब।
इश्क़ हमारा आह न पूछो क्या क्या रंग बदलता है,
ख़ून हुआ दिल, दाग़ हुआ फिर, दर्द हुआ फिर, ग़म है अब।

* * *

चश्मे-मुश्ताक़[1] उस लबो-रुख़[2] से लम्हा लम्हा[3] उठती है,
क्या ही लगे है अच्छा उसका मुखड़ा प्यारा प्यारा आज।

* * *

किसूके आनेसे क्या अब कि ग़श है कल दिनसे,
हमें तो अपना ही ऐ 'मीर' इंतज़ार है आज।

* * *

वादे करो हो बरसोंके तुम, दमका भरोसा हमको नहीं,
कुछ कुछ हो जाता है यां इक पलमें इक इक आनके बीच।
तबईयत से जो फ़ारसीकी कुछ मैंने हिंदी शेर कहे,
सारे तुर्क बच्चे[4] ज़ालिम अब पढ़ते हैं ईरानके बीच।

* * *

यह उलझाव सुलझता हमको दे है दिखायी मुश्किल सा,
यानी दिल अटका है जाकर उन बालोंकी शिकनके बीच।

* * *

लोहूमें डूबे देखियो दामानो-जैब[5] 'मीर',
बिफरा है आज दीदए-ख़ूंबार[6] बेतरह।

* * *

---

[1]प्रेमीकी आँख [2]होंठ और चेहरा [3]क्षण क्षण [4]बच्चे [5]कपड़े [6]ख़ून बरसानेवाली आँख।

क़ैदे-फ़िराक़[1] से तो छूटें, जो मर रहें हम,
इस दर्दे बे दवाकी मरना दवा है शायद।

* * *

इश्क़ ख़ुदाई-ख़राब है ऐसा जिससे गये हैं घरके घर,
काबाओ-दैर[2] के ऐवानोंके[3] गिरे पड़े हैं दरके दर।
मुस्लिमो-काफ़िरके झगड़ेमें जंगो-जदल[4] से रिहाई नहीं,
लोथों पे लोथें गिरती रहेंगी कटते रहेंगे सर के सर।
निकले अबके क़फ़स[5] में शायद कोई कली तो निकले 'मीर',
सारे तैर[6] शगुफ़्ता[7] चमनके टूट गये दे परके पर।

* * *

'मीर' ये क्या रोना है जिससे आंखों पर रूमाल रखा,
दामनके हर पाट को अपने गिरिया-ओ-ज़ारी[8] से दरिया कर।

* * *

सर नीचे कर लेता था तलवार चलाते हम पर वह,
रीझ गये ख़ूंरेज़ी[9] में अपनी उसके फिर शरमाने पर।

* * *

अब्रे-सियह[10] क़िब्लेसे[11] उठकर आया है मैख़ाने[12] पर,
बादाकशों[13] का झुरमुट है कुछ शीशे[14] पर पैमाने पर।
बेताबाना[15] शमअ पे आया, गिर्द फिरा, फिर जल ही गया,
अपना जी भी हदसे ज़ियादा रात जला परवाने पर।

* * *

रात दिन हाथ मलते रहते हैं,
दिलके जानेका है बड़ा अफ़सोस।

---

[1]विरहकी क़ैद [2]काबा और मंदिर [3]भव्य भवन [4]लड़ाई [5]पिंजड़ा [6]पक्षी [7]बाग़ [8]पंख [9]रोना पीटना [10]खूनमें डूबना [11]काला बादल [12]काबा [13]शराबख़ाना [14]शराबियों [15]बोतल [16]बेचैनीसे।

बांछें फट फट गयी हैं घिघियाते,
बे असर हो गयी दुआ अफ़सोस।

* * *

बूए-ख़ूं भक भक दिमाग़ोंमें चली आती है कुछ,
निकली है होकर सबा शायद किसू घायलके पास।
मलिए क्यों कर ना कफ़े-अफ़सोस[1] जी जाता है 'मीर',
डूबती है कश्ती वरते[2] से निकल साहिल[3] के पास।

* * *

कब तलक बेक़रार रहिएगा,
कुछ तो मिलनेका हो क़रार ऐ काश!
राह तकते तो फट गयीं आंखें,
उसका करते न इंतज़ार ऐ काश!
अब वही 'मीर' जी खपाता है।
हमको होता न उससे प्यार ऐ काश!

* * *

नज़र क्यों गयी रू[4] व मू[5] की तरफ़,
खिंचा जाय है दिल किसूकी तरफ़।
न देखो कभी मोतियोंकी लड़ी,
जो देखो मिरी गुफ़्तगू[6] की तरफ़।
उसे ढूंढ़ते 'मीर' खोये गये,
कोई देखे इस जुस्तजू[7] की तरफ़।

* * *

---

[1]अफ़सोसमें हाथ मलना [2]भंवर [3]तट [4]चेहरा [5]बाल [6]बातचीत [7]खोज।

हाथ पहुंचा न उसके दामन तक,
मैं गरेबां करूँ न क्यों कर चाक[1]।

* * *

आंखें खोलीं हालके कहते देर हुई है बस, यानी,
सारी कहानी रात कही है 'मीर' अब चलकर सो ले टुक।

* * *

पास उसका बादे-मर्ग[2] है आदाबे-इश्क़[3] से,
बैठा है मेरी ख़ाकसे उठकर ग़ुबार[4] अलग।

* * *

'मीर' परेशां दिलके ग़ममें क्या क्या ख़ातिरदारी[5] की,
ख़ाकमें मिलते क्यों न फिरें अब ख़ून हो बह भी गया है दिल।

* * *

आगे तो कुछ उसके आहें गर्मे-शोलाफ़शानी थीं,
अब तो हुए हैं 'मीर' इक ढेरी ख़ाकस्तर[6] की जलकर हम।

* * *

'मीर' अपनी सब उम्र गयी है सबकी बुराई ही करते,
सर पर आया जानेका मौसम अब तो भला कर जावें हम।

* * *

ख़तरनाक थी वादिए-इश्क़[7] 'मीर',
गये इस पे भी हम क़दम-बर-क़दम[8]।

* * *

तारोंकी जैसे देखीं है आंखें लड़ानियां[9],
उस बेनिशां[10] की ऐसी हैं चंदीं[11] निशानियां।

---

[1]फाड़ना [2]मरनेकेबाद [3]प्रेमका शिष्टाचार [4]बगूले [5]आग बरसाने में लगन [6]राख [7]प्रेमकी घाटी [8]पैर बढाते हुए [9]लडानी [10]प्रियतम [11]कछ।

सर-रफ़्ता[1] सुन न 'मीर' का गर क़स्दे-ख़्वाब[2] है,
नींदें उचटतियां[3] हैं सुने यह कहानियां।

* * *

क्योंकि खुश-ख़्वां[4] न होवें अहले चमन[5],
हम उन्होंको जबान देते हैं।
गिले-ख़ूबां[6] में मीर मिह्र[7] नहीं,
हमको ग़ैरों[8] में सान देते हैं।

* * *

आंखें सफ़ेद, दिल भी जला इंतज़ार में,
क्या कुछ न हम भी देख चुके हिज्रे-यार[9] में।
शोर अब चमनमें मेरी ग़ज़लख़्वानी[10] का है 'मीर',
इक अंदलीब[11] क्या है, कहूं मैं हज़ार में।

* * *

सारी रात आंखोंके आगे ही मिरे रहता है,
गो कि वे चांद से मुखड़े को छिपा बैठे हैं।
क़ाफ़िला क़ाफ़िला जाते हैं चले क्या क्या लोग,
'मीरे' ग़फ़लत-ज़दा[12] हैरानसे क्या बैठे हैं।

* * *

तदबीर कोई बतावें जो आप[13] को संभालें,
जीनेकी अपने हम भी कोई तरह[14] निकालें।

---

[1]पागलपन [2]सोनेका इरादा [3]उचटती [4]अच्छी आवाज़ वाले [5]बाग़के (पक्षी) [6]माशूक़ोंका स्वभाव [7]दया [8]प्रतिद्वंद्वियों [9]विरह [10]ग़ज़ल पढ़ना [11]बुलबुल [12]आलसी [13]अपने [14]ढंग।

मिन्नत हज़ार करिए माने मने न हरगिज़,
'मीर' ऐसे बर्दको हम किस तरहसे मनालें।

* * *

देखकर वह राह चलता ही नहीं टुक वरना हम,
पाँव उसके, आंखों पर रख लेवें जो मंज़ूर हो।

* * *

ज़मींसे आसमां तक 'मीर' है शोरे-जुनूं[1] मेरा,
तहो-बाला[2] किया दोनोंमें इस ऊधम ने दुनियाको।

* * *

रंगे सुहबत[3] किसको दिखावें, ख़ूबी अपनी क़िस्मतकी,
सागरे-मै[4] दुश्मनको दो हो हमको ज़हर मंगाओ हो।
आंख झपक जाती नहीं तनहा आगे चेहर-ए-रोशन[5] के,
माह[6] भी बैठा जाता है जब मुंहसे नक़ाब उठाओ हो।
'मीर' हिक़ारत[7] से हम अपनी चुप रह जाते हैं, जान चली,
तूल[8] हमारे घटनेको देकर जैसे चिराग़ बढ़ाओ हो।

* * *

फेर अय्यामे-नहस[9] का मुझको बहुत कुढब आता है नज़र,
तुम भी ग़नीमत जानो मियां दस दिनके मेरे जीनेको।

* * *

साक़ीको चश्मे-मस्तसे ऊधर है देखना,
मसजिद हो या कि काबा, ख़राबात[10] हो तो हो।

* * *

---

[1]उन्माद की हलचल [2]उलट पलट [3]साथ बैठनेका मज़ा [4]शराबका प्याला [5]चमकता चेहरा [6]चाँद [7]घृणा [8]बढ़ावा [9]बुरे दिन [10]शराबख़ाना।

हाय सितम! नाचार मईशत[1] करनी पड़ी हर ख़ारके साथ,
जाने-अज़ीज़ चली जाती काश अबकी साल बहारके साथ।

* * *

हम जानते तो इश्क़ न करते किसूके साथ,
ले जाते दिलको ख़ाकमें इस आरज़ूके साथ।
मजरूह[2] अपनी छातीको बख़िया किया बहुत,
सीना गुथा है मीर हमारा रफ़ूके साथ।

* * *

अब वह नहीं करम कि भरन पड़ने लग गयी,
ज्यूं अब्र आगे लोगोंके दामन पसार देख।
ख़ाली पड़ा है ख़ान-ए-दौलत[3] वज़ीरका,
बावर[4] नहीं तो आसिफ़-आसिफ़[5] पुकार देख।

* * *

देखके दस्तो-पाए-निगारीं[6] चुपकेसे रह जायं न क्यों,
मुंह बोले है यारो गोया मेंहदी उसकी रचायी हुई।
इतने लोगोंमें चश्म[7] किसीकी क़हर[8] क़यामत आफ़त है,
तुमने नहीं देखी है साहब आंख कोई शरमाई हुई।

* * *

ज्यूं अब्र[9] बेकसाना[10] रोते उठे हैं घरसे,
बरसे है इश्क़ अपने दीवार और दर[11]से।
देखो न चश्मे-कम[12] से यह आंख डबडबाई,
सेराब[13] अब्र[14] होते देखे है चश्मे-तरसे[15]।

---

[1]साथ [2]घायल [3]भंडार [4]यक़ीन [5]आसिफ़ुद्दौला [6]सुदर हाथ पाँव [7]आँख [8]बला [9]बादल [10]निरीहसे [11]दरवाज़ा [12]सरसरी नज़र [13]भरपूर [14]बादल [15]भीगी आँख।

यह आशिक़ी है कैसी, ऐसे जियोगे कबतक,
तर्के-वफ़ा[1] करो हो मरनेके 'मीर' डरसे ?

* * *

न बक शेख़ इतना भी वाही तबाही,
कहां रहमते-हक़[2] कहां बेगुनाही।
मुझे 'मीर' ता-गोर[3] कांधा दिया था,
तमन्नाए-दिल ने तो यांतक निबाही।

* * *

अगर मसजिदसे आऊं 'मीर' तो भी लोग कहते हैं,
कि मैख़ाने[4] से फिर देखो वह शाहिदबाज़[5] आता है।

* * *

यूं फिरता हूं दश्तो-दर[6] में दूर उससे मैं सरगश्ता,
ग़मका मारा आवारा ज्यूं राह गया हो भूल कोई।

* * *

पत्ता पत्ता बूटा बूटा हाल हमारा जाने है,
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग़ तो सारा जाने है।
आशिक़ सा तो सादा कोई और न होगा दुनियामे,
जीके ज़ियां[7] को इश्क़में उसके अपना वारा जाने है।
क्या क्या फ़ितने[8] सर पर उसके लाता है माशूक़ अपना,
जिस बे दिल बेताबोतवां[9] को इश्क़का मारा जाने है।

* * *

शिकायत करूं हूं तो सोने लगे है,
मिरी सरगुज़श्त[10] अब हुई है कहानी।

---

[1]प्रेमका त्याग [2]ईश्वरकी दया [3]क़ब्रतक [4]शराब खाना
[5]आशिक़ मिज़ाज [6]जंगल जंगल [7]खोना [8]मुसीबतें [9]असक्त [10]कहानी।

बसंती क़बा पर तिरी मर गया है,
कफ़न दीजियो 'मीर' को ज़ाफ़रानी[1]।

* * *

दिल भी भरा रहता है मेरा जी भी रुंधा कुछ जाता है,
क्या जानूं मैं रोऊंगा कैसा दरिया चढ़ता आता है।
इश्क़ो-मुहब्बत क्या जानूं मैं लेकिन इतना जानूं हूं,
अंदर ही अंदर सीनेमें मेरे दिलको कोई खाता है।

* * *

नरमीसे कूए-यार[2] में जावे, तो जा नसीम,
ऐसा न हो कि उखड़ें कहीं दिल गड़े हुए।
आये हो बादे-सुलह[3] कभू नाज से तो यां,
मुंह फेर उधरसे बैठो हो जैसे लड़े हुए।

* * *

जुल्म सहे है दाग़ हुए है रंज उठे है दर्द खिंचे,
अब वह दिलमें ताब[4] नहीं जो लब[5] तक आहे-सर्द[6] खिंचे।

* * *

बस गयी जां ख़राब मुद्दत की,
हाल अपना ख़राब है सो है।
ख़ाक जलकर बदन हुआ है सब,
दिल जला सा कबाब है सो है।
ज़ुल्फ़ें उसकी हुआ करें बरहम[7],
हमको भी पेचो-ताब[8] है सो है।

* * *

---

[1]केसरिया [2]प्रियतमकी गली [3]सलाह होनेके बाद [4]ताक़त
[5]होंठ [6]ठंडी सांस [7]बिखरी, उलझी [8]चक्कर, परेशानी।

चाहत रोग बुरा है जी का, 'मीर' इससे परहेज भला,
अगले लोग सुना है हमने दिल न किसूसे लगाते थे।

* * *

दरपए-खून[1] 'मीर' के न रहो,
हो भी जाता है जुर्म आदम[2] से।

* * *

ठहरे हैं हम तो मुजरिम टुक प्यार करके तुमको,
तुमसे भी कोई पूछे तुम क्यों हुए थे प्यारे।
मैदाने-इश्क़में से चढ़ घोड़े कौन निकला,
मारे गये सिपाही जितने हुए उतारे।
जो मर रहे हैं उस पर उनका नहीं ठिकाना,
क्या जानिए कहां वे फिरते हैं मारे मारे।

* * *

अब सुलगने लगी है छाती भी,
यानी मुद्दत पड़े जला करिए।

* * *

मक़सूद[3] को देखें पहुंचे कबतक,
गर्दिश[4] में तो आसमां बहुत है।
अक्सर पूछे है जीते है 'मीर'?
अब तो कुछ मेहरबां बहुत है।

* * *

खींचके तेग़ा[5] अपना हरदम क्या लोगोंको डराते हो,
'मीर' जिगरदार आदमी है वह कब मरनेसे डरता है।

* * *

---

[1]जानके पीछे पड़ना [2]इंसान [3]लक्ष्य [4]चक्कर [5]तलवार।

नाला[1] जब गर्मे-कार[2] होता है,
दिल कलेजेके पार होता है।
मार रहता है उसको आख़िरकार,
इश्क़को जिससे प्यार होता है।
जब्र[3] है, क़हर[4] है, क़यामत है,
दिल जो बे इख़्तियार होता है।
राह तकते ही बैठें हैं आंखें,
उसका जब इंतज़ार होता है।
आह! किस जाए[5] बार[6] खोला 'मीर',
यां तो जीना भी बार होता है।

* * *

उस्तख़्वां कांप कांप जलते हैं,
इश्क़ने आग यह लगायी है।
दिलको खींचे है चश्मके-अंजुम[7],
आंख हमने कहां लड़ायी है।
मैं न आता था बाग़में उस बिन,
मुझको बुलबुल पुकार आयी है।
बेसतूं[8] कोहकन[9] ने क्या तोड़ा,
इश्क़की ज़ोर आज़माई है।

* * *

तिरे बंदे हैं हम ख़ुदा जानता है,
ख़ुदा जाने हमको तू क्या जानता है।

---

[1]रोना [2]ज़ोरपर [3]अत्याचार [4]मुसीबत [5]जगह [6]बोझ [7]तारों का आँख झपकाना [8]वह पहाड़ जिसे फ़रहादने शीरींको पानेकी आशामें काटकर उसमें से नहर निकाली थी [9]फ़रहाद।

जमानेके अवसर सितमगार देखे,
वही ख़ूब तर्ज़े-जफ़ा[1] जानता है।
जहां 'मीर' आशिक़ हवा-ख्वार[2] ही था,
यह सौदाई कब दिल लगा जानता है।

* * *

[1]अत्याचारका ढंग [2]लालची, वासनामय

छठवाँ दीवान

ज़मानेमें मिरे जोशे-जुनूं[1] ने,
क़यामतका सा हंगामा उठाया।
क़रीबे-दैर[2] ख़िज्र[3] आया था लेकिन,
हमें रस्ता न काबे का बताया।
हक़े-सुहबत[4] न तैरों[5] को रहा याद,
कोई दो फूल असीरों[6] तक न लाया।
इलाक़ा[7] 'मीर' था ख़ंजरसे उसके,
निदान अपना गला हमने कटाया।

* * *

न मिलियो चाहने वालेसे अपने,
न जाना तुझसे यह किनने कहा था।
बदनमें सुबहसे थी सनसनाहट,
इन्हीं सन्नाहटोंमें जी चला था।
सनमख़ाने[8] से उठ काबे गये हम,
कोई आख़िर हमारा भी ख़ुदा था।

* * *

क्या कहूं मुश्किल हुई तहरीरे-हाल[9],
ख़तका काग़ज़ रोनेसे नम हो गया।

---

[1]उन्माद [2]मन्दिरके पास [3]राह बतानेवाला [4]दोस्तीका ख्याल [5]पक्षी [6]कैदियों [7]वास्ता [8]मन्दिर [9]अपनी दशा लिखना।

क्या नमाज ऐ 'मीर' इस औक़ात[1] की,
जब कि क़द मेहराब सा ख़म[2] हो गया।

* * *

बातें हमारी याद रहें फिर बातें ऐसी न सुनिएगा,
पढ़ते किसूको सुनिएगा तो देर तलक सर धुनिएगा।

* * *

टुक रखले हाथ तनमें, नहीं और जाए-ज़ख़्म[3],
बस मेरे दिलका यार जी अब इम्तहां हुआ।

* * *

जी है जहां क़यामत दर्दो-अलम[4] रहा वां,
बीमारे-आशिक़ी में शब[5] सुबह तक कराहा।
करना वफ़ा नहीं है आसान आशिक़ीमें,
पत्थर किया जिगर में तब चाहको निबाहा।

* * *

लोगोंने पायी राखकी ढेरी मिरी जगह,
इक शोला मेरे दिलसे उठा था, जला गया।

* * *

इश्क़का मारा है, क्या पनपेगा 'मीर',
हाल है बदहाल इस बीमारका।

* * *

उचटती मुलाक़ात कब तक रहेगी,
कभी तू तहे-दिल[6] से भी यार होगा।

---

[1]वक़्त [2]टेढ़ा [3]ज़ख़्मकी जगह [4]दुखदर्द [5]रात [6]दिलकी गहराइयोंसे।

तुझे देखकर लग गया दिल, न जाना,
कि इस संगदिलसे हमें प्यार होगा।
यही होगा,—क्या होगा ?—'मीर' ही न होंगे,
जो तू होगा बेयार, ग़मख़्वार[1] होगा।

* * *

देर बद अहद वह जो यार आया,
दूरसे देखते ही प्यार आया।
बेक़रारीने मार रक्खा हमें,
अब तो उसके तईं क़रार[2] आया ?।

* * *

हज़ार तरहसे आवे घड़ी जुदाईमें,
मिलाप जिससे हो ऐसा न इक हुनर आया।
निसार क्या करें हम ख़ानमां-ख़राब[3] असीर[4],
कि घर लुटा चुके जब यार अपने घर आया।

* * *

क़द्र जानो कुछ हमारी वर्ना पछताओगे तुम,
फिर नहीं मिलनेका तुमको कोई हमसा आश्ना[5]।
कैसा ही पानी हो, उसको पीरी[6]में जाता है पैर,
था जवानीमें मगर तू 'मीर' दाना[7] आश्ना[8]।

* * *

गये थे सैरे-चमनको उठकर गुलोंमें टुक जी लगा न अपना,
तलाश जोशे-बहार[9]में की, निगार[10] गुलशनमें था न अपना।

---

[1]रंजीदा [2]चैन [3]बर्बाद [4]क़ैदी [5]दोस्त [6]बुढ़ापा [7]समझदार [8]तैराक [9]वसंतका जोश [10]प्रियतम।

मिला तो था वह ब-ख़्वाहिशे-दिल,[1] मज़ा भी पाते मिलेसे लेकिन,
फिरीं जो मस्तीमें उसकी आंखें सो होश हमको रहा न अपना।
जहांमें रहनेको जी बहुत था न कर सके 'मीर' कुछ तवक़्क़ुफ़[2],
बिना[3] थी नापायदार[4] उसकी इसीसे रहना बना न अपना।

* * *

अब यार दोपहरको खड़ा टुक जो यां रहा,
हैरत[5]से आफ़ताब[6] जहांका तहां रहा।
जो क़ाफ़िले गये थे उन्होंकी उठी भी गर्द,
क्या जानिए ग़ुबार[7] हमारा कहां रहा।

* * *

सुख़न-मुश्ताक़[8] है आलम[9] हमारा,
बहुत आलम करेगा ग़म हमारा।
पढ़ेंगे शेर रो रो लोग बैठे,
रहेगा देरतक मातम हमारा।
नहीं है मरजए-आदम[10] अगर ख़ाक,
किधर जाता है क़द्दे-ख़म[11] हमारा।
ज़मीनो-आसमां ज़ेरो-ज़बर[12] हैं,
नहीं कम हश्र[13]से ऊधम हमारा।

* * *

जो कोई उस बेवफ़ासे दिल लगाता है बहुत,
वह सितमगर उस सितमकश[14]को सताता है बहुत।

---

[1]दिलसे [2]देर [3]नींव [4]कमज़ोर [5]आश्चर्य [6]सूरज [7]धूल [8]काव्यप्रेमी [9]संसार [10]मनुष्यके जानेकी जगह [11]टेढ़ा क़द [12]उलट पलट [13]क़यामत प्रलय [14]बेचारा।

उसके सोनेसे बदनसे किस क़दर चस्पां[1] है हाय,
जामा किबरीती[2] किसूका जी जलाता है बहुत।

* * *

देर भी कुछ लगी न मरते हमें,
उम्र जाती रही शिताब[3] बहुत।
ढूंढते उसको कूचे कूचे फिरे,
दिलने हमको किया खराब बहुत।
देरतक काबेमें थे शब[4] बेहोश,
पी गये 'मीरजी' शराब बहुत।

* * *

दिल गये, आफ़त आयी जानोंपर,
यह फ़साना[5] रहा ज़बानोंपर।
इश्क़में होशो-सब्र सुनते थे,
रख गये हाथ सो तो कानोंपर।

* * *

कहते थे हम कि उसको देखा करो न इतना,
दिल ख़ूं किया न अपना आंखें लड़ा लड़ाकर?
चलते थे हौले हौले हम यूं तो आशिक़ीमें,
पर उनने जी ही मारा आख़िर जला जलाकर।

* * *

अब जो छाती जली फ़िल-वाक़े[6] लुत्फ़ नहीं है शिकायतका,
सब्र करो, क्या होता है यूं फोड़े दिलके फफोले टुक।

---

[1]चिपका, कसा [2]पीला, गंधकके रंग का [3]जल्दी [4]रात [5]कहानी [6]वास्तवमें।

आंखें जो खोलीं सोतेसे तो हालके कहते मुझको कहा,
सारी रात कहानी कही है तू भी उठकर सो ले टुक।
ऐसे दर्दे-दिल करनेको 'मीर' कहांसे जिगर आवे,
गर्मे-सुख़न[1] लोगोंमें हो, कोई बात करे तो रो ले टुक।

* * *

बहार आयी पर एक पत्ती भी गुलकी,
न आयी असीरानें-बेबालोपर[2] तक।
बहुत 'मीर' फिर हम जहांमें रहेंगे,
अगर रह गये आज शब[3]की सहर[4]तक।

* * *

इन जलती हड्डियोंपर हरगिज़ हुमा[5] न बैठे,
पहुंची है इश्क़की तप[6] ऐ 'मीर' उस्तख़्वां[7]तक।

* * *

गर्म[8] है उसकी तरफ़ जानेको हम, लेकिन मीर,
हर क़दम ज़ोफ़े-मुहब्बत[9]से ढले जाते हैं।

* * *

मर गये ना-उमेद हम महजूर[10],
ख़्वाहिशें जीकी अपने जीमें रहीं।
मरते थे उस गलीमें लाखों जहां,
हम भी मारे गये निदान वहीं।

* * *

---

[1]बात करता हुआ। [2]पर नुची हुई पिजड़ेमें बंद चिड़ियां [3]रात [4]सुबह [5]हड्डिया खानेवाला एक पक्षी [6]गर्मी [7]हड्डी [8]इच्छुक [9]प्रेमकी थकन [10]विरही।

उससे घबराके जो कुछ कहनेको आ जाता हूं,
दिलकी फिर दिलमें लिये चुपके चला जाता हूं।
गर्मीए-इश्क़[1] है हलकी भी जो हमदम दिलमें,
रोज़ो-शब[2] शामो-सहर[3] मैं तो जला जाता हूं।

* * *

शायद बहार आयी है दीवाना है जवान,
ज़ंजीरकीसी आती है झंकार कानमें।
तारे तो यह नहीं, गिरी आहोंसे रातकी,
सूराख़ पड़ गये हैं तमाम आसमानमें।

* * *

मुझे इश्क़ उस पास यूं ले गया,
कोई जैसे लावे गुनहगारको।
कोई दिन करे ज़िंदगी इश्क़में,
जो दम लेने दें दिलके बीमारको।

* * *

मैंने कहा कि फूंक रही है तन बदनमें आग,
बोला कि इश्क़ ही में पड़े अब जला करो।
दिल जानेका फ़साना ज़बानोंपे रह गया,
अब बैठे दूरसे यह कहानी सुना करो।
अब देखूं उसको मैं तो मिरा जी न चल पड़े,
तुम हो फ़क़ीर 'मीर' कभू यह दुआ करो।

* * *

---

[1]प्रेमकी तड़प [2]रात दिन [3]सुबह शाम।

इब्तदा[1]में ही मर गये सब यार,
इश्क़की पायी इंतहा[2] न कभू।

* * *

मुंह खुले उसके चांदनी छिटकी,
बोस्तो संरे-माहताब[3] करो।
'मीर'जी ! राज़े-इश्क़[4] होगा फ़ाश[5],
चश्म[6] हर लहज़ा[7] मत पुरआब[8] करो।

* * *

क्या जानें लोग इश्क़का राजो-नियाज़[9] 'मीर',
इक बात उससे हो गयी दो दो बचनके साथ।

* * *

हालाते-इश्क़[10] रंजो-दर्दो-बला मुसीबत,
दिल-दादा[11] 'मीर' जाने, क्या जाने दिल-नदादा[12]।

* * *

उस गलीसे जो उठ गये बेसब्र,
'मीर' गोया कि वे जहां[13]से गये।

* * *

बालो-पर भी गये बहारके साथ,
अब तवक़्क़ो[14] नहीं रिहाईकी।
कोहकन[15] क्या पहाड़ तोड़ेगा,
इश्क़ने ज़ोर-आज़माई की।

---

[1]आरंभ [2]अन्त [3]चाँदनीकी सैर [4]प्रेमका भेद [5]खुला [6]आँख [7]हरदम [8]आंसूसे भरी [9]भेदकी बातें [10]प्रेमकी दशा [11]जिसने दिल दिया हो [12]जिसने दिल न दिया हो [13]संसार [14]उम्मेद [15]फ़रहाद।

इक निगहमें हजार दिल मारे
साहरी[1]की कि दिलरुबाई[2]की

* * *

कहो तो कब तईं यूं साथ तेरे प्यार रहे,
कि देखा जबसे तुझे जीको मार मार रहे।
करेंगे छातीको गुलजार[3] हम जलाकर दाग़,
जो गुल[4]के सीनेमें ऐसा ही ख़ार ख़ार[5] रहे।
न करिए गिरिअ-ए-बेइख़्तियार[6] हरगिज़ 'मीर',
जो इश्क़ करनेमे दिलपर कुछ इख़्तियार रहे।

* * *

दिल ख़ूं जिगरके टुकड़े जब 'मीर' देखता हूं।
अबतक जबांसे अपनी मैं कुछ कहा नहीं है।

* * *

जबसे जहां[7] है तबसे ख़राबी यही है 'मीर',
तुम देखकर जमानेको हैरान क्या रहे।

* * *

मस्ती शराबकी ही सी है आमदे-शबाब[8],
ऐसा न हो कि तुमको जवानी नशा करे।

* * *

फिरते हैं 'मीर' ख़्वार कोई पूछता नहीं,
इस आशिक़ीमें इज़्ज़ते-सादात[9] भी गयी।

* * *

यह वह्म है कि आंखें मिरी लग गयीं कहीं,
तुम मार डालियो न मुझे इस गुमानसे।

* * *

---

[1]जादू [2]प्रियतम होना [3]बाग़ [4]प्रियतम [5]दुश्मनी [6]बेक़ाबू होकर रोना [7]संसार [8]यौवनारंभ [9]सय्यद होनेका सम्मान।

रहा हूँ किए आंसू पलकोंपे शब[1],
कहांतक यह अख़्तर-शुमारी[2] रहे।

* * *

वह दिल नहीं रहा है न अब वह दिमाग़ है,
जी तनमे अपने बुझतासा कोई चिराग़ है।
मुद्दत हुई कि जानू[3]से उठता नहीं है सर,
कुढ़नेसे रात दिनके हमें कब फ़राग़[4] है।

* * *

अब न हसरत रहेगी मरने तक,
मौसमे-'गुल'[5]में हम असीर[6] हुए।
बात का हमसे उनको कब है दिमाग़,
'मीर' दुरवेशी[7] में अमीर हुए।

* * *

तुम करो शादे-ज़िंदगी[8] कि मुझे,
दिलके ख़ूं होनेका बहुत ग़म है।
कुछ तो निस्बत[9] है उसके बालोंसे,
यूं ही क्या हाले-'मीर'[10] दरहम[11] है?।

* * *

हम कभू ग़मसे आह करते थे,
आसमां तक सियाह करते थे।

* * *

---

[1]रात [2]तारे गिनना [3]जंघा [4]फ़ुरसत [5]बहार [6]कैद [7]फ़कीरी [8]जीवनसे प्रसन्न [9]सम्बन्ध [10]'मीर' की दशा [11]उलझी हुई।

अच्छा होता नहीं मरीजे-इश्क़,
साथ जीके है दिलकी बीमारी।
चले जाते है रात दिन आंसू,
दीदए-तर[1]की ख़ैर[2] है जारी।
'मीर' चलनेसे क्यों हो ग़ाफ़िल तुम,
सबके हां[3] हो रही है तय्यारी।

* * *

धज्जियां जामेको कर दूंगा जुनूं[4]मे अबके,
गर गरेबां-दरी[5]का काम मिरे हाथ रहे।

* * *

घरमे जो लगता नहीं उस बिन तो हम होकर उदास,
दूर है जाते निकल हिजरां[6]से घबराये हुए।

* * *

चर्ख़[7]पे अपना मदार[8] देखिए कबतक रहे,
ऐसी तरह रोजगार[9] देखिए कबतक रहे।
सहरे कहांतक पड़ें आंसुओंके चेहरेपर,
गिरिया[10] गले हीका हार देखिए कबतक रहे।
आंखें तो पथरा गयीं तकते हुए उसकी राह,
शामो-सहर[11] इंतज़ार देखिए कबतक रहे।
गेसू-ओ-रुख़सारे-यार[12] आंखोंमें हीं फिरते है,
'मीर' यह लैलो-निहार[13] देखिए कबतक रहे।

* * *

---

[1]भीगी आंख [2]ख़ैरात [3]यहां [4]प्रेमोन्माद [5]कपड़े फाड़ना [6]विरह [7]आसमान [8]भाग्यनिर्णय [9]दुनिया [10]रोना [11]सुबह शाम [12]प्रियतमका चेहरा और बाल [13]रात दिन।

गये इन क़ाफ़िलोंसे भी उठी गर्द,
हमारी ख़ाक क्या जाने कहां है।

* * *

जुन्नार[1] पहना सबहा[2]के रिश्ते[3]के तार तोड़,
तर्के-नमाज़ो-रोज़ा-ओ-इस्लाम[4] कर चुके।

* * *

इश्क़ क्या कोई इख़्तियार करे,
वही जो मारे जिसको प्यार करे।
आंखे पथरायीं छाती पत्थर है,
वह ही जाने जो इंतज़ार करे।
फूल क्या 'मीर' जिसको वह महबूब[5],
सर चढ़ावे, गलेका हार करे।

* * *

यह राहे-दूरे-इश्क़[6] नहीं होती 'मीर' तं,
हम सुबह भी चले गये है शाम भी चले।

* * *

---

[1]जनेऊ [2]माला [3]डोरा [4]नमाज़ रोज़ा और इस्लामका त्याग
[5]प्रियतम [6]प्रेमकी लम्बी राह।

३—मसनवियां

शोलए-इश्क़

मुहब्बतने ज़ुल्मत[1]से काढ़ा है नूर[2],
न होती मुहब्बत न होता ज़हूर[3]।

मुहब्बत है इल्लत[4] मुहब्बत सबब[5],
मुहब्बतसे होते हैं कारे-अजब[6]।

मुहब्बत बिन इस जा[7] न आया कोई,
मुहब्बतसे ख़ाली न पाया कोई।

मुहब्बत ही इस कारख़ानेमें है,
मुहब्बतसे सब कुछ ज़मानेमें है।

मुहब्बतसे सबको हुआ है फ़राग़[8],
मुहब्बतने क्या क्या दिखाये हैं दाग़।

मुहब्बत अगर कारपरदाज़[9] हो,
दिलोंके तईं सोज़[10]से साज़[11] हो।

मुहब्बतकी आतिश[12]से अख़गर[13] है दिल,
मुहब्बत न होवे तो पत्थर है दिल।

मुहब्बतको है इस गुलिस्तां[14]में राह,
कलीके दिले-तंगमें तै है चाह।

---

[1]अंधेरा [2]उजाला [3]प्रकट होना [4]कारण [5]कारण [6]अजीब काम [7]जगह [8]दुनिया [9]फ़ुरसत, मुक्ति [10]कार्यरत [11]जलन [12]संगीत [13]आग [14]चिनगारी [15]बाग़।

मुहब्बत ही से दिलको रो बैठिए,
मुहब्बतमें जी मुफ़्त खो बैठिए।
मुहब्बत लगाती है पानीमें आग,
मुहब्बतसे है तेग़ो-गर्दनमें लाग।
मुहब्बतसे है इंतज़ामे-जहां,
मुहब्बतसे गर्दिश[1]में है आसमां।
मुहब्बतसे रोते गये यार सब,
मुहब्बतसे हो हो गया हूं जुनूं[2]।
मुहब्बतसे आता है जो कुछ कहो,
मुहब्बतसे हो जो वह हर्गिज़ न हो।
मुहब्बतसे परवाना आतिशबजां[3],
मुहब्बतसे बुलबुल है गर्मे-फ़ुग़ां[4]।
इसी आगसे शमअको है गुदाज़[5],
इसीके लिए गुल है सरगर्मे-नाज़[6]।
मुहब्बतसे यारोंके है रंग ज़र्द,
दिलोंमें मुहब्बतसे उठते है दर्द।
गया फ़र्स[7] नाशाद[8] इस इश्क़ने,
खपी जाने-फ़रहाद इस इश्क़में।
हुई इससे शीरींकी हालत तबाह,
किया इससे लैलाने ख़ेमा सियाह।
सुना होगा वामिक़पे जो कुछ हुआ,
नल इस इश्क़में किस तरहसे मुआ[9]।

---

[1]चक्कर [2]जलने वाला [3]रुदनशील [4]पिघलना [5]गर्वीला [6]मजनूं [7]दुखी [8]मरा।

जो अजरापे गुजरा सो मजकूर[1] है,
बमनका भी अहवाल मशहूर है।
सितम इस बलाके भी सहते गये,
सब इस इश्कको इश्क कहते गये।
नये इसके चर्चे हिकायत[2] सुनी,
गहे[3] शक गाहे शिकायत सुनी।
इसीसे क़यामत है हर चार ओर,
इसी फ़ितनागर[4]का है आलममें शोर।
कब इस इश्कने ताजाकारी[5] न की,
कहां खूनसे गाजाकारी[6] न की।
जमानेमें ऐसा नहीं ताजा कार,
ग़रज़ है ये आजूब-ए-रोजगार[7]।

कथारंभ

अजब काम सीनेमें इससे हुआ,
अजब[8] अहले आलमको जिससे हुआ।
कि वां इक जवां था परसराम नाम,
खुश अंजाम[9]-ओ-खुश क़ामत[10]-ओ-खुशखराम[11]।
जवानीके गुलशनका वह आबोरंग[12],
गुलिस्तांपे काम उसकी खूबीसे नंग[13]।

---

[1]मशहूर [2]कहानी [3]कभी [4]उपद्रवी [5]नयी बात [6]मुह पर पाउडर लगाना [7]ससारका वैचित्र्य [8]विस्मय [9]सुंदर [10]अच्छे क़दवाला [11]अच्छी चाल वाला [12]सौन्दर्य [13]लज्जित।

जिधर निकले रंगींअदाईके साथ,
चले जायं जो ख़ुशनुमाई[1]के साथ।

खुले बाल चलता था वह सर्वेनाज़[2],
क़दमबोस[3]को आती उम्रे-दराज़[4]।

जिधरको वो टुक गर्मे-रफ़्तार[5] हो,
क़यामत उधरसे नमूदार[6] हो।

निगह गर्म उसकी जिधर जा लड़ी,
कहे तू कि ऊधरको बिजली गिरी।

सियह चश्म उसकी वो बदमस्त थी,
निगाहोंसे शमशीर-बरदस्त[7] थी।

ख़रामां[8] निकलता वो जिस राहसे,
क़यामत थी वां नाला-ओ-आहसे।

फ़िदा उसपे जी जान हर एकका,
कि मक़सूदे-दिल[9] था बदोनेक[10] का।

कई गिर्दो-पेश[11] उसके बारफ़्तगां[12],
कई ईधर ऊधर जिगरतफ़्तगां[13]।

कोई कुश्ता[14] था शौक़े-रफ़्तारका,
कोई नीमजां[15] ज़ौक़े-दीदार[16]का।

किसूकी नज़रमें कमरकी लचक,
किसूके जिगरमें पलककी कसक।

---

[1]सुंदरता [2]सुंदर चालवाला [3]पैर चूमना [4]लम्बी उम्र [5]चले [6]प्रकट [7]हाथमें तलवार लिए [8]चलता हुआ [9]वांछित [10]हर अच्छे बुरे [11]चारों ओर [12]प्रेमी [13]दुखी, प्रेमी [14]मारा हुआ [15]अधमरा [16]देखनेकी इच्छा।

कई हैरती[1] तर्ज़े-गुफ़्तार[2] के,
कई आरज़ूकश[3] थे पैकार[4] के।

कोई ज़ुल्फ़से उसकी मजनूं रहे—,
किसूका तबस्सुम[5] से दिल ख़ूं रहे।

कोई दिल सितमकुश्तए-यकनिगाह[6],
कोई जान होठोंपे मौक़ूफ़[7] आह।

किसूपर फ़सूं[8] गर्दिशे-चश्म[9] का,
किसीपर ग़ज़ब ग़मज़-ओ-ख़श्म[10] का।

उन्होंमेंसे इक आशिक़े-ज़ार था,
इस आफ़तसे उसको सरोकार[11] था।

कई दिनमें जाकर जो उससे मिला,
किया उसने हवसे ज़ियादा गिला[12]।

कि ऐ नाज़नीं[13]! आह किसने कहा,
कि तू हालसे मेरे ग़ाफ़िल रहा।

मगर[14] सिद्दे-रह[15] था किसूका फ़रेब,
मिला तुझसे भी कोई दुश्मन-शकेब[16]।

कोई ज़ुल्फ़ ज़ंजीरे पा[17] हो गयी,
कि मसदूद[18] राहे-वफ़ा[19] हो गयी।

तरह[20] किसकी चितवनकी दिलमें खुपी,
जिगरमें पलक शोख़ किसकी चुभी।

---

[1]एक टक देखने वाला [2]बात करनेका ढंग [3]आकांक्षी [4]तेज बातचीत [5]मुसकान [6]एक निगाहका मारा [7]निर्भर [8]जादू [9]आंखें मटकना [10]नाराज़ी [11]लगावट [12]शिकायत [13]प्यारे [14]शायद [15]बाधक [16]प्रिय [17]पाँवकी ज़ंजीर [18]बन्द [19]प्रेमका मार्ग [20]सुंदरता।

किसी चश्मने तुझको जादू किया,
मिरे जामे-इशरत[1]को लोहू किया।

कहा उनने थी कदख़्वाई[2] मिरी,
न थी बेसबब यह जुदाई मिरी।

न फ़ुरसत मुझे सुबह अब है न शाम,
तरफ़ उसके है दिलको मैले-तमाम[3]।

उसे भी मिरे साथ इख़्लास[4] है,
दिलोंको बहम[5] राब्ता[6] ख़ास है।

उसे मुझसे है निस्बते-आशिक़ी[7],
वो रहती है बेताक़ते-आशिक़ी[8]।

नहीं उसको यकलहज़ा[9] ताबे-फ़िराक़[10],
जुदाई मिरी उसपे गुज़रे है शाक़[11]।

निकलता हूँ घरसे जो मैं एक आन,
तो पाता हूं जाकर उसे नीमजान[12]।

न देखे जो मुझको तो मर जाय वह,
वहीं जीसे अपने गुज़र जाय वह।

जो पहुंचे मिरी झूठ उसे बदख़बर,
तो कर बैठे सच अपने जीका ज़रर[13]।

ग़रज़ उसको ताबो-तहम्मुल[14] नहीं,
शकेबाइए-हिज्र[15] बिल्कुल नहीं।

---

[1]ऐश्वर्यका प्याला [2]शादी [3]पूरा प्रेम [4]सच्चा प्रेम [5]परस्पर [6]लगावट [7]प्रेमसम्बन्ध [8]प्रेमकी मारी [9]एक दम [10]विरह सहनशक्ति [11]कष्टकर [12]अधमरी [13]नुक़सान [14]सहनशक्ति [15]विरहमें सन्तोष करना।

ये सुनकर कहा उस दिलअफ़गार[1]ने,
सितमकुश्त - ए - दूरी-ए - यार[2]ने।
कि मुझको नहीं तेरी बातें क़बूल,
ये मक्रे-ज़नां[3] हैं तू इन पर न भूल।
ये ज़ाहिरमें हरचंद[4] हों रश्के-माह[5],
वलेकिन हैं बातिन[6]में मारे-सियाह[7]।
जहांमें फ़रेब उनका मशहूर है,
ज़बानोंपे मक्र इनका मज़कूर[8] है।
पये-इम्तहां[9] आक़बत[10] यक नफ़र[11],
मुक़र्रर हुआ ताकि जाय उसके घर।
कहे "ग़र्क़े-दरिया[12] हुआ परसराम,
हुई ज़िन्दगानीकी सुब्ह उसकी शाम।
गया था नहानेको वक़्ते-सहर,
सो डूबा वो ख़ुर्शीदे-रोशन-गुहर[13]।
किया मौजे-दरिया[14] ने सरसे गुज़ार,
उठा तबए-नाज़ुक[15] से उसके ग़ुबार।
वो गेसू जो बिखरे थे बालाए-आब[16],
सो अब मौजे-दरियाको हैं पेचो-ताब[17]।
फिरीं थीं जो वे अंखड़ियां आबमें,
सो वे गर्दिशें अब हैं गिर्दाब[18] में।

---

[1]दुखी (परसरामका प्रेमी) [2]प्रियके विरहका मारा [3]त्रिया चरित्र [4]बहुत [5]सुंदर [6]दिल [7]काले सांप [8]मशहूर [9]परीक्षाके लिए [10]आखिर [11]व्यक्ति [12]नदीमें डूबा [13]चमकनेवाला सूरज [14]नदीकी लहर [15]नाज़ुक दिल [16]पानीके ऊपर [17]चक्कर [18]भंवर।

तमन्नामें थे जिसकी सब दिलफ़िगार[1],
सो दरियाको अब है वो बोसो-कनार[2]।"

न समझा वह नाफ़हमे-असरारे इश्क़[3],
न सोचा वो नातजुर्बाकारे-इश्क़।

कहा "ग़र्क़े-दरिया हुआ परसराम,
हुआ काम उस रश्के-मह[4] का तमाम।

कहे तू कि मौजों[5]को था इंतज़ार,
कि बस्तो-बग़ल[6] हो गयीं एकबार।

गया बैठ पानीमें ऐसा शिताब[7],
कि गोया लबे-आब[8]का था हुबाब[9]।

किनारेपे दरियाके इक शोर है,
बहाले-तबाह[10] एक जमहूर[11] है।

कोई सरपे इस ग़मसे डाले है ख़ाक,
किसीने किया है गरेबान चाक"।

सुना उसकी हमसर[12] ने जब ये सुख़न[13],
हुआ मौजज़न[14] बहरे-रंजो-मुहन[15]।

गिरी होके बेजान वह दर्दमंद,
हुआ शोर नौहे[16] का घरसे बुलंद।

वो आया जो था दिल-परीशां गया,
कि इस वाक़ए[17] से पशेमां[18] गया।

---

[1]प्रेमी [2]मिलन रत [3]प्रेमके भेदसे अनजान [4]चांदको शरमाने-वाला [5]लहरों [6]चिमटा हुआ [7]जल्दी [8]किनारा [9]बुलबुला [10]दुखी [11]भीड़ [12]पत्नी [13]बात [14]लहरें मारने लगा [15]दुखका समुद्र [16]रोना-पीटना [17]घटना [18]लज्जित।

ख़बर ले गया उस के जूवतर[1],
जो था दरपए-इम्तहां[2] बेख़बर।

गया होश सुनकर परसरामका,
दिवाना हुआ इश्क़के कामका।

उठा बेख़ुदो[3]-बेख़िरद[4] बेहवास,
गिरा आके उस पैकरे-मुर्दा[5] पास।

लगा कहने "ऐ मायए-ज़िंदगी[6],
मुझे मुंहसे तेरे है शर्मिंदगी।

क्या जल्द रख़्ते-सफ़र[7] तूने बार[8],
न मेरा किया आह टुक इंतज़ार।

न मेरी सुनी कुछ न अपनी कही,
मिरे तेरे दोनोंके जीमें रही।"।

ज़मीं परसे आख़िर उठाया उसे,
लबे-आब जाकर जलाया उसे।

जब आग उसके पैकर[9]पे सब छा गयी,
मुहब्बत अजब वां दिखला गयी।

वह सरगर्में-फ़रियादो-ज़ारी[10] हुआ,
लहू उसकी आंखोंसे जारी हुआ।

जिगर ग़ममें यकलख़्त[11] ख़ूं हो गया,
रुका दिल कि आख़िर जुनूं हो गया।

---

[1]बहुत जल्दी [2]परीक्षा लेनेवाला (परसराम) [3]आत्म-विस्मृत [4]पागल [5]मृत शरीर (पत्नी) [6]जीवन निधि [7]यात्राका सामान [8]उठाया [9]शरीर [10]रुदनशील [11]एकदम।

गये होशो-सब्र उसके यकबारगी,
तबीयतमे आयी इक आवारगी।

सरासीमगी[1]से बगूला हुआ,
फिरे इस तरह जैसे भूला हुआ।

न जीको तसल्ली न दिलको क़रार,
कफ़े-ग़म[2]में सररिश्तए - इख्तियार[3]।

कभू याद कर उसको नालां रहे,
कभू टुक जो भूले तो हैरां रहे।

कभू यां कभू वां बहाले-ख़राब[4],
वही बेक़रारी वही इज़्तराब[5]।

रहे घर तो आशोबगह वह गली,
चमनमे जो ले जाये तो बेकली।

कभू मुत्तसल[6] होंठपर आहे-सर्द,
कभू दस्त-बरदिल[7] कि दिलमें है दर्द।

हुई रफ़्ता रफ़्ता जो वहशत[8] ज़ियाद[9],
लगा भागने सबसे वह नामुराद[10]।

कुछ अपने बदो-नेकको सुध नहीं,
निकल जाय तनहा[11] कहींका कहीं।

कभू जाके सहरा[12]से लावें उसे,
कभू रोते दरियापे पावे उसे।

---

[1]परेशानी [2]रंजके हाथ [3]काबूकी डोर [4]दुखी [5]तड़प [6]हृदन स्थल [7]लगातार [8]दिलपर हाथ रखे हुए [9]उन्माद [10]अधिक [11]अभागा [12]अकेला [13]जंगल।

कभू ख़ाक मलता है मुंहपर खड़ा,
कहीं है ख़राबीमें बेसुध पड़ा।

* * *

किनारेपे रहता था इक दामदार[1],
रहा रात उसके यह क़ुर्बो-जवार[2]।

कहा उसकी औरतने उस रातको,
नहीं तुझसे जी चाहता बातको।

तुझे फ़िक्र कुछ अब हमारी नहीं,
तू जाता नहीं शामसे अब कहीं।

तिरा शब[3]को दरियामे पड़ता था दाम[4],
तो चलता था बारे[5] मईशत[6] का काम।

वो बोला कि मैं भी परीशान हूं,
बहुत तंगदस्ती[7]से हैरान हूं।

कि इक शोलए-तुंद[8] पुर-पेचो-ताब[9],
फ़लक[10]से उतरता है नज़दीके-आब[11]।

ठहरता जो है फिर किनारेपे वां,
कहे है, "परसराम तू है कहां?"।

सुना हाल शोले[12] का सय्याद[13] से,
धुआं इक उठा जाने-नाशाद[14] से।

* * *

कियां[15] अक़्लकी उनने बातें जो वां,
वो आशिक़ जो था दरपए-इम्तहां[16]।

---

[1]मछवाहा [2]समीप [3]रात [4]जाल [5]किसी तरह [6]जिंदगी [7]ग़रीबी [8]तेज़ लपट [9]चक्कर काटती [10]आसमान [11]पानीके पास [12]लपट [13]शिकारी [14]दुखी प्राण [15]की [16]परीक्षोद्यत।

लगा कहने यह आरज़ू थी मुझे,
कि इक रोज़ हुशियार देखूं तुझे।
मुक़र्रर[1] किया है कई दिनसे यह,
कि आयंदा रहिए तिरी खाके-रह[2]।
जो इसमें है खुशतर[3] तो हूं मैं भी साथ,
रहेंगे लबे-आब[4] ही आज रात।
हुए आक़बत[5] सूए-दरिया[6] रवां[7],
न पैदा[8] किसूपर ये राज़े-निहां[9]।
हुए नावपर शामको जब सवार,
कहा उनने यां एक है दामदार[10]।
उसे साथ लो तो बड़ी बात है,
कि दरियामें फिरना है और रात है।
लिया आखिरुल-अम्र[11] हमरह[12] उसे,
बिठाया क़रीब अपने यह कह उसे।
कहां शोला-ए-सरकश[13] आता है यां,
किधर पेचो-ताब[14] आके खाता है यां।
ये सय्याद[15] हो से था मह्वे-सुराग़[16],
जिगर आतिशे-शोक़[17] रखती थी दाग़।
कि होकर फ़रोग़[18] इक सूए-आसमां[19],
तड़पने लगा जैसे आतिश-बजां[20]।
पुकारा, "कहां है परसराम तू,
मुहब्बतका टुक देख अंजाम तू।

---

[1]तय [2]पावंकी धूल [3]प्रसन्न [4]नदीके किनारे [5]आखिर [6]नदीकी ओर [7]चले [8]प्रकट [9]छिपा भेद [10]मछवाहा [11]अंततः [12]साथ [13]तेज़ लपट [14]चक्कर [15]शिकारी [16]पता लगा रहा था [17]प्रेमाग्नि [18]ऊंचा [19]आकाशकी ओर [20]जैसे दिलमें आग लगी हो।

कि मैं जुमलातन[1] आतिश-तेज[2] हूं,
दिले-गर्मसे शोलाअंगेज[3] हूं।

भड़कती है जब आग दिलकी मिरे,
लबे-आब उतरूं हूं ग़म से तिरे।

मगर[4] सोज़िशे-दिल[5] हो कम आबसे,
बुझेगी मिरी इस तपोताब[6] से।

सो यह आब रखता है रोग़नका[7] काम,
किया इश्कने आह दुश्मनका काम।"।

यह बेताब[8] सुनकर हुआ बेक़रार,
सफ़ीने[9] से उतरा बसद-इज़्तराब[10]।

हुआ हमदम[11] उस आतिश-अंगेज़[12]से,
कहा उस बलाए-दिलआवेज़[13]से।

कि, "मैं हूं परसराम ख़ानाख़राब[14],
मिरा दिल भी इस आगसे है कबाब।

मिरे भी जिगरमे यही सोज़[15] है,
यही मुझको जलना शबो-रोज़[16] है।

मुहब्बत तिरी बर्क़े-ख़िरमन[17] हुई.
तिरी दोस्ती जी की दुश्मन हुई"।

सुख़न-मुख़्तसर[18] कुछ वो शोला[19] चला,
कुछ इक अपनी जागहसे यह दिल जला।

---

[1]सरसे पैरतक [2]भड़कती आग [3]आग बरसानेवाला [4]शायद [5]दिलकी जलन [6]जलन, तड़प [7]तेल [8]दुखी [9]नाव [10]तड़पकर [11]मिल गया [12]आग बरसानेवाली [13]ख़ूबसूरत बला [14]बरबाद [15]जलन [16]रात दिन [17]खलिहान पर गिरनेवाली बिजली [18]संक्षेपमें [19]लपट।

बहम[1] गर्म जोशी[2] से यकजा[3] हुए,
कि गुज़री थी मुद्दत भी तनहा[4] हुए।
वो शोला रहा एक जा मुश्तअल[5],
कहे तू, तसल्ली हुए जानो-दिल।
यकायक भड़क कर वो जलने लगा,
फिर ईधर उधर फिरने चलने लगा।
किया पास पानीके आकर सऊद[6],
रही रोशनी सी कोई दम नमूद[7]।
फिर आगे किसू पर न पैदा हुआ,
न जाना कि वो शोला फिर क्या हुआ।
उठे ढूंढ़ने होके सब ना सबूर[8],
किनारे पे दरियाके नज़दीको-दूर।
न पाया कहीं उसको हैरां हुए,
निहायत ही खातिर-परीशां[9] हुए।
मुहब्बतने ऐसा खपाया उसे,
कि हरगिज़ किन्होंने न पाया उसे।
फिरे ख्वार हो होके नाचार सब,
किसीको तहय्युर[10] किसीको अजब[11]।
कोई मुनफ़इल[12] साथ आनेसे था,
कोई बर-लबे-आब[13] जानेसे था।

* * *

---

[1]परस्पर [2]प्रेम [3]इकट्ठे [4]अकेलेमे मिलना [5]प्रज्वलित [6]ऊपर उठना [7]प्रकट [8]परेशान [9]दुखी [10]हैरानी [11]आश्चर्य [12]पछतावेमें [13]नदीके किनारे।

अगर है ये क़िस्सा भी हैरतफ़िज़ा[1],
वले[2] 'मीर' यह इश्क़ है बदबला।
बहुत जी जलाये है इस इश्क़ने,
बहुत घर लुटाये है इस इश्क़ने।
फ़सानों[3] से इसके लबालब है दह्र[4],
जलाये है इस तुंदआतिश[5] ने शह्र।
मुहब्बत न हो काश मख़लूक़[6] को,
न छोड़े ये आशिक़ न माशूक़को।

* * *

---

[1]आश्चर्यजनक [2]लेकिन [3]कहानियां [4]संसार [5]तेज़ आग [6]दुनिया।

दरियाए-इश्क़

इश्क़ है ताज़ाकार[1] ताज़ा-ख़याल[2],
हर जगह उसकी इक नयी है चाल।
दिलमें जाकर कहीं तो दर्द हुआ,
कहीं सीनेमे आहे-सर्द हुआ।
कहीं आंखोंसे ख़ून होके बहा,
कहीं सरमे जुनून होके रहा।
कहीं रोना हुआ नदामत का,
कहीं हँसना हुआ जराहत[4] का।
था किसू दिलमे नालए-जांकाह[5],
है किसू लब पे नातवां[6] इक आह।
था किसूकी पलककी नमनाकी[7],
है किसू ख़ातिरों की ग़मनाकी[8]।
कहीं अंदोहे-जान[9] आगह था,
सोज़िशे-सीना[10] एक जागह था।
एक दिलसे उठे है होकर दूद[11],
एक लब पर सुख़न[12] है ख़ूनआलूद[13]।
कहीं बैठे है जी मे होकर चाह,
कहीं रहता है क़त्ल तक हमराह।

---

[1]नई बातें करनेवाला [2]नई बातें सोचनेवाला [3]शर्मिन्दगी [4]घाव [5]जानलेवा रोना [6]होंठ [7]कमज़ोर [8]नई [9]दिलों [10]रज [11]दिली रज [12]दिलकी जलन [13]धुआं [14]बात [15]ख़ूनमें डूबी।

कशिश[1] इसकी है एक आजूबा[2],
डूबा आशिक़ तो यार भी डूबा।

कौन महरूमे-वस्ल[3] यांसे गया,
कि न यार उसका फिर जहांसे गया।

काममें अपने इश्क़ यक्का[4] है,
हां ये नैरंगसाज़[5] पक्का है।

जिसको हो इसकी इल्तफ़ात[6] नसीब,
है वो मेहमाने-चंदरोज़ा[7] ग़रीब।

ऐसी तक़रीब[8] ढूंढ़ लाता है,
कि वह नाचार जीसे जाता है।

क़िस्सा

एक जा इक जवाने-राना[9] था,
लाला-रुख़सार[10] सर्व-बाला[11] था।

इश्क़ रखता था उसकी छाती गर्म,
दिल वो रखता था मोमसे भी नर्म।

शौक़ था उसको सूरते-खुश[12]से,
उंस[13] रखता था वज़ए-दिलकश[14]से।

था तरहदार आप भी लेकिन,
रह न सकता था अच्छी सूरत बिन।

---

[1]खिचाव [2]आश्चर्य [3]प्रिय मिलनेसे वंचित [4]बेजोड़ [5]तमाशे दिखाने-वाला [6]कृपा [7]कुछ दिनका मेहमान [8]परिस्थितियाँ [9]खूबसूरत जवान [10]फूलसे गालोंवाला [11]सुंदर कदका [12]खूबसूरत चेहरा [13]प्रेम [14]सौंदर्य।

देखता गर कहीं वो चश्मे-सियाह,
दिलसे बे इख़्तियार करता आह।

सरमें था शौक़, शौक़ दिलमें था,
इश्क़ ही उसके आबो-गिल[1]में था।

नागह[2] इक कूचे[3]से गुज़ार हुआ,
आफ़ते-ताज़ा[4]से दो-चार[5] हुआ।

एक गुर्फ़े[6]से एक महपारा,
थी तरफ़ उसके गर्म-नज़्ज़ारा[7]।

पड़ गयी उस पे इक नज़र उसकी,
फिर न आयी उसे ख़बर उसकी।

थी नज़र या कि जीकी आफ़त थी,
वह नज़र भी विदाए-ताक़त[8] थी।

होश जाता रहा निगाहके साथ,
सब्र रुख़सत हुआ इक आहके साथ।

बेक़रारीने कजअदाई[9] की,
ताबो-ताक़त[10]ने बेवफ़ाई की।

मुंह जो उसका तरफ़से उसके फिरा,
मुज़्तरब[11] होके ख़ाकपर ये गिरा।

वह तो रखती न थी ख़याल उसका,
बेतरह होवे गो कि हाल उसका।

---

[1]मिट्टी और पानी [2]अचानक [3]गली [4]नई मुसीबत [5]सामना [6]खिड़की [7]देख रही थी [8]ताकतका जाना [9]टेढ़ी चाल [10]सहन शक्ति [11]बेचैन।

झाड़ दामनके तईं वो महपारा[१],
उठ गयी सामनेसे यकबारा[२]।

वह गयी इसके सर बला आयी,
खाकमें मिल गई वो रानाई।

बिस्तरे-ख़ाकपर गिरा वह ज़ार[३],
दर्दका घर हुआ दिले-बीमार[४]।

खल्क[५] उसकी हुई तमाशाई,
पर न वह देखने कभू आयी।

कुछ कहा गर किसूने शफ़क़त[६]से,
रो दिया उनने एक हसरतसे।

जाके उसके क़रीबे[७]-दर बैठा,
क़स्द[८] मरनेका अपने कर बैठा।

दिलने मजबूरे-इज़्तराब[९] किया,
शौक़ने कामको ख़राब किया।

जो कि समझे थे उसको दीवाना,
रहम करते थे आशनायाना[१०]।

आशिक़ उसको किसूका जान गये,
सब बुरा इस अदासे मान गये।

वारिस[११] उसके भी बदगुमान हुए,
दरपए-दुश्मनीए-जान[१२] हुए।

---

[१]सुन्दरी [२]अचानक [३]दुखी [४]प्रेमका मारा हृदय [५]संसार [६]प्यार [७]दरवाज़ेके पास [८]इरादा [९]बेचैनीके लिए विवश [१०]दोस्तीमें [११]अभिभावक (प्रेमिकाके) [१२]जान लेनेके लिए तय्यार।

फिर ये ठहरी कि होंगे हम बदनाम,
सुनके आख़िर कहेंगे ख़ासो-आम[1]।

क्या गुनह था कि यह जवां मारा,
किसने मारा उसे कहां मारा।

देके दीवाना उस जवांको क़रार,
हो गये सारे दरपए-आज़ार[2]।

एकने सख़्त कहके तंग किया,
एकने आके जेरे-संग[3] किया।

एक आया तो हाथमे शमशीर,
एक बोला कि अब है क्या ताख़ीर[4]।

गर्चे हंगामा[5] उसके सरपर था,
लेक[6] रूए-दिल[7] उसका ऊधर था।

महव[8] था उसके यह ख़यालके बीच,
था गिरफ़्तार अपने हालके बीच।

होंठपर हुस्नका बयां उसका,
था सरो-संगे-आस्तां[9] उसका।

एक दम आहे-सर्द भर उठना,
नालए-गर्म[10] गाह[11] कर उठना।

जीमे कहता कि आह मुश्किल है,
उस तरफ़ इक निगाह मुश्किल है।

---

[1]छोटे बडे [2]कष्ट पहुचानेको उद्यत [3]पत्थरोसे मारना [4]देर [5]शोर [6]लेकिन [7]दिलका ध्यान [8]डूबा हुआ [9]सर और उस (प्रेमिका) की चौखटका पत्थर [10]गर्म आह [11]कभी।

दोस्तको मेरे नामसे है नंग[1],
दुश्मनोंसे है जी पे अरसा[2] तंग।

चश्मे-तरसे लहू बहा करता,
मुबहकी बाद[3] से कहा करता।

इन बलाओंमे कोई क्योंकि जिए,
जान पर आ बनी है तेरे लिए।

जान दूं तेरे वास्ते, सो तू,
आंख उठाकर इधर ने देखे कभू।

रफ़्ता रफ़्ता हुआ हूं सौदाई[4],
दूर पहुंची है मेरी रुसवाई[5]।

नामको भी तिरे न जाना आह,
तुझसे क्यों कर सुख़न[6] की निकले राह।

ना उमेदाना[7] गर करूं हूं निगाह,
देखता हूं हज़ार रोजे-सियाह[8]।

सख़्त मुश्किल है सख़्त है बेदाद[9],
एक मैं ख़ूं-गिरफ़्ता,[10] सौ जल्लाद।

कोई मुशफ़िक़[11] नहीं कि होवे शफ़ीक़[12],
बेकसी बिन[13] नहीं है कोई रफ़ीक़[14]।

आह जो हमदमी[15] सी करती है,
अब तो वह भी कमी सी करती है।

---

[1]शर्म [2]जीवन [3]हवा [4]पागल [5]बदनामी [6]बात [7]निराशामे [8]काले (दुर्भाग्यपूर्ण) दिन [9]जुल्म [10]खूनमे डूबा [11]दयालु [12]कृपालु [13]अलावा [14]साथी [15]दोस्ती।

क्योंकि कहिए कि तू नहीं आगाह,
इर्क क़यामत बपा[1] है यां सरेराह[2]।
कुछ छिपा तो नहीं रहा यह राज़[3],
इक जहां इससे है ख़बर परदाज़[4]।

* * *

जब हुआ ज़िक्र अक़्लो-अक्सरमें[5],
चाह साबित हुई उसी घरमें।
सब महाफ़िल[6] मे उसको करके सवार,
साथ दी एक दाया-ए-ग़द्दार[7]।
पार दरियाके जल्द रुख़सत की,
इस तरह फ़िक्रे-रफ़ए-तोहमत[8] की।
घरसे बाहर महाफ़ा जब निकला,
इस जवां पास होके तब निकला।
तपिशे-दिल[9]से होके यह आगाह[10],
हो लिया साथ उसके भरकर आह।
हर क़दम था ज़बान पर जारी,
ख़्वाब[11] है यह कि है ये बेदारी[12]।
इज़्तराबे-दिली[13] ने ज़ोर किया,
उनने बे इख़्तियार शोर किया।
दिलके रामको ज़बान पर लाया,
आफ़ते-ताज़ा[14]जान पर लाया।

---

[1]उठी [2]रास्तेमे [3]भेद [4]जानकार [5]छोटे बड़े [6]पालकी [7]बदमाश दायी [8]बदनामी हटानेकी तरकीब [9]दिलकी जलन [10]समझकर (कि यही मेरी प्रेमिका है) [11]नींद सपना [12]जागना [13]दिलकी तड़प [14]नई मुसीबत।

"के[1] ! जफ़ापेशा-ओ-तग़ाफ़ुलकेश[2],
इक नज़रसे ज़ियां[3] नहीं कुछ बेश[4]।
मुंह छिपाया है तूने इस पर भी,
निगहे इल्तफ़ात[5] ईधर भी।
सब्र किस किस बलासे कर गुज़रूं,
चारा इस बिन नहीं कि मर गुज़रूं।
मंज़िले-वस्ल[6] दूर, मैं कम-पा[7],
तुझको इस मरतबे[8] मे इस्तग़ना[9]।
नाज़ने इक नफ़स[10] न रुख़सत दी,
आईने ने न तुझको फ़ुरसत दी।
तू तो वां ज़ुल्फ़को बनाया की,
जान यां पेचो-ताब[11] खाया की।
तुझको मद्दे-नज़र[12] थो अपनी चाल,
मैं सितमकश[13] हुआ किया पामाल[14]।
बिस्तरे-रुवाब[15] पर तुझे आराम,
मुझको ख़मयाज़ा[16] खींचनेसे काम।
नाज़ो-ख़ूबीने दिल दिया न तुझे,
रहमसे आश्ना[17] किया न तुझे"।

* * *

---

[1]कि ऐ [2]निष्ठुर और बेपरवा [3]नुकसान [4]ज़्यादा [5]प्रेमकी दृष्टि [6]मिलनकी मंज़िल [7]पैरोंका कमज़ोर [8]ऊंचाई, रुतबा [9]बेपरवाई [10]दम [11]चक्कर [12]ध्यानमें [13]दुखी [14]पददलित [15]बिछौने [16]नतीजा [17]जानकार।

कश्ती इक आनकर हुई मौजूद,
हो फ़लक[1]से हिलाल[2] जैसे नमूद[3]।
की किनारे पे लाके इस्तादा[4],
था महाफ़ा रकूब-आमादा[5]।
उस सफ़ीने[6] में जल्द जा पहुचा,
यह भी वां साथ ही लगा पहुंचा।
बीच दरियाके दायाने जाकर,
कफ़श[7] उस गुल[8]की इसको दिखलाकर।
फेंकी पानीकी सतह पर इक बार,
और बोली, कि "ओ जिगर-अफ़गार[9]!।
हैफ़[10] तेरी निगार[11]की पापोश[12],
मौजे-दरिया[13] से होवे हम आगोश[14]।
ग़रते-इश्क़[15] है तो ला इसको,
छोड़ मत यूं बरहना-पा[16] इसको।"
सुनके यह हर्फ़-दायाए-मक्कार[17],
दिलसे उसके गया शकेबो-क़रार[18]।
बेख़बर कारे-इश्क़[19] की तहसे,
जस्त[20] की उनने अपनी जागहसे।
था सफ़ीनेमें याकि दरियामें,
मौज[21] ज़ंजीर हो गयी पा[22] में।

---

[1]आसमान [2]नयाचांद [3]प्रकट [4]खड़ी [5]चढ़ाय जानेको तय्यार [6]नाव [7]जूती [8]फूल (प्रेमिका) [9]प्रेमके मारे हुए [10]अफ़सोस [11]प्रेमिका [12]जूती [13]नदीकी लहर [14]मिलना [15]प्रेमका ध्यान [16]नंगे पांवँ [17]बदमाश दायीकी बात [18]चैन [19]प्रेमका काम [20]कूदना [21]लहर [22]पांवँ।

कहते हैं डूबते उछलते हैं,
डूबे ऐसे कोई निकलते हैं?।
इश्क़ने आह खो दिया उसको,
आख़िर आख़िर डुबो दिया उसको।

* * *

दाया-ए-हीलागर[1] हुई दिल शाद,
बांसे कश्ती चली बरंगे-बाद[2]।
यह न समझी कि इश्क़ आफ़त है,
फ़ित्नासाज़ी[3] में इक क़यामत है।
ख़ाक हो क्यों न आशिक़े-बेदिल,
कामसे अपने यह नहीं ग़ाफ़िल।
वस्ल[4] जीते न हो मयस्सर[5] अगर,
लावे माशूक़को ये तुरबत[6] पर।
यांसे आशिक़ अगर गये नाशाद,
ख़ाके-ख़ूबां भी उनने की बरबाद।
क़िस्सा कोताह बाद इक हफ़्ता,
आयी वह रश्के-मह[7]ज़ि-ख़ुद-रफ़्ता[8]।
कहने लागी कि "अब तो ऐ दाया,
हो गया ग़र्क़[9] वह फ़रो-माया[10]।
अब तो वह तंग[11] दरमियांसे गया,
आरज़ूमंद इस जहांसे गया।

---

[1]बदमाश दायी [2]प्रसन्न [3]हवाकी तरह [4]मुसीबत पैदा करना [5]मिलन [6]प्राप्त [7]क़ब्र [8]प्रेमिकाओंकी मिट्टी [9]चांदको शर्मानेवाली [10]आत्म विस्मृत [11]डूबा [12]गरीब [13]दुखी।

शोरो-फ़ितने थे उस तलक सारे,
अब तो बदनामियां नहीं बारे।
दिल तड़पता है मुत्तसिल[1] मेरा,
मुर्ग़े-बिस्मिल[2] है या कि दिल मेरा।
वहशते-तबा[3] अब तो अफ़ज़ूं[4] है,
हाल जीका मिरे दिगरगूं[5] है।
बेदिमाग़ी कमाल होती है,
जान तनकी वबाल होती है।
दिल कोई दमको ख़ून होवेगा,
आजकलमें जुनून होवेगा।
बेकली जीको ताब देती है,
ताक़ते-दिल जवाब देती है।
जीमें आता है हूं बियाबानी[6],
पर कहूं हूं कि है ये नादानी।
मस्लहत[7] है कि मुझको ले चल घर,
एक दो दम रहेंगे दरिया पर।"
यह न समझी कि बद बला है इश्क़,
घातमें अपनी लग रहा है इश्क़।
जिस किसूसे ये प्यार रखता है,
आक़बत[8] उसको मार रखता है।
जज़्ब[9] से अपने जब करे है काम,
आशिक़े-मुर्दासे भी ले है काम।

* * *

[1]बराबर [2]घायल पक्षी [3]दिलकी घबराहट [4]अधिक [5]ख़राब [6]उन्मत्त [7]अच्छाई [8]आक़बत [9]खिंचावट।

सुबह-गाहां[1] वो ग़ैरते-ख़ुर्शीद[2],
उस जगह से रवां हुई नौमीद[3]।

पहुंची निस्फ़ुन्निहार[4] दरिया पर,
रोई बे इख़्तियार दरिया पर।

हवसे अफ़ज़ूं[5] जो बेक़रार हुई,
दाया कश्तीमें ले सवार हुई।

हर्फ़ज़न[6] यूं हुई कि "ऐ दाया!
यां गिरा था कहां वो कममाया[7]?"।

मक्र[8] में गर्चे दाया थी कामिल[9],
लेक[10] तहसे सुख़न[11] की थी ग़ाफ़िल।

यह न समझी कि है फ़रेबे-इश्क़—,
है ये महपारा[12] नाशकेबे-इश्क़[13]।

बीच दरियाके जा कहा यह हर्फ़,
यां हुआ था वो माजराए-शिगर्फ़[14]।

सुनते ही यह "कहां? कहां?" कर कर,
गिर पड़ी क़स्दे-तर्के-जां[15] कर कर।

मौज[16] हर इक कमंदे-शौक़[17] थी आह,
लिपटी उसको बरंगे-मारे-सियाह[18]।

---

[1]सवेरे [2]सूरजको शर्मिन्दा करने वाली [3]निराश [4]दोपहरको [5]अधिक [6]बोलना [7]ग़रीब [8]बदमाशी [9]दक्ष [10]किन्तु [11]बात [12]चाँदका टुकड़ा, सुंदरी [13]प्रेममें अधीर [14]उस अनमोल (नौजवान) का क़िस्सा [15]जान देनेका इरादा [16]लहर, [17]प्रेमकी डोरी [18]काले सांपकी तरह।

दाम-गुस्तर[1] वो इश्क़ था तहे-आब[2],
जिसके हल्क़े[3] तमाम थे गिर्दाब[4]।
हुस्न मौजों[5] में यूं नजर आवे,
नूरे-महताब[6] जैसे लहरावे।
सरपे जिस दम वो आब होके बहा,
सतह पानीका आईना सा रहा।
कशिशे-इश्क़[7] आखिर उस महको,
ले गयी खींचती हुई तहको।
कूदे ग़व्वासो-आश्ना[8] सारे,
ताबमक़दूर[9] दस्तो-पा[10] मारे।
खींचके कोफ़्त[11] सब हुए बेताब,
न लगा हाथ वह दुरे-नायाब[12]।
जा हमआगोशे-मुर्दायार[13] हुई,
तहमें दरियाके हमकनार[14] हुई।
पाककी जिंदगीको आलाइश[15]—,
होके दस्तो-बग़लकी[16] आसाइश[17]।
निकले बाहर वले[18] मुए[19] निकले,
दोनों दस्तो-बग़ल[20] हुए निकले।
रश्ते-हस्पां[21] बहम[22] हुवैदा[23] था,
मर गये पर भी शौक़ पैदा था।

---

[1]जाल फैलाये [2]पानीकी तहमें [3]फंदे [4]भंवर [5]लहरों [6]चांदनी [7]प्रेमका खिंचाव [8]चांद (प्रेमिका) [9]तैराक [10]यथासम्भव [11]हाथ पांव [12]परेशानी [13]अनमोल मोती [14]मृतप्रेमीसे लिपट गयी [15]चिमट गई [16]गंदगी [17]हाथ और बग़ल [18]सजावट [19]लेकिन [20]मरे [21]आलिंगन में [22]प्रगाढ़ प्रेम [23]परस्पर [24]प्रकट।

एकका हाथ एक को बालीं[1],
एकके लबसे[2] एकको तस्कीं[3]।
जो नज़र उनको आन करते थे—,
एक-क़ालिब[4] गुमान करते थ।
क्या लिखूं मिल रहे थे वस्ली-वार[5],
हमदिगर[6] से जुदा हुए दुश्वार[7]।
क्यों न दुश्वार होवे उनका फ़स्ल[8],
जान देवे हुआ हो जिनका वस्ल।
हैरते-कारे-इश्क़[9] से मर्दुम[10],
मिस्ले तस्वीर[11] आपमे थे गुम।

* * *

'मीर' अब शायरीको कर मौक़ूफ़[12],
इश्क़ है एक फ़ितन-ए-मारूफ़[13]।
क़ुदरत अपनी जहां दिखाता है,
इसे जो तू कहे सो आता है।
कितनी वसअत[14] तिरे बयानमें है,
कितनी ताक़त तिरी ज़बानमें है।
लब पे अब मुहरे-ख़ामुशी[15] बेहतर,
यां सुख़न[16] की फ़रामुशी[17] बेहतर।

* * *

---

[1]सर (गर्दन) [2]होंठ [3]चैन [4]एक शरीर [5]चिपके कागजोंकी तरह [6]एक दूसरे [7]मुश्किलसे [8]अलग होना [9]प्रेमकी करामातका आश्चर्य [10]लोग [11]चित्रवत [12]ख़त्म [13]प्रसिद्ध [14]विस्तार [15]खामोशीकी मुहर [16]बात [17]भूलना।

घरकी दुर्दशा

क्या लिखूं 'मीर' अपने घरका हाल,
इस ख़राबे[1] में मैं हुआ पामाल[2]।

चार दीवारी सौ जगह है ख़म[3],
तर तनिक हो तो सूखते हैं हम।

लोनी लगलगके झड़ती है माटी,
आह क्या उम्र बे मजा काटी।

कूचए-मौज से भी आंगन तंग,
कोठरीके हुबाब[4]के से ढंग।

क्या थमे मेंह सक़्फ़[5] छलनी तमाम,
छतसे आंखें लगी रहें हैं मुदाम[6]।

इस चकिश[7] का इलाज क्या करिए,
राखसे कब तलक गढ़े भरिए।

जा[8] नहीं बैठनेको घरके बीच–,
है चकिशसे तमाम ऐवां[9] कीच।

आंखें भर लाके यह कहे है सब,
क्योंकि परदा रहेगा यारब! अब।

झाड़ बांधा है मेंहने दिनरात,
घरकी दीवारें हैंगी जैसे पात।

---

[1]खंडहर [2]बरबाद [3]टेढ़ी [4]बुलबुला [5]छत [6]हमेशा [7]टपकाव [8]जगह [9]इमारत।

बाद[1] में कांपती है जो थर थर,
इन पे रद्दा रखे कोई क्योंकर।
कीच ले लेके बारे छोपा है,
छोपना काहेका है थोपा है।
तिसको फिर परछती भी है हो नहीं,
टूटा इक बोरिया सा डालो कहीं।
ढांको दीवार या उठा रक्खो,
या हमारे लिए बिछा रक्खो।
एक हुजरा[2] जो घरमें है वासिक़[3],
सो शिकस्तातर-अज़-दिले-आशिक़[4]।
कहीं सूराख़ है कहीं है चाक,
कहीं झड़ झड़के ढेर सी है ख़ाक।
कहीं घूंसोंने खोद डाला है,
कहीं चूहेने सर निकाला है।
कहीं घर है किसू छछूंदरका,
शोर हर कोनेमें है मच्छरका।
कहीं मकड़ीके लटके हैं जाले,
कहीं झींगुरके बेमज़ा नाले[5]।
कोने टूटे हैं ताक़ फूटे हैं,
पत्थर अपनी जगहसे छूटे हैं।
ईंट चूना कहीं से गिरता है,
जी इसी हुजरेमें ही फिरता है।

---

[1]हवा [2]कमरा [3]ठीक [4]प्रेमीके दिलसे भी ज़्यादा टूटा [5]रोना।

आगे इस हुजरेके है इक ऐवां,
वही इस नंगे-खल्क[1] का है मकां।
कड़ी तख्ते सभी धुएंसे सियाह,
इसकी छतकी तरफ़ हमेशा निगाह।
कोई तख्ता कहींसे टूटा है,
कोई दासा कहींसे छूटा है।
दबके मरना हमेशा मद्दे-नजर[2],
घर कहां, साफ़ मौत ही का घर।
मिट्टी तूदे[3] जो डाले छत पर हम,
थे जो शहतीर ज्यूं कमां है खम[4]।
ईंट मिट्टीका दरके आगे ढेर,
गिरती जाती है हौले हौले मुंडेर।
क्योंकि सावन कटेगा अबकी बार,
थर थरावे भंभीरी सी दीवार।
होके मुज्तर[5] लगे है कहने सब,
उड़ भंभीरी कि सावन आया अब।
तीतरी[6] यां जो कोई आती है,
जाने-महजूं[7] निकल ही जाती है।
नहीं वह जाग़[8] चार पांव[9] फिरा,
एक काला पहाड़ आन गिरा।
मिट्टी इसकी कहीं कहीं भसकी,
जी डुबा[10] और छाती भी धसकी।

---

[1]संसारको बदनाम करनेवाला (तात्पर्य अपने आपसे है) [2]निगाहके सामने [3]ढेर [4]टेढ़े [5]बेचैन [6]तितली [7]दुखी प्राण [8]कौवा [9]डूबा।

सान कर ख़ाक लग गये दो चार,
बारे जल्दी दुरस्त की दीवार।
अच्छे होंगे खंडर भी इस घरसे,
बरसे हैं इक ख़राबी घर बरसे।
एक छप्पर है शुहरा[1] दिल्लीका,
जैसे रौज़ा हो शेख़ चिल्लीका।
बांसकी जा[2] दिये थे सरकंडे,
सो वे मेंहोंमें सब हुए ठंडे।
गलके बंधन हुए हैं ढीले सब,
पाखे रहने लगे हैं गीले सब।
मेंहमें क्यों न भीगिए यकसर,
फूस भी तो नहीं है छप्पर पर।
वां पे टपका तो यां सरक बैठा,
यां जो भीगा तो वां तुनक बैठा।
टपके दो चार जा तो बंद करूं,
पेच कोई लड़ाऊं फंद करूं।
यां तो झांके हजार मैं तनहा[3],
कुछ नहीं हाय मुझसे हो सकता।
बस कि[4] बदरंग[5] टपके है पानी,
कपड़े रहते हैं मेरे अफ़शानी[6]।
कोई जाने कि होली खेला हूं,
कोई समझे है यह कि खेला[7] हूं।

---

[1]प्रसिद्धि [2]जगह [3]अकेला [4]बहुत [5]बुरी तरह [6]तर [7]आवारा।

पूछ मत जिंदगानी कैसी है,
ऐसे छप्परकी ऐसी तैसी है।

क्या कहूं जो जफ़ा चकिशसे[1] सही,
चारपाई हमेशा सरपै रही।

बोरिया फैलकर बिछा न कभू,
कोने ही में खड़ा रहा यकसू[2]।

जिसे आला कोई खटोला खाट,
पाये पट्टी रहे हैं जिनके फाट।

खटमलोंसे सियाह है सो भी,
चैन पड़ता नहीं है शबको[3] भी।

शब बिछौना जो मैं बिछाता हूं,
सरपे रोजे-सियाह[4] लाता हूं।

कीड़ा एक, एक फिर मकोड़ा है,
सांझसे खाने ही को दौड़ा है।

गर्चे बहुतोंको मैं मसल मारा,
पर मुझे खटमलोंने मल मारा।

हाथ तकिए पे गह[5] बिछौनेपर,
कभू चादरके कोने कोने पर।

सलसलाया जो पायंतीके ओर,
वहीं मसला कर एड़ियोंका जोर।

तोशक इन रगड़ोंमें ही सब फाटी,
एड़ियां यूं रगड़ते ही काटी।

---

[1]टपकाव [2]एक ओर [3]रात [4]दुर्भाग्य दिवस [5]कभी।

इक हथेलीमें एक घाईमें,
सैकड़ों एक चारपाईमें।

हाथको चैन हो तो कुछ कहिए,
कबतलक यूं टटोलते रहिए।

दो तरफ़से थे कुत्तोंका रसता,
काश जंगलमें जाके मैं बसता।

हो घड़ी दो घड़ी तो बुतकारूं,
एक दो कुत्ते हों तो मैं मारूं।

चार आते हैं चार जाते हैं,
चार अफ़-अफ़[1] से मरज खाते हैं।

किससे कहता फिरूं ये सुहबते-नाज़[2],
कुत्तोंका सा कहांसे लाऊं मरज।

वो जो ऐवां[3] था हुजरे[4] के आगे,
उसके अजजा[5] बिखरने सब लागे।

कोठा बोझल हुआ था, बैठ गया,
पानी जड़ जड़में उसकी पैठ गया।

कड़ी तख्ता हरेक छूट पड़ा,
नागहां[6] आसमान टूट पड़ा।

मैं तो हैरानकार था अपना,
कोई उस दम न यार था अपना।

ईंट पत्थर थे, मिट्टी थी यकसर,
खाक में मिल गया था घरका घर।

---

[1]भों भों [2]अच्छा साथ [3]इमारत [4]कमरा [5]हिस्से [6]अचानक।

चर्ख[1] की कजरवीनें[2] पीसा था—,
पर ख़ुदा मेरा मुझसे सीधा था।

कितने इक लोग इस तरफ़ धाये,
या मलक[3] आसमानसे आये।

मिट्टी ले ले गये वो हाथोंमें,
कामने शक्ल पकड़ी बातोंमें।

शहरमें जा[4] बहम[5] न पहुंची कहीं,
चारो-नाचार[6] फिर रहा मैं वहीं।

अब वही घर है बे सरोसाया[7],
और मैं हूं वही फ़रोमाया[8]।

दिनको है धूप रातको है ओस,
ख़्वाबे-राहत[9] है यां से सौ सौ कोस।

क़िस्सा-कोतह दिन अपने खोता हूं,
रातके वक्त घरमें रोता हूं।

न असर बामका[10] न कुछ दरका[11],
घर है काहेका, नाम है घरका।

* * *

---

[1]आसमान [2]टेढ़ी चाल [3]फ़रिश्ते [4]जगह [5]प्राप्त [6]विवशत [7]बग़ैर सायेका [8]ग़रीब [9]आरामकी नींद [10]छत [11]दरवाज़ा।

होली

आओ साक़ी[1] शराबनोश[2] करें,
शोरसा है जहांमें नोश करें।
आओ साक़ी बहार फिर आयी,
होलीमें कितनी शादियां[3] लायी।
दस्ते-दस्तूर[4] है जो ज़र अफ़शां[5],
फिर जहाने-कुहन[6] हुआ है जवां।
दोनों रस्ते इमारते-ख़ुश[7] हैं,
ताज़ाकारी-ए-शह्र[8] दिलकश[9] हैं।
ज़ोर बाज़ारी रंग लाये हैं,
सारे रंगीं सतूं[10] बनाये हैं।
जिस तरफ़ देखो मारकासा[11] है,
शह्र है या कोई तमाशा है।
चश्मे-बद्दूर[12] ऐसी बस्तीसे,
यही मक़सद है मिल्के-हस्ती[13] से।
लखनऊ दिल्लीसे भी बेहतर है,
कि किसू दिलकी लाग ईधर है।
आई-बस्ता[14] हुआ है सारा शह्र,
काग़ज़ी-गुल[15]से गुलसितां[16] है वह्र[17]।

---

[1]शराब पिलानेवाला [2]पिये [3]शादियाँ, खुशियाँ [4]रिवाजका हाथ [5]सोना बरसानेवाला [6]बूढ़ी दुनिया [7]अच्छी इमारतें [8]शहरका नया रूप [9]आकर्षक [10]खंभे [11]अजीब बात [12]नज़र न लगे [13]जीवनकी निधि [14]सजा हुआ [15]कागज़ी फूलों [16]बाग [17]संसार।

ऐसे गुल फूले हैं जो सफ़्फ़ार[1],
राह रस्ते हुए हैं बाग़ो-बहार।
बस्ता-आई[2] दुकाने हैं यकसर[3],
जिनमे सस्ती मताए—लालो-गुहर[4]।
मेवए-नौरसो-रसीदा[5] बहुत,
गुले-ख़ुशरंगो-बूए-चीदा[6] बहुत।
शबे-शादी[7]को लड़के हों जो सवार,
लें सग़ीरो-कबीर[8] बहरे-निसार[9]।
तख़्त बहरे-जनाने-रक़्सकुनां[10],
चुने रस्तोंमें बे चुनीं-ओ-चुनां[11]।
गुले-काग़ज़[12] से शहर हैं गुलज़ार[13],
तू कहे आयी है बहार ऐ यार।
साक़िया ऐशका हो बज़्म-आरा[14],
सारे लोगोंमें जाम ही को फिरा।
आओ साक़ी क़रार है बाहम[15],
कि तमाशा-कुनां[16] फिरें ख़ुर्रम[17]।
जने-रक़्क़ास[18] पर निगाह करें,
किसू सादे[19]से चलके राह करें।

---

[1]कार्यरत [2]सजी [3]एकदम [4]लाल और मोती जैसा कीमती माल [5]पके और मीठे फल [6]अच्छे रंग और खुशबूवाले फूल [7]शादीकी रात [8]छोटे बड़े [9]न्यौछावर करनेके लिए [10]नाचने वालियोंके लिए [11]बग़ैर हिचकके [12]काग़ज़ी फूलों [13]बाग [14]महफ़िल सजानेवाला [15]आपसमें [16]तमाशा करते [17]खुश [18]नाचनेवाली [19]जनाना।

किसू बिलबर[1] के खींच लेवें हाथ,
किसू महबूब[2] को उठालें साथ।
किसू खुशरू[3] के मुंह मुंह रख दे,
क़ंदे-लब[4] का कहीं मज़ा चख लें।
कहीं दो जामे-मैं[5] से हों सरमस्त,
जायेंगे थोड़ी दूर दस्त-बदस्त[6]।
मचले बन जायेंगे किसूको देख,
फेर आगे किसूके रू[7] को देख।
अब गुलाबी[8] पियेंगे भर भर हम,
बाक़ी साक़ी पियेंगे फिर कर हम।
कहीं आराइश[9] आके देखेंगे,
काग़ज़ी-बाग़[10] जाके देखेंगे।
किसू महवश[11]से होवेंगे गुलबाज़[12],
खींचेंगे एक दो दम उसके नाज़।
जिस तरफ़ देखिए चराग़ां[13] है,
शीशा-ओ-शमअ[14] ही नुमायां[15] है।
बाग़से रोशनी हुई है ज़ियाद[16],
है ये हंगामा[17] ता-जलालाबाद[18]।
शमअ-ओ-फ़ानूसका बहुत है हुजूम[19],
शमारंगों[20]ने कर रखी है धूम।

---

[1]माशूक़ [2]माशूक [3]सुन्दरी [4]होंठकी मिस्सी। [5]दो प्याला शराब [6]हाथमें हाथ डाले [7]मुखमंडल [8]प्यालियाँ [9]सजावट [10]काग़ज़का बाग़ [11]सुन्दरी [12]फूल खेलना [13]दीपावली [14]मोमबत्ती और फ़ानूस [15]प्रकट [16]अधिक [17]धूमधाम [18]जलालाबाद तक [19]आधिक्य [20]बत्ती जलानेवाले।

लूटिए इन गुलोंकी अब तो बहार,
गो किसूके गलेका हूजिए हार।

अब तो ऊधम ही मच गया हरसू[1],
दारू पीकर फिरे चलें हम तू।

तारेसे है चराग़ चार तरफ़,
आसमांपर ज़मीं रखे है शरफ़[2]।

गुंचा-गुंचा[3] दियोंको देखें जहां,
किसू नौ-गुल[4]से रक्खें सुहबत वां।

कहीं नौबतको चलके सुनिएगा,
नै[5]के बजनेपे सरको धुनिएगा।

आज नौबतके बजनेपर है रंग,
अक़्ल होती है सुन टकोरे दंग।

झांझके सुननेकी रही है झांझ,
सुबह ज्यूं त्यूंके हम करे है सांझ।

बीचमें होली आयी है साक़ी,
फिरिए सरख़ुश[6] ही ताबके-बाक़ी[7]।

शीशा-शीशा[8] शराब अब पीजे,
बल्कि ख़ुम[9] मुंह लगाके सब पीजे।

सैर करिए कनारे-नहरो-गश्त[10],
लाला-ओ-गुल[11] खिले हैं तासरे-दश्त[12]।

---

[1]हरतरफ़ [2]बड़ाई [3]इकट्ठे [4]नया फूल (नयी प्रेमिका) [5]नफ़ीरी [6]प्रसन्न [7]जो कुछ (जीवन) बाक़ी है उस तक [8]बोतल भर भरके [9]मटका [10]नहर और रविशके किनारे [11]गुलाब और गुल्लालाके फूल [12]जंगलके सिरे तक।

इन्हीं फूलोंके अनअकास[1]से आब[2],
तू कहे लालारंग[3] सब है शराब।

सबदे-गुल[4] हुई है हर क्यारी,
एक है गुलज़मीं[5] ज़मीं सारी।

दरमियां इक शजर[6] नहीं बदबर्ग[7],
है हज़ारा कि लाला-ए-सदबर्ग[8]।

जोशे-लालासे ता-उलंजो-संग[9],
शफ़क़ी[10] हो गया हवाका रंग।

फिर लबालब है आबगोरे-रंग[11],
और उड़े है गुलाल किस किस ढंग।

पास आते है मुर्ग़े-गुलशन[12] भूल,
थे वे दिलबर गुलाबकेसे फूल।

पगड़ियां जामा भोगे सो सोहें,
इनको गुलहाए-तर[13] कहें तो है।

छड़ियां फूलोंकी दिलबरोंके हाथ,
सैकड़ों फूलोंकी छड़ीसे हाथ।

क़ुमक़ुमे भर गुलाल जो मारे,
महवशां[14] लालारुख़[15] हुए सारे।

ख़्वान[16] भर भर अबीर लाते है,
गुलकी पत्ती मिला उड़ाते है।

---

[1]प्रतिबिंब [2]पानी [3]लाल रंगकी [4]फूलोंकी टोकरी [5]बाग़ [6]पेड़ [7]बुरे पत्तोंका [8]सौ पंखुड़ियों वाला गुल्लाला [9]पहाड़ और जगल तक [10]लाल [11]रगके हौज़ [12]बागके पक्षी [13]ताज़े फूल [14]माशूक [15]गुल्लाला जैसे लाल मुहवाले [16]थाल।

जश्ने नौरोजे-हिंद[1] होली है,
राग रंग और बोली ठोली है।
इश्क़ है ए गरोहे-आतशज़न[2],
दोनों रस्ते चिराग़ है रोशन।
दरे-दौलत[3]से लेके ता-सरे-आब[4],
है चिराग़ और शमअकी ही ताब[5]।
फिर सरे-पुल[6]से ता-इमारते-नौ[7],
जलते है मुजतमा[8] दिये सौ सौ।
आओ साक़ी पिला शराब हमे,
रोशनीकी नहीं है ताब हमें।
रोशनी भी है कोई हंगामा,
सैरमे गर्म हो गया जामा।
गर्मीसे मशअलोंकी आये तंग,
बूंदे मशअल[9] है जाये-काही रंग[10]।
दो तरफ़ सीम-बंदी[11] कर दी है,
सोने रुपयेसे राह भर दी है।
शमएं लाखों कंवलमे है रोशन,
ज़ोर फूला है काग़ज़ी गुलशन।
वह आतिशज़बान[12] आतिशदस्त[13],
दारू पी पी फिरो हो कैसे मस्त।

---

[1]भारतका नौरोज़ [2]आतिशबाज़ोंका गिरोह [3]महल [4]नदीके किनारे तक [5]चमक [6]पुलके सिरे [7]नई इमारत [8]इकट्ठे [9]मशाल का धुआँ [10]काही रंग की जगह [11]चाँदीका घेरा [12]तेज़ बोलनेवाले [13]आतिशबाज़।

तोपे क्या ढाली हैं सितारोंकी,
खोयी रौनक़ फ़लक[1]के तारोंकी।
माह[2] भी चश्मे-रोशनी[3] के लिए,
है चराग़ां[4] सितारगां[5] से किए।
गंज छूटे हैं या कि बाढ़ झड़ी,
या हवाई है जुगनुओंकी छड़ी।
गुलफ़शां[6] है पड़ी जो फुलझड़ियां,
खुलतियां हैं दिलोंकी गुलछड़ियां।
छूटते हैं अनारे-महताबी,
रंग हैं दिलबरोंके महताबी[7]।
वाउ[8] से दो दिये हुए गर मांद,
दग़ीं महताबियां कि निकले चांद।
आह साक़ी मुझे क़राबा[9] दे,
दरबग़लशीशा[10] साथ अपने ले।
बहरे-बख़शिश[11] की लहरे अब आयीं,
ज़रो-गौहर[12] की कश्तियां लायीं।
है बुलंद इस करम[13] का क्या पाया[14],
देते हैं ख़िलअते-गरां माया[15]।
क्या बिछा है फ़राख़[16] दस्तरख़्वान[17],
जिसपे है ख़ल्क़े-यक जहां[18] मेहमान।

---

[1]आसमान [2]चाद [3]देखने [4]दीपावली [5]सितारों [6]फूल बरसाने-वाली [7]चाँदनी जैसे [8]हवा, वायु [9]शराबकी सुराही [10]सुराही लेकर चलना [11]दानका समुद्र [12]सोना मोती [13]दया [14]दर्जा [15]कीमती खिलअत [16]लम्बा चौड़ा [17]खाना रखा जानेवाला कपड़ा [18]दुनियाभरके लोग।

किसको असबाब[1] यह मयस्सर[2] है,
ज़र्फ़-सीमी[3] वजाब-ए-ज़र[4] है।
है जो मेहमान बादशाहो-गदा,
सेर[5] दोनोंकी हिर्स[6] है यकजा[7]।
उम्रो-दौलत हो उसकी हदसे ज़ियाद[8],
है उसीसे जहां निशाताबाद[9]।

* * *

[1]साधन [2]प्राप्त [3]चांदीके बर्तन [4]सोनेके तरकश
[5]सन्तुष्ट [6]लालसा [7]एक साथ [8]अधिक
[9]खुशीकी दुनिया।

बड़पेटा

एक पुरख़ोर[1] आइना[2] बेपीर,
सीनासूराख़[3] जिससे है कफ़गीर[4]।

सदमनी[5] देग है शिकम[6] उसका,
नफ़से-अजदहा[7] है दम उसका।

आंत शैतानकी है उसकी आंत,
दांत है उसका हाथीकासा दांत।

ख़स्तए-जोय[8] जो वो आवे निहार[9],
मुंह है गोया कि जख़्मे-दामनदार[10]।

शक्ल मत पूछ खानेका है बली,
मुंह है छीपोंसे जैसे रोटी जली।

गाल कुल्चेसे फिर तवेसे सियाह,
कासए-सर[11] है जैसे औंधा कड़ाह।

तोंद काली जो खोल जावे लेट,
आहनी[12] है तनूर[13] उसका पेट।

राह मतबख़[14]में पावे है जो कभी,
चाट जाता है देगचे तक भी।

खाना निकलेपे आवे है कैसे,
चील टूटे है गोश्तपर जैसे।

---

[1]बड़पेटा [2]दोस्त [3]दिलमे छेद होना [4]चमचा [5]सौ मनकी [6]पेट [7]अजगरकी फुसकार [8]भूखका मारा [9]सुबह [10]जिस घावमें खाल लटके [11]खोपड़ी [12]लोहेकी [13]भट्टी [14]रसोईघर।

वक़्त खानेके हाथ है उसका,
क़ाब[1]पर नान[2] पंजाकश[3] गोया।

क्या वो दोप्याज़ा खाके हो ताज़ा,
इक नवाला[4] है मुल्ला दोप्याज़ा।

गोश्त हांडी भरा है हल्क़[5]में,
हंडियां गोया थीं उसकी ख़श्तक[6]में।

ख़ामतमई[7]से इक करे है आह,
देखकर शब[8]को नाने-हालए-माह[9]।

न टले देखकर वो क़ाबे-पुलाव[10],
मुंह ही मुंह बैठा गर्चे खावे घाव।

खानेपर जब वो जी चलाता है,
लाठी पाठी भी खाये जाता है।

कहीं पहुंचे जो खाना खाने लग,
हड्डियोंपर लड़े है जैसे सग[11]।

भूखका बावला जो आता है,
लोगोंको काट काट खाता है।

बहुओं[12]में दुश्मनोंसे भी वो लईम[13],
जाये घुलमिल अगर सुने है हलीम[14]।

आशबुग़रा[15] पे मार भी खावे,
इसमें गो बोग़रा[16] निकल जावे।

---

[1]तश्तरी [2]रोटी [3]हाथ फैलाए [4]कौर [5]ठोडीके नीचेका थोबड़ा [6]मियानी [7]लालचीपन [8]रात [9]चन्द्रमाके घेरेरूपी रोटी [10]पुलावकी तश्तरी [11]कुत्ता [12]मुहर्रम [13]कंजूस [14]एक प्रकारका खाना [15]गोश्त और चावल, खिचड़ा [16]कचूमर।

किसी मुफ़लिस[1]के घर जो जाता है,
कुछ नहीं ख़िफ़्फ़ते[2] ही खाता है।
भूखसे जब वो गुस्सेमे आवे,
बुज़े-कोही[3]की तरह झुंझलावे।
टिड्डियोंको निकोके खा जावे,
चने लोहेके भी चबा जावे।
ज़हरका जलना आगसे मानूं,
भूख उसकी जले तो मैं जानूं।
निकले बाज़ारमें वो जब चरबूज़[4],
सरही फोड़े है देखकर तरबूज़।
घास पात और कांस खाता है,
नैशकर[5]पर वो बांस खाता है।
उसके आनेकी सुनके बाज़ारी[6],
करते हैं सौदोंकी ख़बरदारी।
कोई तरुता करे है दूकांको,
कोई लावे बुला गुज़रबां[7]को।
कुंजड़े ढांके हैं साग पात अपना,
तके है बनिया दांवघात अपना।
कि मबादा[8] इधरको आ जावे,
सौदे यकसू[9] हमें न खा जावे।
ईंट पत्थर भी खा गुज़र जावे,
अलग़रज़ पेट अपना भर जावे।

---

[1]ग़रीब [2]झेंप [3]पहाड़ी बकरा [4]चरनेवाला बकरा [5]गन्ना [6]दुकानदार [7]पहरेदार [8]ऐसा न हो [9]एक तरफ़।

क्या क्या जीनेकी कहिए चखता है,
लेक[1] पेट उसको मार रखता है।

* * *

वह क़ज़ारा[2] हुआ मिरा मेहमान,
खा गयी उसकी मेज़बानी जान।
घरमे जो कुछ था बेच मंगवाया,
खाना उसके लिए मैं पकवाया।
कितना खाना बयां करूं तुझसे,
जिसपे सौ मेहमां करूं तुझसे।
मुझसे थी रोज़गार[3]से अनबन,
ख़ूब खाना तो तुझपे है रोशन।
चार मन गाजरोंका क़लिया था,
दहमनी[4] देग बीच दलिया था।
रोटियां किस क़दर बताऊं मैं,
जिसको दो चार साल खाऊं मैं।
चाह करके गिरा जो वो बल्लाअ[5],
मददे - रूहे - अशअबे - तम्माअ[6]।
थे अभी रोटियोंके जेटके जेट,
मैं रहा कहता खा गया वो समेट।
खाना कोई और क्या कहे उसका,
सारे मुंह देखते रहे उसका।

* * *

---

[1]लेकिन [2]सयोगवश [3]दुनिया [4]दस मनकी [5]साबित निगलनेवाला [6]लालची अशअबकी रूहकी दुहाई (अशअब एक मशहूर खानेवाला था)।

जब मरेगा वो भूखका रोगी,
रूह तोशेकी रोटी[1]में होगी।
खानेकी बू जो नाकमें पैठे,
मर गया होवे तो भी उठ बैठे।
अक़्ल बावर[2] अगर्चे करती नहीं,
वह मरे भूख उसकी मरती नहीं।
भूखे उसका जो जी निकल जावे,
गोर[3]में भी कफ़न निगल जावे।

* * *

[1]तोशेकी रोटी क़ब्रमें मुर्देके साथ रखी जानेवाली रोटीको कहते हैं [2]विश्वास [3]क़ब्र।

*

देहातका सफ़र

पाओ तौफ़ीक़[1] टुक तो सरको धुनो,
यह भी इक सानहा[2] है 'मीर' सुनो।

हमको दरपेश[3] तब सफ़र आया,
जब कि बरसात सर ही पर आया।

अब्र[4] होने लगे सफ़ेदो-सियाह[5],
पानी रस्तोंमें कीच सारी राह।

बीचमे होता कुछ अगर असबाब,
मुंह उठानेकी जीमें होती ताब[6]।

सो तो कम्बल न पट्टू ना लोई,
सायागुस्तर[7] न अब्र बिन कोई।

अब्र ही बेकसीपे रोता था—,
अब्र ही सरका साया होता था।

कीच पानीमें कपड़े ख़्वार[8] हुए,
वहीं गाड़ीमे जा सवार हुए।

रहरवी[9]का किया जो हमने मैल[10],
भेसे चहले[11] के थे बहल[12]के बैल।

आसमां आब[13] सब, जमीं सब कीच,
ख़ाक है ऐसी जिंदगीके बीच।

---

[1]शक्ति, सामर्थ्य [2]दुर्घटना [3]सामने [4]बादल [5]काले सफ़ेद [6]ताक़त [7]साया करनेवाला [8]बरबाद [9]यात्रा [10]इच्छा [11]कीचड़ [12]गाड़ी [13]पानी।

शब[१] कि दरयापे होके राह पड़ी,
पानीके सतहपर निगाह पड़ी।

दामने-अब्र पाट दरियाका,
दे गिरह तू कहे कि बांधा था।

होश जाता था देख जोशे-आब[२],
गोश[३] करता था कर[४] ख़रोशे-आब[५]।

आब तहदार और तीरा[६] बहुत,
लहर उठती जो थी सो ख़ीरा[७] बहुत।

पानी पानी था शोरसे तूफ़ान,
देख दरियाको सूखती थी जान।

नावमें पांव हमने बारे रखा,
ख़ौफ़को जानके कनारे रखा।

जब कि कश्ती रवां हुई वांसे,
जिस्म गोया कि था न थो जांसे।

क्या कहें डूब ही चले थे हम,
नाख़ुदाई[८] ख़ुदाने की उस दम।

बल्ली लगती न थी, न थी कुछ थाह,
अक़्ल-गुमकर्दा[९] लोग थे हमराह[१०]।

रेला पानीका जब कि आता था,
ख़ौफ़से जी ही डूबा जाता था।

---

[१]रात [२]पानीका ज़ोर [३]कान [४]बहरा [५]पानीका शोर [६]काला [७]ऊंची [८]पार लगाना [९]होश हवास खोये हुए [१०]साथ।

ख़तरे-ग़र्क़[1]से थी ताक़त ताक़[2],
बेख़ुदी[3]से हुआ था इस्तग़राक़[4]।

बद बलासे थे हमकनार[5] हुए,
था ख़ुदा ही तो पल्लीपार हुए।

किस दुरवेश[6]का था यम्नक़दम[7],
जाके पहुंचे जो उस कनारे हम।

वर्ना एमाल[8]ने डुबोया था,
गोहरे-जां[9]से हाथ धोया था।

उस कनारेका जो असर पाया,
हम तलातुम-कशों[10]मे जी आया।

उस तरफ उतरे आबके जाकर,
'मोर' और पोर साहबो-चाकर।

* * *

पार था गंजका जो शाहदरा,
सबने रहना वहींका जीमे धरा।

फ़ासला एक कोसका था बीच,
राह यांसे थी वां तलक सब कीच।

थे बहुत बीचमे नशेबो-फ़राज़[11]
पहुंचे वां शाम खींच रंजे-दराज़[12]।

सो न जागह थी ना मकाने-मबीत[13],
चार दूकाने एक टूटी मसीत।

---

[1]डूबनेका डर [2]दूर [3]जी छोड़ना [4]गुम होना [5]साथ [6]फ़क़ीर [7]बरकत [8]कर्मों [9]जानका मोती [10]तूफ़ानके मारे [11]ऊंचानीचा [12]लम्बी तकलीफ़ [13]रातका ठिकाना।

जाके हैरां हुए किधर जावें,
सर घुसेड़ें जो टुक जगह पावें।
तगो-दो[1] हर तरफ़ लगे करने,
तिसपे पड़ते थे मेंहके भरने।
कोई मैदांमे कोई छप्परमे,
कोई दरमें कोई किसू घरमे।
घर मिला साहबोंको ऐसा तंग,
जिसपे बैतुलख़लाको[2] आवे नंग[3]।
बैठने दे न जब कि साहबको,
कौन पूछे नफ़र[4] मुसाहबको।
ढूंढते ढूंढते सरा पायी,
जैसे घर छूटे वैसी जा पायी।
रहना भटियारीके ग़नीमत जान,
जो कहा उनने हम गये सब मान।
कुछ पकानेका जब सवाल किया,
मैंने इज़हार[5] अपना हाल किया।
"यां जो लाये हैं मुझको अपने साथ,
ज़िंदगानी है मेरी उनके हाथ।
पहुंचे हैं उनके रूबरू[6]से तआम[7],
सुबहका सुबह मुझको शामका शाम।"
सुनके इक दिलसे उनने खींची आह,
और बोली कि "वाह साहब वाह।

---

[1]दौडधूप [2]पाखाना [3]शर्म [4]बेचारा, मामूली आदमी [5]प्रकट [6]सामने [7]खाना।

हम तो जाना था आदमी हो बड़े,
चार पांच आदमी हैं पास खड़े।
कुछ ये खावेंगे कुछ खिलावेंगे,
हम कुछ इनके सबबसे पावेंगे।
सो तो निकले हो कोरे बालम तुम,
हो गदा[1] जैसे शाहआलम[2] तुम।
खाने पीनेकी कुछ नहीं है बात,
देखिए किस तरहसे गुज़रे रात।
सदक़े[3] मैं ऐसे भी उतारे के,
सो गये बख़्त[4] घर हमारेके।"
मैं कहा, "मेहतरानीजी! कुछ लो,
मुझसे आजुर्दा-दिल[5] न इतनी हो।
बाज़ आते हैं कुछ खिलाते हैं,
बाज़े मुझसे भी आते जाते हैं।"
बारे ज्यूं त्यूं हुई वो रात तमाम,
सुबहको साहबोंका ठहरा मुक़ाम।
यह भी दिन शब हुआ सहर[6] था कूच,
ग़ाज़ियाबादको गये सब पोच[7]।
राह तै कर सरामें जा उतरे,
कुछ सितम-दीदा[8] पास आ उतरे।
साहब उतरे हवेलीमें आकर,
बाग़में उसके सब नफ़र चाकर।

---

[1]भिखारी [2]तत्कालीन मुग़ल सम्राट [3]क़ुरबान, न्यौछावर
[4]गये बीते [5]भाग्य [6]दुखी [7]सुबह [8]जन साधारण [9]दुखी।

बारवर[1] थे दरस्त सब यह भी,
फल वलेकिन किन्होंने पाया भी ?
इस भी मंजिलमें एक रोज रहे,
गुजरी जिस तौर कोई किससे कहे।

* * *

लोग जिसदम सवार होने लगे,
और असबाब बार[2] होने लगे।
सोहनी इस रवारवी मे गयी,
लोग थे मुज़तरब[4] जगह थी नयी।
वहशत[5] अजबस[6] कि उसको तारी[7] हुई,
सर पटककर किसी तरफ़को मुई[8]।
ईधर ऊधर तलाशकर देखा,
गुमशुदा[9] को न भर नजर देखा।
सारी बस्तीमे जुस्तजू[10]को गया,
देरतक यह खयाल सबको रहा।
जिनकी आती है ऐसे जाते है,
कि न फिर खोज उनका पाते है।
मर्ग[11] थी उसकी उस जगह तक़दीर,
बिल्ली थी या कि गुर्बए-तस्वीर[12]।
जिनसे मालूफ[13] थी वहीं रहती,
उनसे कुछ कुछ निगाहोंमें कहती।

---

[1]फलवाले [2]लदने [3]गड़बड़ी [4]परेशान [5]घबराहट [6]बहुत [7]छा जाना [8]मरी [9]खोई हुई [10]तलाश [11]मौत [12]तस्वीरकी सी बिल्ली [13]परिचित।

क्या नफ़ासत मिज़ाजकी कहिए,
सुथरी इतनी कि देखते रहिए।
चूहे चिड़ियापे उनने कब की नज़र,
हजका करना न फ़र्ज़ था उसपर।
मोहनी भी तो थी बहन उसकी,
निस्बत उसके थी वह बहुत घुसकी।
पावे जो कुछ सो मार खावे थे,
एक क्या चार चार खावे थे।
जानवर मारना तो है यकसू,
तेज पंजा किया न उनने कभू।
यह नज़ाकत उसीको बन आवे,
मूशे-दश्ती[1]को देख डर जावे।
वह छछूंदरके बोलते भागे,
यह पड़ी सोती भी हो तो जागे।
छिपकलीसे वो फेर मुंहको ले,
वह जफ़ाकार जेफ़ा[2]पर जी दे।
वह परीसी थी जो ख़राम[3] करे,
यह जो उछले तो धूमधाम करे।
ग़रज अफ़सोसकी जगह बिल्ली,
अब कहां गो कि छानिए दिल्ली।

* * *

ऐसी बेगम मिज़ाज बिल्ली खो,
बेगमाबाद हम गये यारो।

---

[1]जंगली चूहा [2]मुर्दा जानवर [3]चलना।

वांसे मेरठ सभोंने की मंज़िल,
कीच पानी अगर्चे था हायल[1]।
गिरते पड़ते पहुंच गये सारे,
हम जफ़ाए-सिपहर[2]के मारे।
वांसे लाउर, निसंग फिर वांसे,
जाके वां तंग आ गये जांसे।
इक गढ़ी बूदोबाश[3]को पायी,
कुछ न खानेको जिसमे नै[4] खाई।
फूटी फाटीसी चारदीवारी,
और मैदान थी गढ़ी सारी।
फिर न मैदान भी बराबर था,
हर क़दम एक ग़ारो-चुक़्क़र[5] था।
खंडरसे इसमें तीन चार मकान,
जिनका गिरनेपे सल्त है मैलान[6]।
वह गढ़ी सारी खत्ते नाजके थे,
बरसोंसे थे पड़े न आजके थे।
खाक मिट्टीसे उन गढ़ोंको भरा,
बंगला इक लाके उसके बीच धरा।
खिश्ती[7] पाये अगर न बनवाते,
बाउमें[8] उस समेत उड़ जाते।
बाउ जंगलकी तुंद कुछ न रुकाव,
मेहमें चल पड़े तो कांपे जाव।

---

[1]बाधक [2]भाग्यकी कठोरता [3]रहना [4]न [5]गहरा गढा [6]तबियत [7]ईटके [8]हवा।

इक गड़ी जिसकी सैकड़ों राहें,
वां ठहरनेको चाहिएं बाहें।
बह रहे जो रखे बहुतसे लोग,
या कोई जोगी जो करे वां जोग।
वर्ना मुश्किल बहुत सबाते-क़दम[1],
दिलमें इक हौल[2] ही रहे हरदम।
वाउ सी दिनको सांयें सांयें करे,
रात होवे तो भांयें भांयें करे।
गर शिकस्ता[3] हुई कहीं दीवार,
बेज़रीसे[4] बनाना है दुश्वार।
हफ़्ते हफ़्ते तलक पड़ी है खराब,
पर्दा काहेका फिर, है रफ़ए हिजाब[5]।
कारपरदाज़ों[6]को तक़ल्युद[7] है,
शोर है गाली है तशद्दुद[8] है।
वे बिचारे बहाने करते हैं,
रात दिन लोग चोका भरते हैं।
कहिए उनसे तो ये मिले हैं जवाब,
"किसके घरसे बनाके लावे शिताब[9]।
हमको खाने ही का तरद्दुद[10] है,
सुबह बक़्क़ालका तशद्दुद[11] है।
बनिया मुंहको छिपाये जाता है,
रोटीका फ़िक्र खाये जाता है।

---

[1]पाँव टिकना [2]डर [3]टूटी [4]निर्धनता [5]बेपर्दगी [6]काम करनेवाले [7]परेशानी [8]मारपीट [9]जल्दीसे [10]उलझन [11]भय।

हाल कब पूछनेके हैं क़ाबिल,
हम फ़क़ीरोंके रंग[1] हैं सायल[2]।
सोचें हैं जब तो भूल जाते हैं,
बात कहते हैं भूल जाते हैं।
किसको मूसें कहांसे कुछ लावें,
दाल आटा जो तुमको पहुंचावें।
तुम कहो दाल माश की है जबूं[3],
यां बहम[4] पहुंचे हैं जिगर हो लूं।
तुम कहो आटा किरकिरा खाया,
यां कलेजा छना तो हाथ आया।
और दो चार रोज़ यह भी है,
एक ग़म सीनासोज़[5] यह भी है।
फ़स्ल होने अभी नहीं पायी,
पेशगी सबसे क़र्ज़ ले खायी।
जिससे झूठे हुए हैं हम दस बार,
चोट्टा वह कहे है साहूकार।
माश की दालका न करिए गिला[6],
गोश्त है यां कभू किसूको मिला?"
जी अगर चाहे कोई तरकारी,
गोल कद्दू मिले बसद-ख़्वारी[7]।
भिंडी बैंगनके नाम ठेंडस[8] था,
अरवी तोरी बग़ैर जी बस था।

---

[1]तरह [2]भिखमंगे [3]बुरी [4]प्राप्त [5]जी जलानेवाला
[6]शिकायत [7]बड़ी परेशानीसे [8]टिंडा।

दारू-गोली[1] के कुछ न थे असबाब,
माश की दाल खाते थे अहबाब।

घास ही घास इस मकांमें तमाम,
तिसमें लस्साअ[2] जानवर अक़साम[3]।

जैसे ज़म्बूरे-ज़र्द[4] ऐसे डांस,
काट खावें तो उछलो दो दो बांस।

उनके काटे बदनपे दाना है,
मिर्च जदवार फिर लगाना है।

एक दो दिन जला फ़राग़[5] हुआ,
उसकी जागह सियाह दाग़ हुआ।

दिनको वह सूरते-तआम[6] हुई,
रातको नींद यूं हराम हुई।

* * *

कुत्तोंके चारों ओर, रस्ते थे,
कुत्ते ही वां कहे तू बसते थे।

दो खड़े थे कहीं, कहीं बैठे,
चार लोगोंके घरमें हे पैठे।

एक ने फोड़े बासन एको ने,
खोद मारे घरोंके सब कोने।

कोई घूरा करे कोई भौंके,
बल्ते ख़ुफ़्ता[7] भी शोरसे चौंके।

---

[1]शराब भंग [2]डंक मारनेवाले [3]तरह तरहके [4]पीली ततैया [5]फुरसत [6]खाने पीनेका ढंग [7]सोया भाग्य।

सांझ होते क़यामत आयी एक,
शोरे-अफ़अफ़[1] से आफ़त आयी एक।

गल्ला-गल्ला[2] घरोंमें फिरने लगे,
रोटी टुकड़ेको बू पे गिरने लगे।

एकने आके देगचा चाटा,
एक आया सो खा गया आटा।

एकने दौड़कर दिया फोड़ा,
फिर पिया आके तेल अगर छोड़ा।

घूरने इक लगा अंधेरा कर,
एकने और एक फेरा कर।

घरमें छींके अगर थे तोड़ दिये,
हांडी बासन गिराके फोड़ दिये।

लोग सोते हैं कुत्ते फिरते हैं,
लड़ते हैं, दौड़ते हैं, गिरते हैं।

एक हड्डीपे चार चार लड़े,
गोश्तपर भेड़िएसे टूट पड़े।

कुत्ते ही वां दोचार[3] रहते हैं,
दो गये भी तो चार रहते हैं।

जागते हो तो दूबदू[4] कुत्ते,
सोकर उट्ठो तो रूबरू[5] कुत्ते।

सरपे दरबानके बला ही रहे,
कुत्ता एकाध घरमें जाही रहे।

---

[1]भों भों का शोर [2]झुडके झुड [3]सामने [4]सामने [5]सामने।

मुंहमें कफ़[1] 'दूर दूर' करनेसे,
हाल बेहाल शोर करनेसे।
कुत्तोंकी क्या समाजतों[2] को कहें,
चिचड़ीसे रातदिन लगे ही रहें।
बाहर अंदर कहां कहां कुत्ते,
बामो-दर[3] छत जहां तहां कुत्ते।
झड़झड़ावे है कानको कोई,
रोवे अपनी ही जानको कोई।
इक तरफ़ है चपड़ चपड़की सदा,
यानी कुत्ता है चुस्की चाट रहा।
एक छल्लेको मुंहमें ले आया,
एक चूल्हेको खोदता पाया।
एकके मुंहमें हांडी है काली,
एकने चलनी चाट ही डाली।
तेलकी कुप्पी एक ले भागा,
एक चिकने घड़ेसे जा लागा।
कुत्ते यारो कि जानका था रोग,
जां-बलब[4] हों न किस तरहसे लोग।
आदमीकी मआश[5] हो क्योंकर,
कुत्तोंमें बूदोबाश[6] हो क्योंकर।

* * *

बस्ती देखी सो ऐसी थी आबाद,
कि बियाबाने-सख़्त[7]से दे याद।

---

[1]झाग [2]खुशामद, पीछे लगना [3]छत और दरवाज़ा [4]मरणासन्न [5]गुज़र [6]रहना [7]घना जंगल।

चार छप्पर कहीं चमारोंके,
सो भी टूटे गिरे बिचारोंके।
फिर चलो आगे तो नहीं है कुछ,
ढुंढसा और जो कहीं है कुछ।
टूटी फूटी कोई हवेली है,
सो भी मैदानमें अकेली है।
एक दो मुर्देसे पड़े हैं वां,
जर्द हो हो गये हैं बे लबे-नां[1]।
लोग ऐसे मकान सब ऐसे,
ऐसी जागह न उचटे दिल कैसे।
और जो चार घर नज़र आये,
उनकी खूबी खुले वहीं जाये।
वह भी कोली चमार थे कोई,
फ़ाक़ोंके ज़ेरबार[2] थे कोई।
सूरतें काली काली रूखेसे,
सारे कंगाल और भूखेसे।
चार दानोंके वास्ते जी दें,
जान खा जायं कुछ न जबतक लें।
उससे आगे बढ़े तो धोंवर थे,
उजड़े पुजड़े उन्होंके कुछ घर थे।
और आगे गये तो था बाज़ार,
इसमें बनियोंकी थीं दुकानें चार।
एकके पास दाल कुछ आटा,
तिसको भी मक्खियोंने था चाटा।

---

[1]रोटीका टुकड़ा [2]पीड़ित।

एकके पास सांवा थोड़े चने,
छबड़ोंमें ख़ाक धूल एक कने।
जो था बाक़ी रहा सा था कंगाल,
नामको कहते हैं उसे बक़्क़ाल।
उसका आमिल[1] के यां उठा माया[2],
उनने जैसा किया था सो पाया।
एक कुंजड़ेपे चार गट्ठी प्याज,
तिसपे उसको हज़ार फ़ख़्रो-नाज़[3]।
क्या कहूं मिर्च थी न अदरक थी,
उस मुछंदरमें कुछ भी भदरक थी।
एक दूकान थी पसारी की,
उसने हम लोगोंसे भी यारी की।
उससे जाकर जो मांगिए हल्दी,
जर्द मिट्टीको बांध दे जल्दी।
देखकर कुछ कहो तो वह ये कहे,
बस तुम इस बस्तीमें मियांजी रहे।
यां जो कुछ है चलन सो देता हूं,
मैं भी पैसे लगाके लेता हूं।
मांगो उससे जो मिर्च या धनिया,
देवे लुच्चा वहीं बता धनिया।
उसमे दो दाने और सब कंकर,
देवे काग़ज़में हाथ लम्बा कर।

---

[1]हाकिम [2]धन [3]गर्व।

और अशिया[1] यहींसे करिए क़यास[2],
आगे जाता नहीं कहा मुझ पास।

* * *

और दस बीस घर गंवारोंके,
और दो चार फ़क़ामारोंके।

फूटी मस्जिद ख़तीब[3] था न अज़ां,
यही ख़ाना[4] ख़तीबका था वां।

न थी क़ैदे-सलातो-रस्मे-सौम[5],
उसपे सय्यद इमाम वां की क़ौम।

बंदे सब जिनका था ख़ुदा न कोई,
उस तरीक़ेसे आश्ना[6] न कोई।

राहो-रस्मो-तरीक़[7] सब बेढब,
पहले गाली थी पीछे हर्फ़बलब[8]।

कोसों भागा अगर मिला कोई,
सुहबत ऐसोंसे रक्खे क्या कोई।

एक तकिया[9] न जिसमें फ़र्शे-काह[10],
हाले-दुरवेश[11] क़ाबिले-सदआह[12]।

टुकड़े टुकड़ेकी एहतियाज[13] उसको,
मरज़े-जोय[14] लाइलाज उसको।

---

[1]वस्तुएं [2]अनुमान [3]उपदेशक [4]घर [5]सलात (नमाज़) और सौम (रोज़े) की पाबंदी [6]परिचित [7]ढंग [8]मुहपर बात [9]फ़क़ीरकी दरगाह [10]घासका फ़र्श [11]फ़क़ीरका हाल [12]सैकड़ों बार रोनेके क़ाबिल [13]ज़रूरत [14]भूखका रोग।

बरसों चिल्लाके नाउमेद हुआ,
चुपकी साधी जिगरमें छेद हुआ।

आते जातेसे उनने जो पाया,
उसीपर रह गया वही खाया।

गिर्द जो चार खाककेसे ढेर,
जिनको कहते थे लेटे हैं यां शेर।

अपना तो एतक़ाद[1] था ही कम,
पर कभू बिल्ली भी न देखी हम।

कुछ न देखा हम उन भी गोरों[2] से,
काम निकला सो अपने ज़ोरोंसे।

* * *

की तवज्जुह[3] जो टुक दरोंकी ओर,
दिल जिगरपर गिरे पड़ा कुछ ज़ोर।

जिससे छातीमें दर्द होने लगा,
रंग चेहरेका ज़र्द होने लगा।

फिर ज़मींदारोंमे निफ़ाक़[4] हुआ,
यह अजब और इत्तफ़ाक़ हुआ।

दोनोंका इक जुदा ही मतलब है,
यह कहे रोज़[5] वह कहे शब[6] है।

* * *

आसपास उस गढ़ीके आयी झील,
गुम थे बरसातमें तरीक़ो-सबील[7]।

---

[1]विश्वास [2]क़ब्रों [3]ध्यान [4]लड़ाई [5]दिन [6]रात।
[7]कार्य साधन।

ईधर ऊधर उतरके पानी जाओ,
क़हर[1] है फिर जो टुक भी होवे चढ़ाव।

उससे वांकी हवा बहुत मरतूब[2],
होवे नज़ला जुकाम बेअस्लूब[3]।

कितने रोज़ोंमें होती है खांसी,
ऐसी जैसी गलेमें दें फांसी।

फिर वो दर्जा है जिसमें होवे दिक़[4],
यह कोई निकली एक सालस[5] शक़[6]।

पड़ी आफ़त ख़तर था सिक्खोंका,
क्योंकि वह मुल्क घर था सिक्खोंका।

उसमें आ जाते तो क़यामत थी,
मालो-जां ग़र्ज़ सबकी रुख़सत थी।

न कोई दादरस[7] न वक़्ते-दाद[8],
मुफ़्त ही हम गये थे सब बरबाद।

* * *

क्या कुढब चर्ख़े-कज[9] ने फेंका था,
पर ख़ुदा कुछ हमारा सीधा था।

जिसने क़ुदरत-नुमाई[10] की अपनी,
इस बलासे रिहाई की अपनी।

---

[1]मुसीबत [2]नम [3]बेढब [4]क्षय [5]तिहाई [6]टूटी (गढ़ीसे मतलब है) [7]न्याय करनेवाला [8]न्यायका समय [9]टेढ़ा आसमान (भाग्य) [10]क़ुदरत दिखाना।

बस क़लम ! है सरीर[1] तेरी तुंद[2],
शोरसे तो पड़ा जहांमें दुंद।
बदज़बानी[3] का मुझको कब है दिमाग़,
ऐसी बातोंसे मैं किया है फ़राग़[4]।
हो चुकी साहबोंकी फ़रमायश,
चुप रह अब है ज़माने-आसायश[5]।

* * *

[1]कलमकी आवाज़ [2]तेज़ [3]कटुवचन कहना [4]छुट्टी [5]आराम करनेका ज़माना।

रुबाइयां

दामन अज़लत[1]का अब लिया है मैंने,
दिल मर्ग[2]से आश्ना[3] किया है मैंने।
था चश्म-ए-आबे-ज़िंदगानी[4] नज़दीक,
पर ख़ाकसे उसको भर दिया है मैंने।

* * *

अफ़सोस है उम्र हमने यूं ही खोयी,
दिल जिसको दिया उनने न की दिलजोई[5]।
झुंझलाके गला छुरीसे काटा आख़िर,
भूल ऐसी भी इश्क़में करे है कोई।

* * *

बुतख़ाने[6]से दिल अपने उठाये न गये,
काबेकी तरफ़ मिज़ाज लाये न गये।
तौरे-मस्जिद[7] को बरहमन क्या जाने,
यां मुद्दते-उम्रमें हम आये न गये।

* * *

अब वक़्ते-अज़ीज़को तो यूं खोओगे,
पर सोचके ग़फ़लतके तईं रोओगे।
क्या ख़्वाबे-गरां[8]पे मैल[9] रोज़ो-शब है,
जागो टुक 'मीर' फिर बहुत सोओगे।

* * *

---

[1]एकांत [2]मृत्यु [3]परिचित [4]अमृत स्रोत [5]हमदर्दी [6]मंदिर [7]मस्जिद के तरीक़े [8]गहरी नींद [9]प्रेम।

हर लहजा[1] ढलाता है कुढ़ाता है मुझे,
हर आन सताता है खपाता है मुझे।
कल मैं जो कहा, "रंजसे हासिल मेरे?"
बोला, "तिरा आज़ार[2] खुश आता है मुझे।"

* * *

दिल जिनके बजा[3] है उनको आती है खवाब[4],
आराम खुश आता है सुहाती है खवाब।
मैं ग़मज़दा[5] क्या अपने दिनोंको रोऊं,
मेरी तो, जहां शब[6] हुई, जाती है खवाब।

* * *

वस्फ़[7] अपने दिनोंके किससे कहिए सारे,
उस शोखकी तमकीं[8]ने तो दिल ही मारे।
बालोंमें कभू मुंह न छिपा यूं बोला,
कह 'मीर' गयी है रात क्योंकर बारे।

* * *

हर चंद कि ताअत[9]मे हुआ है तू पीर[10],
पर बात मिरी सुन कि नहीं बेतासीर[11]।
तस्बीह-बकफ़[12] फिरनेसे क्या काम चले,
मनकेकी तरह दिल न फिरे जबतक 'मीर'।

* * *

क्या 'मीर' तुझे जान हुई थी भारी,
जो उस बुते-संगदिलसे की थी यारी।

---

[1]क्षण [2]कष्ट [3]ठीक जगह, दुरुस्त [4]नींद [5]दुखी [6]रात [7]गुण, विशेषताए [8]शान [9]भगवत भक्ति [10]बूढ़ा [11]बेअसर [12]हाथमें माला लिये हुए।

बीमार भला क्या कोई होवे उसका,
परहेज़ करे जिससे ख़ुदाई सारी।

* * *

दरवेश[1] है 'मीर' राह तुझको प्यारे,
ग़फ़लतसे नहीं निगाह तुझको प्यारे।
आते हैं नज़र जाते ये सारे असबाब[2],
सूझेगी कभू भी आह तुझको प्यारे।

* * *

राज़ी टुक आपको रज़ा[3]पर रखिए,
मायल दिलको तनिक क़ज़ा[4] पर रखिए।
बंदोंसे तो कुछ काम न निकला ऐ 'मीर',
सब कुछ मौक़ूफ़[5] अब ख़ुदापर रखिए।

* * *

दिल ख़ूं है, जिगर दाग़ है, रुख़सार[6] है ज़र्द,
हसरतसे गले लगनेकी छातीमें है दर्द।
तनहाई-ओ-बेकसी-ओ-सहरा-गर्दी[7],
आंखोंमें तमाम आब मुंहपर सब गर्द।

* * *

कुछ ख़्वाब[8]सी है 'मीर' ये सुहबतदारी[9],
उठ जायेंगे ये बैठे हुए यकबारी।
क्या आंखोंको खोला है, तनिक गोश[10]को खोल,
अफ़साना[11] है पल मारते मजलिस सारी।

* * *

---

[1]सामने [2]वस्तुएं [3]ईश्वरेच्छा [4]मृत्यु [5]आश्रित [6]गाल [7]जगल जंगल फिरना [8]सपना [9](दुनियावालोंका) साथ [10]कान [11]कहानी।

क्या तुमसे कहूं 'मीर' कहांतक रोऊं,
रोऊं तो ज़मींसे आसमां तक रोऊं।
ज्यूं अब्र[1] जहां जहां भरा हूं ग़मसे,
शायस्ता[2] हूं रोनेका जहांतक रोऊं।

* * *

'मीर' उससे मिले कि जो मिला भी न कभू,
जी यूं ही गया वो आ फिरा भी न कभू।
चुप जिसके लिए लग गयी ऐसी इनको,
उनने कुछ जेरे-लब[3] कहा भी न कभू।

* * *

क्या कोफ़्त[4]से लख़्ते-दिल[5]के कूटे निकले,
टुकड़े जो हुए जिगरके टूटे निकले।
छाती जो भुनी निदान जलते जलते,
उसमें के फफोले सारे फूटे निकले।

* * *

तुम तो ऐ मेहरबां अनूठे निकले,
जब आन के पास बैठे रूठे निकले।
क्या कहिए वफ़ा एक भी वादा न किया,
सच यह है कि तुम बहुत ही झूठे निकले।

* * *

मिलिए उस शख़्स से जो आदम होवे,
नाज़[6] उसको कमाल[7]पर बहुत कम होवे।
हो गर्मे-सुख़न[8] तो गिर्द आवे इक ख़ल्क़[9],
ख़ामोश रहे तो एक आलम[10] होवे।

* * *

---

[1]बादल [2]अभ्यस्त [3]धीमेसे [4]कुढ़न [5]दिलके टुकड़े [6]घमंड [7]गुण [8]बात करे [9]दुनिया [10]असर।

हर सुबह मिरे सर पे क़यामत गुज़री,
हर शाम नयी एक मुसीबत गुज़री।
पामाले-कदूरत[1] ही रहा यां दिन रात,
यूं ख़ाक में मिलते हमको मुद्दत गुज़री।

* * *

अब शहरकी गलियोंमें जो हम होते हैं,
मुंह ख़ूने-जिगरसे दमबदम धोते हैं।
यानी कि हरएक जाय पे ज्यूं अब्रे-बहार[2],
आलम आलम जहां जहां रोते हैं।

* * *

तस्बीहको[3] मुद्दतों संभाला हमने,
ख़िर्क़ा[4] बरसों गलेमें डाला हमने।
अब आख़िरे-उम्र 'मीर' मै[5] को ख़ातिर,
सज्जादा[6] गिरो करने निकाला हमने।

* * *

हर रोज़ नया एक तमाशा देखा,
हर कूचेमें सौ जवाने-रअना[7] देखा।
दिल्ली थी तिलिस्मात कि हर जागह 'मीर',
इन आंखोंसे हमने आह क्या क्या देखा।

* * *

बस हिर्सो-हवा[8]से 'मीर' अब तुम भागो,
ग़फ़लत कबतक, कहे हमारे लागो[9]।

---

[1]प्रपीड़ित [2]बहारके मौसमका बादल [3]माला [4]फ़क़ीरोंका लिबास [5]शराब [6]वह कपड़ा जिसे बिछाकर नमाज़ पढ़ते हैं [7]कड़ियल जवान [8]लालच [9]हमारा कहा मानो।

चलनेकी ख़बर दे है सफ़ेदी मू[1] की,
होने आयी है सुबह अब तो जागो।

* * *

जिस वक़्त शुरूअ[2] यह हिकायत[3] होगी,
रंजीदगीए-यक दिगर[4] निहायत होगी।
अहवाल वफ़ा का अपने हरगिज़ मुझसे,
मत पूछ कि कहनेमें शिकायत होगी।

* * *

काहे को कोई ख़राबे-ख़्वारी[5] होता,
काहेको हमे जान ये भारी होता।
दिलख़्वाह[6] मिलाप होता तो मिलते,
ऐ काशके इश्क़ इख़्तियारी होता।

* * *

चुपके रहना न मीर दिलमें ठानो,
बोलो चालो, कहा हमारा मानो।
इक हर्फ़ न कह सकोगे वक़्ते-रफ़्तन[7],
चलनेको ज़बानके ग़नीमत जानो।

* * *

यारोंको कदूरते[8] है अब तो हमसे,
जिस रोज कि हम जायेंगे इस आलम[9]से।
उस रोज खुलेगी साफ़ सब पर यह बात,
इस बज़्म[10] की रौनक़ थी हमारे दमसे।

* * *

---

[1]बाल [2]शुरू [3]कहानी [4]एक दूसरेसे कुढ़न [5]बदनामीका मारा [6]मनचाहा [7]जाते समय [8]दुश्मनी [9]दुनिया [10]महफ़िल।

दिल्लीमें बहुत सख़्त है अबकी गुज़रान[1]—दिलको कर संग[2],
ग़ैरत[3] न रही आक़बते-कार[4]न शान—खींचा यह नंग[5]।
यारोंमें न था कोई मुरौव्वत जो करे—उजड़े थे घर,
ता-हद्दे-नज़र[6] साफ़ पड़े थे मैदान—अरसा[7] था तंग।

* * *

---

[1]गुज़ारा [2]पत्थर [3]शर्म [4]अन्ततः [5]शर्मिन्दगी
[6]जहाँतक निगाह जाय [7]दुनिया।

५—ग़ज़लके प्रतीकात्मक शब्द

उर्दू कविता विशेषत. गज़लमे कुछ ऐसे नाम भी आते है जो ऐतिहासिक तौरसे चाहे सही न साबित हों किन्तु कवितामे विशेष अर्थ रखते है। उनके साथ जो विशेषताएँ जुड़ गई है उन्हे समझना कविताका रस लेनेके लिए आवश्यक है। मीरकी ग़ज़लोंमे ऐसे शब्द जो आये है उनके पूरे अर्थ और जिन विचारोंको ये शब्द व्यक्त करते है उन्हे हम नीचे दे रहे है.—

ईसा

यह वही है जिन्होंने ईसाई धर्म चलाया। मुसलमान भी उन्हे बड़ा नबी मानते है। इनके बारेमे कहा जाता है कि अपने चमत्कारसे हर रोगीको अच्छा कर देते थे बल्कि मुर्देको भी जिला देते थे। वे अब भी जीवित है और चौथे आसमान पर रहते है। विश्वास किया जाता है कि वे बग़ैर बापके पैदा हुए थे। इनकी माका नाम मरियम था। इसलिए इन्हे ईसा और मसीहाके अलावा इब्ने मरियम (मरियमका बेटा) भी कहा जाता है। इसी अनुरूपतासे माशूकको भी ईसा और मसीहा दोनो कहा गया है क्योंकि वह अपने सौन्दर्यसे और अपनी अदाओसे मुर्दा प्रेमियोमे भी जान डाल सकता है।

मूसा

मूसा यह भी एक नबी है जिन्होंने यहूदीधर्म चलाया। मुसलमान इन्हे भी ऊँचा नबी मानते है। ग़ज़लोंमें अक्सर इनका यह क़िस्सा आता है या इसका इशारा दिया जाता है कि इन्होंने एक बार खुदासे अपना जल्वा (ज्योति) दिखानेकी प्रार्थना की। खुदाने कहा कि तुममें मेरा जल्वा देखनेकी ताक़त नहीं है। इन्होंने फिर ज़ोर दिया और इसी शौक़मे एक पहाड़ पर चढ

गये जिसका नाम सीना था। । उर्दूमें अक्सर इसे तूरे सीना या तूर कहा जाता है । मूसाकी ज़िद पर खुदाने अपना जल्वा इस तरह दिखाया कि एक पेडसे एक चमक दिखाई दी जिसे देखते ही मूसा बेहोश होकर गिर पड़े और तूर जल गया । गज़लोंमे यह घटना कई रूपकोंमे दर्शायी जाती है । कभी मूसाके प्रेमको कमजोर बताया जाता है, कभी माशूकके गर्वकी तरफ इशारा होता है, कभी प्रेमीकी उत्कट मिलन अभिलाषाको मूसाकी अभिलाषा और प्रेमिकाके सौन्दर्यको खुदाका जल्वा कहते है ।

हजरत मूसाका वह किस्सा भी मशहूर है जिसमे उनके समकालीन मिस्रके राजा फरऔनने खुदाईका दावा किया था और हजरत मूसाने उसे नष्ट कर दिया था । मूसाके पैदा होनेके पहले ही ज्योतिषियोने कहा था कि एक बच्चा ऐसा पैदा होगा जो फरऔनका नाश करेगा । यह सुनकर फरऔनने सभी नवजात शिशुओंकी हत्या करना शुरू कर दिया । इसी डरसे मूसाकी माँने मूसाके पैदा होते ही उन्हे एक सन्दूकमें बन्द करके नदीमे बहा दिया । उस समय फ़रऔन अपनी बीबीके साथ नदीकी सैर कर रहा था । सन्दूक बहते देखकर रानीने उसे पकड़वा मँगाया । बच्चा देखकर फरऔनको शक हुआ कि शायद यही मेरा मारनेवाला हो । लेकिन उसकी रानीने उसका मजाक उडाया और बच्चेको पालने लगी । एक दिन मूसाने बचपनमे ही खेलते खेलते फरऔनकी दाढी पकड़ ली । इस पर वह बहुत बिगडा और इन्हे मार डालनेको उद्यत हो गया । उसकी बीबीने फिर समझाया कि यह बच्चा है, इसने जानबूझकर आपका अपमान नही किया । लेकिन फ़रऔन इस प्रकार न माना । उसने परीक्षाके लिए एक ओर जलता अंगारा और दूसरी ओर कुछ और चीज़ें रखी और मूसाको छोडकर देख। कि अगर यह अगारा पकड़ ले तो उसकी नादानी समझी जाय। मूसाने अंगारा ही पकड़ा और फ़रऔनका क्रोध शान्त हुआ । अगारेसे जलनेसे मूसाके हाथमे सफेद दाग़ हमेशाके लिए पड़ गया । इस दाग़को यदे-बेज़ा (हाथकी सफ़ेदी) कहने लगे । इसीसे मूसा अपने चमत्कार

दिखाते थे। उर्दू कवितामे कभी कभी यदे-बेजा और उसके चमत्कारका उल्लेख आता है।

बड़े होकर हजरत मूसाने फरऔनको समझाया कि तू खुदाईका दावा छोड़ दे, तू खुदा नही है। लेकिन वह काहेको मानता। उल्टे इनकी जान लेनेपर तुल गया। मूसाके पास एक डडा था। जिसे असाए-मूसा या असाए-मूसवी कहते है। यह डडा भी चमत्कारी था। कभी वह अजगर बन जाता था और कभी अन्य प्रकारसे मूसाकी सहायता किया करता था। फरऔनने मूसाका पीछा किया तो वे नील नदीकी ओर भागे। नदी आने पर मूसाने अपना डडा पटका और नदीमे पानी बहुत कम रह गया और मूसा उस पार उतर गये। यह देखकर फरऔनने भी नदीमे अपनी फौज डाल दी। जब फ़रऔन अपनी फौजके साथ नदीके बीचमे पहुँचा तो मूसाने फिर डडा पटका और नदी पहले जैसी हो गई और फरऔन मय फ़ौजके डूब गया। उर्दू कवितामे इस किस्सेका भी कभी कभी ज़िक्र आता है।

खिज़र

यह भी एक नबी है। कहा जाता है कि इन्हे अमरत्व प्राप्त है। यह हजारों सालके बूढ़े है। यह भूले भटकोंको राह लगाया करते है। कहा जाता है कि जब सिकन्दरको आबे हयात (अमृत) पानेकी इच्छा हुई तो उसने खिज़रसे कहा लेकिन खिज़रने उसे भटका दिया और वह प्यासा ही लौट आया। उर्दू शायरीमे कभी उनकी लम्बी आयु और अमरत्वका उल्लेख होता है और कभी उनके पथ प्रदर्शनका।

मजनूं

यह अरबके उस भागका रहनेवाला था जिसे नजद कहते है इसका नाम क़ैस था। बचपनमें ही इसे लैला नामक एक बालिकासे प्रेम हो गया। लैला साँवली थी लेकिन यह उसके प्रेममें पागल हो गया। इसीसे इसे मजनूं (उन्मत्त) कहने लगे। लैलाके प्रेममे हर जगह मारा मारा फिरता।

जहां रेगिस्तानमें गुबार उठते देखता वही समझता कि लैलाका महमिल (ऊँट सवारी) आ रहा है। इसी हालतमें वह मर गया। गजलमें प्रेमी अपनी उपमा मजनूसे और प्रेमिकाकी लैलासे देते है।

फ़रहाद

यह ईरानके करीबका रहनेवाला था। उसका खानदानी पेशा पत्थर काटना था। वह ईरानके बादशाह खुसरोकी रानी शीरीसे प्रेम करने लगा। इस प्रेमकी चर्चा बहुत बढी तो खुसरोने बदनामीसे बचनेके लिए यह तरकीब निकाली कि फरहादसे कहा कि शीरीको ताजा दूध पीनेका शौक़ है। दूध देनेवाले जानवर बेसतू पहाडके पास चरते है। यहाँ तक उनका दूध लानेसे ताजा नही रहता। इसलिए तुम बेसतूको काटकर नहर निकाल दो तो ताज़ा दूध तुम्हारी शीरी तक पहुँचे। उसने सोचा था कि यह पहाड़ क्या काटेगा लेकिन प्रेमके मारे फ़रहादने पहाड़ भी काट दिया और नहर निकाल दी। इसीसे उसे कोहकन (पहाड़ काटने वाला) भी कहते है। शीरी फिर भी उसे न मिल सकी क्योंकि खुसरोंने फिर चालाकी की और एक दाईसे कहलवा दिया कि शीरी तो मर गई। यह सुनते ही फ़रहाद अपने सर पर अपने तेशे (कुदाल) को मार कर मर गया।

इन ऐतिहासिक या अर्ध ऐतिहासिक नामोंके अलावा उर्दू कविता, विशेषतः ग़ज़लमें कई और नाम आते है जिनके साधारण अर्थके अलावा कवितामें कुछ दूसरा महत्व हो जाता है। इनमेंसे प्रमुख यह है:—

साक़ी

इसका साधारण अर्थ तो शराब पिलानेवाला है। लेकिन इससे कभी सौन्दर्यकी मदिरा ढालनेवाली प्रेमिका और कभी ईश्वर प्रेमकी शराब देनेवाले गुरुकी उपमा भी दी जाती है। कभी अपने साधारण अर्थों में भी यह प्रयुक्त होता है।

शराब

इसे हम आप सभी जानते है । कभी कभी इससे सासारिक या ईश्वरीय प्रेमका भी बोध होता है । कभी इसे आध्यात्मिक उन्नतिका प्रतीक भी माना जाता है ।

गुल

इसका मतलब गुलाबका फूल या कोई भी फूल होता है । प्रेमिकाके लिए भी आता है ।

बुलबुल

यह पक्षी अपने गानके लिए प्रसिद्ध है । कहा जाता है कि इसे गुलाबसे प्रेम है और उसी पर गिरा करता है । इससे प्रेमीकी उपमा दी जाती है । इसे गुलचीं (फूल तोड़नेवाले) और सय्याद (चिड़ीमार) से शिकायत रहती है क्योंकि दोनों इसे अपने प्रियसे अलग कर देते हैं ।

आशियाँ या नशेमन

इसका अर्थ है घोंसला । यह देश और घरका भी प्रतीक है । इसकी दुश्मन बिजली है, जो प्रतीकात्मक रूपमे दैवी विपत्तियोका बोध कराती है ।

रक़ीब

कोषमे इसका अर्थ है पहरेदार । लेकिन कवितामे इसका अर्थ है प्रेम प्रतिद्वद्वी । प्रेम प्रतिद्वद्वीके प्रति घृणा व्यक्त करनेके लिए उसे कभी-कभी 'दुश्मन' 'उदू' या 'गैर' भी कहा जाता है ।

शेख़ और बरहमन

साधारणतः यह धर्म गुरु होते है । लेकिन उर्दू कवितामे यह रस्मी धर्म निबाहने वाले, घमंडी, पाखंडी, ईश्वरके प्रेमसे शून्य अहंकारी उपदेशक और मज़हबके नाम पर लोगोंको लड़ानेवालोंके प्रतीक हैं । सच्चे प्रेमियोंको यह लोग बदनाम किया करते है ।